॥ श्री ॥

देववंदनमाळा.

(विधि सहित.)

श्री ज्ञानविमळसूरि, विजयलक्ष्मिसूरि, रूपविजयजी, दानविजजी, पद्मविजयजी विगेरे पंडितोनां बनावेलां अगीआर जातनां देववंदनो तथा मौनएकादशीनुं दोढसो कल्याणकनुं गणणुं अने दिवाळीकल्पनुं स्तवन विगेरे बाबतो सहित.

छपावी प्रसिद्ध करनार,

शा. मगनलाल हठीसंग

ज्ञानप्रकाशना मालेक—अमदावाद.

आवृत्ति चोथी.—प्रत ६००

श्री लव विद्याविजय प्रीन्टींग प्रेसमां शा. पोपटलाल अमथाशाहे छाप्युं. रीचारोड—अमदाबाद. नं. ११६

वीर संवत् २४४७ सने १९२१

किम्मत रु. १—८—०

॥ अनुक्रमणिका ॥

॥ ॐ नमः ॥

॥ अथ श्री ॥

॥ देववंदनमाला प्रारभ्यते ॥

॥ तत्र प्रथम श्री ज्ञानविमलजी कृत ॥

॥ दिवाळीना देववंदननो विधिः ॥

॥ प्रथम स्थापना स्थापीयें, पछी ईरियावहि पडिक्कमी चैत्यवंदन करी नमुथ्थुणं कही अर्द्धा जयवीयराय कहीये. पछी बीजुं चैत्यवंदन कही नमुथ्थुणं कहीयें. पछी अरिहंत चेईयाणं कही एक नवकारनो काउसग्ग करी एक थोय कही लोगस्स कहेवो. पछी सव्वलोय कही एक नवकारनो काउसग्ग करी बीजी थोय कहेवी. पछी पुख्खरवरदी कही एक नवकारनो काउसग्ग करी त्रीजी थोय कहेवी. पछी सिद्धाणं बुद्धाणं कही एक नवकारनो काउसग्ग करी चोथी थोय कहेवी. एज रीते बीजो जोडो थोयोनो कहीने नमुथ्थुणं कहेवुं. पछी स्तवन कही अर्द्धा जयवीयराय कहेवा. पछी त्रीजुं चैत्यवंदन नमुथ्थुणं कही संपूर्ण जयवीयराय कहीये. ए रीते प्रथम जोडो कहेवो. तेवीज रीते बीजो जोडो पण कहेवो ॥ इति विधिः ॥

॥ अथ चैत्यवंदन त्रयम् ॥

॥ वीर जिनवर वीर जिनवर, चरम चौमास, नयरी अपापाये आवीया ॥ हस्तिपाल राजन सभाये, कार्तिक अमावास्या रयणिये, मुहूर्त शेष निर्वाण ताहीं ॥ शोल पहोर देई देशना, पहोता मुक्ति मझार ॥ नित्य दिवाली नय कहे, मलिया नृपति अढार ॥ १ ॥ देव मलिया देव मलिया, करे उत्सव रंग, मेरईया हाथे ग्रही ॥ द्रव्य तेज उद्योत कीधो, भाव उद्योत जिनेंद्रने, गाम गाम एह उच्छव प्रसिद्धो ॥ लखकोडी गुण फल करी, कल्याण करो एह ॥ कवि नयविमल कहे ईस्युं, धन धन दिहाडो तेह ॥ २ ॥ श्री सिद्धार्थनृप कुल तिलो, त्रिशला जस मात ॥ हरिलंछन तनु सात हाथ, महिमा विख्यात ॥ त्रीश वरस गृहवास छंडी, लीये संयम भार ॥ बार वरस छद्मस्थ मान, लही केवल सार ॥ त्रीश वरस एम सवि मली ए, बहोत्तेर आयु प्रमाण ॥ दिवाली दिन शिव गया, कहे नय तेह गुणखाण ॥३॥

॥ अथ थोयोनुं अष्टक ॥ तत्र प्रथम वीरस्तुति ॥

॥मनोहर मूर्ति महावीर तणी, जिणे शोल पहोर

देशना पभणी ॥ नव मल्लि नव लच्छी नृपति सुणि, कहि शिव पाम्या त्रिभुवन धणी ॥१॥ शिव पहोता ऋषभ चउदश भक्ते, बावीश लह्या शिव मास थीते ॥ छठे शिव पाम्या वीर वली, कात्ति वदी अमावास्या निरमली ॥२॥ आगामि भावि भाव कह्या, दिवाली कल्पें जेह लह्या ॥ पुण्य पाप फल अज्झयणें कह्यां, सवि तहत्ति करीने सद्दह्यां ॥३॥ सवि देव मली उद्योत करे, परभातें गौतम ज्ञान वरें ॥ ज्ञानविमल सदगुण विस्तरे, जिन शासनमां जयकार करे ॥ ४ ॥

॥ इति प्रथम थुई जोडो ॥

॥ अथ द्वितीय वीर स्तुति ॥

॥जय जय भवि हितकर, वीर जिनेश्वर देव ॥ सुरनरना नायक, जेहनी सारे सेव ॥ करूणारस कंदो, वंदो आणंद आणि ॥ त्रिशला सुत सुंदर, गुण मणि केरो खाणि ॥ १॥ जस पंच कल्याणक, दिवस विशेष सुहावे ॥ पण थावर नारक, तेहने पण सुख थावे ॥ ते चवने[1] जन्मे[2] व्रतें[3], नाणें[4] अने निर्वाणे[5] ॥ सवि जिनवर केरां, ए पांचे अहिठाण ॥२॥ जिहां पंच समिति युत,

पंच महाव्रत सार ॥ जेहमां परकाश्या, वळि पांचे व्यवहार ॥ परमेष्ठि अरिहंत, नाथै सर्वज्ञने पारगें ॥ एह पंच पदे लह्यो, आगम अर्थ उदार ॥३॥ मत्तंग सिद्धाइ, देवी जिनपद सेवी ॥ दुःख दुरित उपद्रव, जे टाळे नित मेवी ॥ शासन सुखदायी, आइ सुणो अरदास ॥ श्री ज्ञानविमल गुण, पूरो वंछित आस ॥ ४ ॥

इति द्वितीय थुइ जोडो ॥

॥ अथ महावीर जिन स्तवन ॥

॥ आज सखी संखेसरो ॥ ए देशी ॥ श्री महावीर मनोहरु, प्रणमुं शिर नामी ॥ कंत जशोदा नारीनो, जिन शिवगति गामी ॥१॥ भगिनी जास सुदंसणा, नंदिवर्द्धन भाइ ॥ हरिलंछन हेजालुओ, सहुकोने सुखदायी ॥२॥ सिद्धार्थ नृपति तणो, सुत सुंदर सोहे ॥ नंदन त्रिशला देवीनो, त्रिभुवन मन मोहे ॥ ३ ॥ एक शत दश अध्ययन जे, प्रभु आप प्रकाशे ॥ पुण्य पाप फळ केरमां, सुणे भविक उल्लासें ॥ ४ ॥ उत्तराध्ययन छत्रीस जे, कहे अर्थ उदार ॥ शोळ पहोर दीये देशना, करे भवि उपगार ॥ ५ ॥ सर्वार्थसिद्ध मुहूर्तमां, पाछ-

ली जे रयणी ॥ योग निरोध करे तिहां, शिवनी निसरणी ॥६॥ उत्तराफाल्गुनी चंद्रमा, जोगें शुभ आवे ॥ अजरामर पद पामीया, जय जयारव थावे ॥ ७ ॥ चोशठ सुरवर आवीया, जिन अंग पखाली ॥ कल्याणक विधि साचवी, प्रगटी दिवाली ॥ ८ ॥ लाख कोडी फल पामीयें, जिन ध्यानें रहीये ॥ धीरविमल कविराजनो, ज्ञानविमल कहिये ॥ ५ ॥ इति वीरजिन स्तवनं ॥

॥ इति प्रथम जोडो ॥

॥ अथ द्वितीय जोडो ॥

॥ तत्र प्रथम चैत्यवंदन त्रयम् ॥

नमो गणधर नमो गणधर, लब्धि भंडार ॥ इंद्रभूति महिमा निलो, वड वजीर महावीर केरो ॥ गौतम गोत्रे उपनो, गणि अग्यारमांहे वडेरो ॥ केवलज्ञान लह्युं जिणे, दिवाली परभात ॥ ज्ञानविमल कहे जेहनां, नाम थकी सुखशात ॥ १ ॥ इंद्रभूति पहिलो भणुं, गौतम जस नाम ॥ गोबर गामें उपन्या, विद्याना धाम ॥ पंच सयां परिवारशुं, लेइ संयम भार ॥ वरस पचास गृहे वस्या, व्रतें वर्षज त्रीश ॥ बार वरस केवल

वर्धीए, वाणुं वरस सवि थाय ॥ नय कहे गौतम नामथी, नित्य नित्य नवनिधि थाय ॥ २ ॥ जीवकेरो जीव केरो, अछे मनमांहिं ॥ संशय वेदपदें करी कही, अर्थ अभिमान वार्यो ॥ श्री महावीर सेवा करी, ग्रही संयम आप तार्यो ॥ त्रिपदि पामी गुंथीया, पूरव चउद उदार ॥ नय कहे तेहना नामथी, होये जय जयकार ॥ ३ ॥

॥ इति गौतम चैत्यवंदन त्रयम् ॥

॥ अथ प्रथम थुइ जोडो ॥

॥ इंद्रभूति अनुपम गुण भर्या, जे गौतम गोत्रें अलंकर्या ॥ पंचशत छात्रशुं परिवर्या, वीर चरण लही भवजल तर्या ॥ १ ॥ चउ अठ दश दोय जिनने स्तवे, दक्षिण पश्चिम उत्तर पूरवे ॥ संभव आदि अष्टापद गिरियें वली, जे गौतम वंदे ललीलली ॥२॥ त्रिपदि पामीने जेणे करी, द्वादशांगी सकल गुणें भरी ॥ दीये दिक्षा ते लहे केवलसिरि, ते गौतमने रहुं अनुसरी ॥३॥ जक्ष मातंगने सिद्धायिका, सूरि शासननी परभाविका ॥ श्री ज्ञानविमल दिपालिका, करो नित्य नित्य मंगल मालिका ॥ ४ ॥ इति प्रथम थुइ जोडो ॥

॥ अथ द्वितीय थुइ जोडो ॥

॥ श्री इंद्रभूतिं गणवृद्धि भूतिं, श्री वीर तीर्थाधिप मुख्यशिष्यम् ॥ सुवर्णकांतिं कृतकर्मशांतिं, नमाम्यहं गौतमगौत्ररत्नम् ॥ १ ॥ तीर्थंकरा धर्मधरा धुरीणा, ये भूतभाविप्रतिवर्तमानाः ॥ सत्पंचकल्याणक वासरस्था, दिशंतु ते मंगलमालिकां च ॥२॥ जिनेंद्र वाक्यं प्रथित प्रभावं, कर्माष्ट कानेक प्रभेदसिंहम् ॥ आराधितं शुद्ध मुनींद्र वर्गै, जगत्यमेयं जयतात् नीतांतम् ॥३॥ सम्यग्दृशां विघ्नहारा भवंतु, मातंगयक्षा सुरनायकाश्च ॥ दिपालिका पर्वणि सुप्रसन्ना, श्री ज्ञानसूरि वरदायकाश्च ॥४॥

॥ अथ स्तवन ॥

तुंगीया गिरि शिखर सोहे ॥ ए देशी ॥ वीर मधुरी वाणी भांखे, जलधि जल गंभीर रे ॥ इंद्रभूति चित्त भ्रांति रजकण, हरण प्रदर समीर रे ॥ वीर० ॥१॥ पंचभूत थकी जे प्रगटे, चेतना विज्ञान रे ॥ तेहमां लयलीन थाये, न परभव संज्ञान रे ॥ वीर० ॥ २ ॥ वेदपदनो अर्थ एहवो, करे मिथ्या रूप रे ॥ विज्ञान घन पद वेदकेरां, तेहनुं एह स्वरूप रे ॥ वीर० ॥३॥

चेतना विज्ञानघन छे, ज्ञान दर्शन उपयोग रे ॥ पंच-
भूतिक ज्ञानमय ते, होय वस्तु संयोग रे ॥ वीर० ॥४॥
जिहां जेहवी वस्तु देखियें, होय तेहवुं ज्ञान रे ॥ पूरव
ज्ञान विपर्यायथी, होय उत्तम ज्ञान रे ॥ वीर० ॥ ५॥
एह अर्थ समर्थ जाणी, म भणपद विपरीत रे ॥ इणि
परें भ्रांति निरा करीने, थया शिष्य विनीत रे ॥ वीर० ॥
॥ ६ ॥ दिपालिका प्रभात केवल, लह्युं ते गौतमस्वामि
रे ॥ अनुक्रमें शिवसुख लह्यां तेहने, नय करे परिणाम
रे ॥ वीर मधुरी वाणी भाखे ॥ ७ ॥ इति स्तवनं ॥

॥ अथ द्वितीय स्तवनं ॥

॥ अलबेलानी देशी ॥ दुःखहरणी दिपालिका रे
लाल, परव थयुं जगमांहि ॥ भवि प्राणी रे ॥ विर नि-
र्वाणथी थापना रे लाल, आज लगें उछाहि ॥भवि०॥
॥१॥ समकितदृष्टि सांभलो रे लाल ॥ ए आंकणी ॥
स्याद्वाद घर धोलीयें रे लाल, दर्शननी करी शुद्धि ॥
॥भवि० ॥ चरित्र चंद्रोदय बांधिये रे लाल, टालो रज
दुःकर्म बुद्धि ॥ भ० ॥२॥ सम० ॥ सेवा करो जिनरा-
जनी रे लाल, दिल दोठां मिठास ॥ भवि० ॥ विविध

पदारथ भावना रे लाल, ते पक्काननी राशि ॥ भवि० ॥ ॥३॥ सम० ॥ गुणिजन पदनी नामना रे लाल, तेहिज जुहार भट्टार ॥ भवि० ॥ विवेक रतन मेराईयां रे लाल, उचित ते दीप संभार ॥ भवि० ॥ ४॥ सम० ॥ सुमति सुविनता हेजशुं रे लाल, मनघरमां करो वास ॥ भवि० ॥ विरति साहेली साथशुं रे लाल, अविरति अलछी निकास ॥ भवि० ॥५॥ सम० ॥ मैत्रादिकनी चिंतना रे लाल, तेह भला अणगार ॥ भवि०॥ दर्शन गुण बाधा बन्या रे लाल, परिमल परउपगार ॥ भवि० ॥ ६ ॥ सम० ॥ पूर्व सिद्धकन्या परवे रे लाल, जानईया अणगार ॥भवि०॥ सिद्धशिला वर वेदिका रे लाल, कन्या निवृत्ति सार ॥ भवि० ॥७॥ सम० ॥ अनंत चतुष्टय दायजो रे लाल, शुद्ध योग निरोध ॥ भवि० ॥ पाणिग्रहण प्रभुजी करे रे लाल, सहुने हरष विबोध ॥ ॥भवि० ॥८॥ ॥सम०॥ ईणिपरें पर्व दिपालिकारे लाल, करतां कोडि कल्याण ॥ भवि० ॥ ज्ञानविमळ प्रभु भक्तिशुंरे लाल, प्रगटे सकल गुण खाणि ॥ भवि० ॥ ए ॥ सम० ॥
ईति श्री दिवाळीना देव वांदवानो विधि संपूर्ण ॥

॥ अथ श्री विजयलक्ष्मीसूरीकृत ॥

॥ ज्ञानपंचमी देववंदन प्रारंभः ॥

॥ तत्र प्रथम विधि ॥

॥ प्रथम बाजोठ अथवा ठवणी उपर पांच पुस्तक मूकीने वासक्षेपथी ज्ञाननी पूजा करीयें, वळी पांच दीवेटनो दीवो करीयें, ते पुस्तकने जमणी पासे स्थापीयें अने धूपधाणुं डाबे पासे मूकीयें. पुस्तक आगल पांच अथवा एकावन साथीया करी उपर श्रीफल तथा सोपारी मूकीयें. यथाशक्तें ज्ञाननी द्रव्यपूजा करीयें. पछी देव वांदीयें अने सामायिक तथा पोसह मध्ये वासपूजाए पुस्तक पूजीने देव वांदीए, अथवा देहरा मध्ये बाजोठ त्रण उपराउपर मांडी ते उपर श्री जिनमूर्ति स्थापीयें, तथा महा उत्सवथी पोताने ठामें स्नात्र भणावीये. प्रभु आगल जमणी तरफ पुस्तक मांड्युं होय तेहनी पण वास प्रमुखें पूजा करीयें, तथा उजमणुं मांड्युं होय तिहां पण यथाशक्तें करी जिन बिंब आगळ लघु स्नात्र भणावीने अथवा सत्तरभेदी पूजा भणावीने पछी श्रीसौभाग्यपंचमीना देव वांदीयें॥

हवे देव वांदवानो विधि कहे छे.

॥ प्रथम प्रगट नवकार कही इरियावहि पडिक्कमी चार नवकारनो अथवा एक लोगस्सनो काउसग्ग करी, प्रगट लोगस्स कही खमासमण देई इच्छाकारेण संदिसह भगवन् चैत्यवंदन करुं. एम कही पछी योगमुद्राए बेशी चैत्यवंदन करीयें. ते कहे छे.

॥ अथ चैत्यवंदन ॥

॥ श्री सौभाग्यपंचमी तणो, सयल दिवस सिणगार ॥ पांचे ज्ञानने पूजीयें, थाये सफल अवतार ॥ १ ॥ सामायिक पोसह विषे, निरवद्य पूजा विचार ॥ सुगंध चूर्णादिक थकी, ज्ञान ध्यान मनोहार ॥ पूर्व दिशे उत्तर दिशे, पीठ रची त्रण सार ॥ पंचवरण जिन बिंबने, स्थापीजें सुखकार ॥ ३ ॥ पंच पंच वस्तु मेलवी, पूजा सामग्री जोग ॥ पंचवरण कलशा भरी, हरीयें दुःख उपभोग ॥ ४ ॥ यथाशक्ति पूजा करो, मतिज्ञानने काजें ॥ पंच ज्ञानमां धुरें कह्युं, श्री जिनशासन राजें ॥ ॥ ५ ॥ मतिश्रुत विण होवे नही, अवधि प्रमुख महा ज्ञान ॥ ते माटे मति धुरें कह्युं, मतिश्रुतमां मति मान

॥६॥ क्षय उपशम आवरणनो, लब्धि होये समकाळे ॥ स्वाम्यादिकथी अभेद छे, पण मुख्य उपयोग काळें ॥७॥ लक्षण भेदें भेद छे, कारण कारज योगें ॥ मति साधन श्रुत साध्य छे, कंचन कलश संयोगे ॥८॥ परमातम परमेसरु ए, सिद्ध सयल भगवान् ॥ मतिज्ञान पामी करी, केवल लक्ष्मी निधान॥ ए ॥ इति चैत्यवंदन॥ पछी नमुथ्थु० ॥ जावंति० ॥ नमोऽर्हत्० ॥ कहेवां ॥

॥ अथ स्तवन लिख्यते ॥

॥ रशीयानी देशी ॥ प्रणमो पंचमी दिवसें ज्ञानने, गाजी जगमां रे जेह ॥ सुज्ञानी ॥ शुभ उपयोगे क्षणमां निर्जरे, मिथ्या संचित खेह ॥ सु० ॥ १ ॥ प्रण० ॥ संतपदादिक नव द्वारे करी, मति अनुयोग प्रकाश ॥ सु०॥ नय व्यवहारें आवरण क्षय करी, अज्ञानी ज्ञान उल्लास ॥ सु० ॥ २ ॥ प्रण० ॥ ज्ञानी ज्ञान लहे निश्चय कहे, दो नय प्रभुजीने सत्य ॥ सु० ॥ अंतरमुहूर्त रहे उपयोगथी, ए सर्व प्राणीने नित्य ॥ सु० ॥ ३ ॥ प्रण० ॥ लब्धि अंतरमुहुर्त्त लघुपणें, छाशठ सागर जीठ ॥ सु०॥ अधिको नरभव बहुविध जिवने, अंतर कहियें न

दीठ ॥ सु० ॥ ४ ॥ प्रण० ॥ संप्रति समयें एक बे पामता, होय अथवा नवि होय ॥ सु० ॥ क्षेत्र पल्योपम भाग असंख्यमां, प्रदेश माने बहु जोय ॥ सु० ॥ ५ ॥ ॥ प्रण० ॥ मतिज्ञान पाम्या जीव असंख्य छे, कह्या पडिवाइ अंनत ॥ सु० ॥ सर्व आशातन वरजो ज्ञाननी, विजयलक्ष्मी लहो संत ॥ सु० ॥ ६ ॥ प्रणमो० ॥

॥ इति श्री मतिज्ञान स्तवनम् ॥

॥ पछी जयवियराय कही, खमासमण देइ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् श्री मतिज्ञान आराधवा निमित्तं करेमि काउसग्गं वंदणवत्तिआए अने अन्नत्थ ऊससीएणं कही एक लोगस्स अथवा चार नवकारनो काउसग्ग करी काउसग्ग पारी नमोऽर्हत् सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्व साधुभ्यः कही पछी थुइ कहेवी. ते लखीयें छिये ॥

॥ अथ थुई ॥

॥ श्री मतिज्ञाननी तरत्र भेदथी, पर्यायें करी व्याख्याजी ॥ चउविह उग्गादिकने जाणे, आदेशे करी दाख्याजी ॥ माने वस्तु धर्म आंशा, नहि अज्ञान वि-

वङाजी ॥ ते मतिज्ञानने वंदो पूजो, विजयलक्ष्मीगुण कांङाजी ॥ १ ॥ इति स्तुति ॥

॥ पछी खमासमण देइ एक गुणनो दुहो कही पछी बीजुं खमासमण देइ बीजो गुण वरणववो ॥ ए रीतें मतिज्ञान संबंधी अठावीस खमासमण देवां. ते पिठिकाना दोहा लखीये ठियें ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्री श्रुतदेवी जगवती, जे ब्राह्मी लिपिरूप ॥ प्रणमे जेहने गोयमा, हुं वंडुं सुखरूप ॥१॥ ज्ञेय अनंते ज्ञानना, जेद अनेक विलास ॥ तेहमां एकावन कहूं, आतम धर्म प्रकाश ॥२॥ खमासमण एक एकथी, स्तवियें ज्ञानगुण एक ॥ एम एकावन दीजियें, खमासमण सुविवेक ॥ ३ ॥ श्री सौजाग्यपंचमी दिने, आराधो मतिज्ञान ॥ जेद अगावीश एहना, स्तवियें करी बहु मान ॥४॥ इंडिय वस्तु पुग्गला, मलवे अवत्तव नाण ॥ लोचन मन विणुं अकतें, व्यंजनावग्रह जाण ॥५॥ जाग असंख्य आवली लघु, सास पहुत ठिइ जिठ ॥ प्राप्यकारी चउ इंडिया, अप्राप्यकारी डुग दिठ ॥६॥ इति॥

॥ अथ खमासमणना दोहा ॥

॥ समकित श्रद्धावंतने, उपन्यो ज्ञान प्रकाश ॥ प्रणमुं पदकज तेहना, भाव धरीने उल्लास ॥ १ ॥

(ए दूहो गुण गुण दीठ कहेवो.)

॥ दोहा ॥

॥ नहीं वर्णादिक योजना, अर्थावग्रह होय ॥ नोइंद्रिय पंच इंद्रियें, वस्तु ग्रहण कांइ जोय ॥२॥ सम०॥ अन्वय व्यतिरेकें करी, अंतरमुहूर्त प्रमाण ॥ पंचेंद्रिय मनथी होये, इहां विचारणा ज्ञान ॥३॥ सम० ॥ वर्णादिक निश्चय वसे, सुर नर एहिज वस्त ॥ पंचेंद्रिय मनथी होये, भेद अपाय प्रशस्त ॥ ४ ॥ सम० ॥ निरणीत वस्तु स्थिर ग्रहे, कालांतर पण साच ॥ पंचेंद्रिय मनथी होये, धारणा अर्थ उवाच ॥५॥ सम० ॥ निश्चय वस्तु ग्रहे छते, संतत ध्यान प्रकाम ॥ अपायथी अधिके गुणें, अविच्युति धारणा ठाम ॥ ६ ॥ सम०॥ अविच्युति स्मृतितणुं, कारज कारण जेह ॥ संख्य असंख्य कालज सुधी, वासना धारणा तेह ॥७॥ सम०॥ पूर्वोत्तर दर्शन द्वय, वस्तु अप्राप्त एकत्व ॥ असंख्य कालें

ए तेह ने, जातिस्मरणे तत्त्व ॥ ८ ॥ सम० ॥ वाजित्र नाद ग्रही ग्रहे, ए तो डुंडुभि नाद ॥ अवग्रहादिक जाणे बहु, भेद ए मति आल्हाद ॥ ए॥ सम० ॥ देश सामान्ये वस्तु ने, ग्रहे तदपि सामान्य ॥ शब्द ए नव नव जातिनो, ए अबहु मति मान ॥ १० ॥ सम० ॥ एकज तुरियना नादमां, मधुर तरूणादिक जाति ॥ जाणे बहुविध धर्मशुं, क्षय उपशमनी भाति ॥ ११ ॥ सम० ॥ मधुरतादिक धर्ममां, ग्रहवो अल्प सुविचार ॥ अबहु विध मति भेदनो, कीधो अर्थ विस्तार ॥ १२ ॥ सम० ॥ शीघ्रमेव जाणे सही, नवि होय बहु विलंब ॥ क्षिप्र भेद ए ज्ञाननो, जाणो मति अविलंब ॥ १३ ॥ सम० ॥ बहु विचार करी जाणीयें, ए अक्षिप्रह भेद ॥ क्षयोपशम विचित्रता, कहे महाज्ञानी संवेद ॥ १४ ॥ सम० ॥ अनुमाने करी को ग्रहे, ध्वजथी जिनवर चैत्य ॥ पूर्व प्रबंध संभालिने, निश्रित भेद संकेत ॥ १५ ॥ स० ॥ बाहिर चिन्ह ग्रहे नहीं, जाणे वस्तु विवेक ॥ अनिश्रित ए धारीये, आभिनिबोधक टेक ॥ १६ ॥ स० ॥ निःसंदेह निश्चयपणे, जाणे वस्तु अधिकार ॥ निश्चित अर्थ

ए चिंतवो, मतिज्ञान प्रकार ॥१७॥ सम० ॥ एम होये वा अन्यथा, एम संदेहे जुत्त ॥ धरे अनिश्चित भावथी वस्तु ग्रहण उपयुत्त ॥ १८ ॥ सम० ॥ बहु प्रमुख भेदें ग्रह्युं, जिम एकदा तिम नित्य ॥ बुद्धि थाये जेहने, ए ध्रुव भेदनुं चित्त ॥ १९ ॥ सम०॥ बहु प्रमुख रूपें कदा, कदा अवग्रहादिक रूप ॥ ए रीतें जाणे तदा, भेद अध्रुव स्वरूप ॥२०॥ सम० ॥ अवग्रहादिक चउभेदमां, जाणवा योग्य ते ज्ञेय ॥ ते चउभेदे भांखीयो, द्रव्यादिकथी गणेय ॥२१॥ सम० ॥ जाणे आदेशें करी, केटला पर्याय विसिठ॥ धर्मादिक सवि द्रव्यने, सामान्य विशेष गरिठ ॥२२॥स०॥ सामान्या देशें करी, लोकालोक स्वरूप॥ क्षेत्रथी जाणे सर्वने, तत्त्व प्रतीत अनुरूप ॥२३॥स०॥ अतीत अनागत वर्त्तना, अद्धा समय विशेष ॥ आदेशें जाणे सहु, वितथ नहीं लवलेश॥२४॥ ॥स०॥भावथी सविहुं भावनो, जाणे भाग अनंत ॥ उदयिकादिक भाव जे, पंच सामान्ये लहंत ॥२५॥स०॥ अश्रुत निश्रित जाणिये, मतिना चार प्रकार ॥ शीघ्र समय रोहा परे, अकल उत्पातकी सार ॥२६॥सम०॥

विनय करंतां गुरुतणो, पामे मति विस्तार॥ते विनयिकी मति कही, सघला गुण शिरदार ॥ २७॥ सम० ॥करतां कार्य अभ्यासथी, उपजे मति सुविचार ॥ ते बुद्धि कही कर्मकी, नंदीसूत्र मझार ॥२८॥ सम० ॥ जे वयना परिपाकथी, लहे बुद्धि भरपूर ॥ कमलवने महा हंसने, परिणामिकी ए सनूर ॥ २९॥ स० ॥ अडवीश बत्रीश डग चउ, त्रणशें चालीश जेह । दर्शनथी मति भेद ते, विजयलक्ष्मी गुणगेह ॥३०॥ सम० ॥ ए मतिज्ञानना अष्टाविंशति भेद कह्या ॥ इति ॥

॥ अथ द्वितीय श्रुतज्ञान चैत्यवंदन ॥

श्री श्रुतज्ञानने नित्य नमुं, स्व पर प्रकाशक जेह ॥ जाणे देखे ज्ञानने, श्रुतथी टाले संदेह ॥ अभिलाप्य अनंत भाव, वचन अगोचर दाख्या ॥ तेहनो भाग अनंतमो, वचनपर्याये आख्या॥वली कथनीय पदार्थनो ए, भाग अनंतमो जेह ॥ चउद पूरवमां रच्यो, गणधर गुण ससनेह ॥ १ ॥ मांहोमांहे पूरवधरा, अक्षर लाभे सरिखा ॥ छट्ठाणवडीया भावथी, ते श्रुत मतिय विशेखा ॥ तेहिज माटे अनंतमे, भाग निबद्धा वाचा॥सम-

कित श्रुतना जाणीयें, सर्व पदारथ साचा ॥ द्रव्यगुण पर्याये करी, जाणे एक प्रदेश ॥ जाणे ते सवि वस्तुने, नंदीसूत्र उपदेश ॥ २ ॥ चौवीश जिनना जाणीये, चउद पूरवधर साध ॥ नवशत तेत्रीश सहस छे, अठाणुं निरुपाध ॥ परमत एकांतवादीनां, शास्त्र सकल समुदाय ॥ ते समकितवंते ग्रह्यां, अर्थ यथार्थ थाय ॥ अरिहंत श्रुत केवली कहे ए, ज्ञानाचार चरित्त ॥ श्रुतपंचमी आराधवा, विजयलक्ष्मिसूरि चित्त ॥३॥ इति चैत्यवंदन ॥ पछी नमुथ्थु०॥जावंति० नमोऽर्हत्० कही स्तवन कहेवुं॥

॥ अथ स्तवन लिख्यते ॥

॥ हरीया मन लागो ॥ ए देशी ॥ श्री श्रुत चउद भेदे करी, वरणवे श्री जिनराजरे ॥ उपधानादि आचारथी, सेवीये श्रुत महाराजरे ॥ १॥ श्रुतशुं दिल मान्यो ॥ दिल मान्योरे, मन मान्यो, प्रभु आगम सुखकाररे ॥ श्रुत० ॥१॥ ॥ ए आंकणी ॥ एकादि अक्षर संयोगथी, असंयोगी अनंतरे ॥ स्व पर पर्याये एक अक्षरो, गुणपर्याय अनंतरे ॥ ॥२॥ श्रुत० ॥ अक्षरनो अनंतमो, भाग उघाडो छे नित्यरे ॥ ते तो आवराए नहीं, जीव सूक्ष्मनुं ए चित्तरे ॥ ३ ॥

॥श्रुत०॥ ईहे सांजलवा फरी पूछे, निश्चुणि अहे विचारंतरे॥ निश्चय धारणा तिम करे, द्विगुण आठ ए यणंत रे॥४॥ श्रुत०॥ वादी चौवीश जिनतणा, एक लाख छत्रीश हजाररे॥ बेशें सयल सजामांहे, प्रवचन महिमा अपाररे॥५॥ श्रुत०॥ जणे जणावे सिद्धांतने, लखे लखावे जेहरे॥ तस अवतार वखाणीये, विजयलक्ष्मि गुण गेहरे॥ श्रुतशुं दिल मान्यो॥ इति स्तवनं॥

पछी जयवीयराय कही खमासमण देइ इच्छाकारेण संदिसह जगवन् श्री श्रुतज्ञान आराधवा निमित्तं करेमि काउस्सग्गं०॥ वंद०॥ अन्न०॥ लोगस्स०॥ एक नवकारनो काउस्सग्ग पारीने थोय कहेवी. ते कहे छे.

॥ गोयम बोले ग्रंथ संजाळी॥ ए देशी॥ त्रिगडे बेशी श्री जिनजाण, बोले जाषा अमीयसमाण, मत अनेकांत प्रमाण॥ अरिहंत शासन सफरी सुखाण, चउ अनुयोग जिहां गुणखाण, आतम अनुजव ठाण॥ सकल पदारथ त्रिपदी जाण, जोजन जूमि पसरे वखाण, दोष बत्रिश परिहाण॥ केवली जाखित ते श्रुत नाण, विजयलक्ष्मिसूरि कहे बहुमान, चित्त धरजो ते

सयाण ॥१॥ इति स्तुति ॥ पछी खमासमण देइ श्रुत ज्ञानना चउद गुण वर्णववाने अर्थे दोहा कहेवा.

॥ दोहा ॥

॥ वंदो श्री श्रुतज्ञानने, भेद चतुर्दश वीश ॥ तेह-मां चउदश वरणवुं, श्रुत केवली श्रुत इश ॥१॥ भेद अढार अकारना, एम सवि अक्षरमान ॥ लब्धि संज्ञा व्यंजनविधि, अक्षर श्रुत अवधान ॥ २ ॥

॥ अथ पीठिका ॥

पवयण श्रुत सिद्धांत ते, आगम समय वखाणी॥ पूजो बहु विध रागथी, चरण कमल चित्त आणी ॥१॥ (ए दोहो गुणगुण दीठ कहेवो) ॥ कर पल्लव चेष्टादिकें, लखे अंतर्गत वाच ॥ एह अनक्षर श्रुततणो, अर्थ प्र-काशक साच ॥२॥ पव० ॥ संज्ञा जे दीहकालकी, ते-णे सन्निया जाण॥ मनइंद्रियथी उपन्युं,संज्ञी श्रुत अ-हिठाण ॥३॥ पव० ॥ मन रहित इंद्रियथकी, निपन्युं जेहने ज्ञान ॥ क्षय उपशम आवरणथी, श्रुत असंज्ञी वखाण ॥ ४ ॥पव०॥ जे दर्शन दर्शन विना, दर्शन ते प्रति पक्ष ॥ दर्शन दर्शन होय जिहां, ते दर्शन प्रत्यक्ष

॥५॥पव०॥भंग जाल नर बाल मति; रचे विविध आयास॥ तिहां दर्शन दर्शनतणो, नहीं निदर्शन भास ॥६॥पव०॥ ललित त्रिभंगी भंगभर, नैगमादि नय भूर॥शुद्ध शुद्धतर वचनथी, समकित श्रुत भरपूर ॥ ७ ॥पव०॥ सद्असद् वेहेंचण विना, ग्रहे एकांते पक्ष॥ज्ञान फल पामे नहीं, ए मिथ्या श्रुत लक्ष ॥८॥पव०॥भरतादिक दश क्षेत्रमां, आदि सहित श्रुत धार॥ निज निज गणधर वीरचियो, पामी प्रभु आधार ॥९॥पव०॥ दुप्पसह सूरीश्वर सुधी, वर्तशे श्रुतआचार॥एक जीवने आसरी, सादिसांत सुविचार॥१०॥पव०॥ श्रुत अनादि द्रव्यनयथकी, शाश्वत भाव छे एह ॥ महाविदेहमां ते सदा, आगम रयण अछेह ॥ ११ ॥पव०॥ अनेक जीवने आसरी, श्रुत छे अनादि अनंत ॥ द्रव्यादिक चउ भेदना सादि अनादि विरतंत ॥ १२ ॥पव०॥ सरिखा पाठ छे सूत्रमां, ते श्रुत गमिक सिद्धांत ॥ प्राये दृष्टिवादमां, शोभित गुण अनेकांत ॥१३॥ पव० ॥ सरिखा आलावा नहीं, ते कालिक श्रुतवंत ॥ आगमिक श्रुत ए पूजीये, त्रिकरण योग हसंत ॥ १४ ॥ पव० ॥ अढारहजार पदे करी,

आचारांग वखाण ॥ ते आगल उगुणा पदे, अंग प्रविष्ट सुअ नाण ॥ १५ ॥ पव० ॥ बार उपांगह जेह छे, अंग बाहिर श्रुत तेह ॥ अनंग पविष्ट वखाणीये, श्रुत लक्ष्मि-सूरि गेह ॥ १६ ॥ पव० ॥ इति श्रुतज्ञानं ॥

॥ अथ तृतीय अवधिज्ञान चैत्यवंदन ॥

॥ अवधिज्ञान त्रीजुं कह्युं, प्रगटे आतम प्रत्यक्ष ॥ क्षय उपशम आवरणनो, नवि इंद्रिय आपेक्ष ॥ देव नि-रय भव पामतां, होय तेहने अवश्य ॥ श्रद्धावंत समय लहे, मिथ्यात विभंग वश्य ॥ नर तिरिय गुणथी लहे, शुभ परिणाम संयोग ॥ काउसग्गमां मुनि हास्यथी, विघट्यो ते उपयोग ॥ १ ॥ जघन्यथी जाणे जूये, रुपी द्रव्य अनंता ॥ उत्कृष्टा सवि पुद्गला, मूर्ति वस्तु मुणं-ता ॥ क्षेत्रथी लघु अंगुल तणो, भाग असंखित देखे ॥ तेहमां पुद्गल खंधजे, तेहने जाणे पेखे ॥ लोक प्रमाणे अलोकमांए, खंड असंख्य उक्किठ ॥ भाग असंख्य आ-वलि तणो, अद्धा लघुपणे दीठ ॥ २ ॥ उत्सर्पिणी अव-सर्पिणीए, अतीत अनागत अद्धा ॥ अतिशय संख्या तिगपणे, सांभलो भाव प्रबंधा ॥ एक एक द्रव्यमां चार

भाव, जघन्यथी ते निरखे ॥ असंख्याता द्रव्य दीठ, पर्यव गुरुथी परखे ॥ चार भेद संक्षेपथी ए, नंदीसूत्र प्रकाशे ॥ विजयलक्ष्मिसूरि ते लहे, ज्ञान भक्ति सुविलासे ॥ ३ ॥ इति चैत्यवंदनं समाप्तं ॥ पछी नमुथ्थुणं० ॥ जावंति०॥ नमोऽर्हत्० ॥ कही स्तवन कहेवुं. ते कहे छे.

॥ अथ स्तवन ॥

॥ कुंअर गंभारो नजरे देखतां जी ॥ ए देशी ॥ पूजो पूजो अवधिज्ञानने प्राणिया रे, समकितवंतने ए गुण होय रे ॥ सवि जिनवर ए ज्ञाने अवतरी रे, मानव महोदय जोय रे ॥ पूजो० ॥१॥ शिवराजऋषि विपर्यय देखतो रे, द्विप सागर सात सात रे ॥ वीर पसायें दोष विभंग गयो रे, प्रगटयो अवधिगुण विख्यात रे ॥पूजो०॥ ॥२॥ गुरु स्थिति साधिक छासठ सागरु रे, कोइने एक समय लघु जाण रे ॥ भेद असंख्य छे तरतम योगथी रे, विशेषावश्यकमां एह वखाण रे ॥पू०॥३॥चारशें एकलाख तेत्रीश सहस छे रे, ओहीनाणी मुणींद रे ॥ ऋषभादिक चउवीश जिणंदनां रे, नमे प्रभु पद अरविंद रे॥पूजो०॥ ॥ ४ ॥ अवधिज्ञानी आणंदने दीए रे, मिछामिदुक्कडं

गोयम स्वामी रे ॥ वरजो आशातन ज्ञान ज्ञानीतणी रे, विजयलक्ष्मी सुख धाम रे ॥ पूजो० ॥५॥ इति अवधिज्ञान स्तवनं ॥३॥ पछी जयवीयराय कही खमासमणदेइ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् त्रीजुं अवधिज्ञान आराधवा निमित्तं करेमि काउसग्गं० ॥ वंदण०॥ अन्नछ० ॥ लोगस्स० ॥ कही एक नवकारनो काउस्सग पारी थोय कहेवी. ॥ अथ थुइ ॥

॥ शंखेश्वर साहिब जे समरे.—ए देशी ॥

॥ उही नाणसहित सवि जिनवरु, चवि जननी कुखे अवतरु ॥ जस नामे लहिये सुखतरु, सवि इति उपद्रव संहरु ॥ हरी पाठक संशय संहरु, वीर महीमा ज्ञान गुणायरु ॥ ते माटे प्रभुजी विश्वंभरु, विजयांकित लक्ष्मि सुहंकरु ॥ १ ॥ इति स्तुति ॥ पछी खमासमण देई उभा थइ गुण वर्णववाने अर्थे पीठिकाना दोहा कहेवा. ते कहे छे. ॥ दोहा ॥

असंख्य भेद अवधि तणा, षट् तेहमां सामान्य ॥ क्षेत्र पनक लघुथी गुरु, लोक असंख्य प्रमाण ॥ १ ॥ लोचन परे साथे रहे, ते अनुगामिक धाम ॥ गशाह

सागर अधिक छे, एक जीव आश्री गम॥१॥ उपन्यो अवधिज्ञाननो, गुण जेहने अविकार ॥ वंदना तेहने माहरी, श्वासमांहे सो वार॥१॥ (ए दोहा सर्वत्र खमासमणें कहेवा) ॥ जे क्षेत्रे उही उपन्युं, तिहां रह्यो वस्तु देखंत॥ थिर दीपकनी उपमा, अननुगामी लहंत ॥ उप० ॥२॥ अंगुल असंख्येय जागथी, वधतुं लोक असंख्य ॥ लोकावधि परमावधि, वर्द्धमान गुण कंख्य ॥ उप० ॥ ३ ॥ योग्य सामग्री अन्नावथी, हीयमान परिणाम ॥ अध अद्धपूरव योगथी, एहवो मननो काम ॥ उप० ॥ ४ ॥ संख्य असंख्य जोजन सुधी, उत्कृष्टो लोकांत ॥ देखी प्रतिपाति होये, पुद्गल ज्व्य एकांत ॥ उप० ॥ ५ ॥ एक प्रदेश अलोकनो, पेखे जे अवधि नाण ॥ अपमिवाइ अनुक्रमे, आपे केवलनाण ॥ ॥ उप० ॥ ६ ॥ इति अवधिज्ञान संपूर्ण ॥

(पढी खमासमण देइ चैत्यवंदन करवुं.)

॥ अथ चतुर्थ मनःपर्यवज्ञान चैत्यवंदन ॥

॥ श्री मनःपर्यवज्ञान बे, गुणप्रत्ययी ए जाणो ॥ अप्रमादि ऋद्धिवंतने, होय संयम गुणठाणो ॥ कोइक

चारित्रवंतने, चढते शुभ परिणामे ॥ मनना भाव जाणे सही, सागारि उपयोग ठामे ॥ चिंतविता मनोद्रव्यना ए, जाणे खंध अनंता ॥ आकाशे मनोवर्गणा, रह्या ते नवि मुणंता ॥१॥ संज्ञी पंचेंद्रिय प्राणीये, तनुयोगे करी ग्रहीया ॥ मनयोगे करी मनपणें, परिणमे ते द्रव्य मुणीया ॥ तिर्छु माणस क्षेत्रमां, अढी द्वीप विलोके ॥ तिर्छा लोकना मध्यथी,सहस जोयण अधोलोके॥ उरध जाणे ज्योतिषी लगे ए,पलियनो भाग असंख्य॥ कालथी भाव थया थशे, अतीत अनागत संख्य ॥२॥ भावथी चिंतित द्रव्यना, असंख्य पर्याय जाणे ॥ ऋजुमतीथी विपुलमति, अधिका भाव वखाणे ॥ मनना पुद्गल देखीने, अनुमान ग्रहे साचुं ॥ वितथपणुं पामे नहीं, ते ज्ञाने चित्त राचुं ॥ अमूर्ति भाव प्रगटपणे ए, जाणे श्री भगवंत ॥ चरणकमल नमुं तेहनां, विजयलक्ष्मी गुणवंत ॥३॥ इति चैत्यवंदन ॥ पछी नमुत्थुणं० ॥ जावंति० ॥ नमोऽर्हत् कही स्तवन कहेवुं ॥

॥ अथ स्तवन लिख्यते ॥

जीरेजी ॥ ए देशी ॥ जीरे माहारे श्रीजिनवर भग-

वान, अरिहंत निज निज ज्ञानथी॥ जीरेजी ॥जी०॥ संयम समय जाणंत, तव लोकांतिक मानथी ॥ जीरेजी ॥१॥ जी०॥ तीर्थ वर्तावो नाथ, इम कही प्रणमे ते सुरा॥ जीरेजी ॥ जी० ॥ षट् अतिशयवंत दान, ले इने हरखे सुरनरा ॥ जीरेजी ॥ २ ॥ जी० ॥ इणविध सवि अरिहंत, सर्व विरति जब उच्चरे ॥जीरेजी॥जी०॥ मनःपर्यव तव नाण, निर्मल आतम अनुसरे ॥ जीरेजी ॥ ३ ॥ जी० ॥ जेहने विपुलमति तेह, अप्रतिपातीपणे उपजे ॥जीरेजी॥ जी०॥ अप्रमादि ऋद्धिवंत॥ गुणठाणे गुण नीपजे ॥ जीरेजी ॥ ४ ॥ जी० ॥ एक लक्ष पीस्तालीश हजार, पांचशें एकाणुं जाणीयें ॥ जीरेजी ॥ जी० ॥ मन नाणी मुनिराज, चोवीश जिनना वखाणीये ॥ जीरेजी ॥ ५ ॥ जी० ॥ हुं वंदूं धरी नेह, सवि संशय हरे मनतणा ॥ जीरेजी ॥ जी० ॥ विजयलक्ष्मि शुभ भाव, अनुभव ज्ञानना गुण घणा ॥ ॥जीरेजी॥६॥ इति मनःपर्यवज्ञान स्तवन ॥ पछी जयवीयराय कही खमासमण देइ इच्छाकारेण सं०॥ चोथुं मनःपर्यवज्ञान आराधवा निमित्तं करेमि काउसग्गं०

॥ वंदणव० ॥अन्नछ०॥लोगस्स० कही एक नवकारनो काउसग्ग करी थोय कहेवी. ते लखीये छैये ॥

॥ अथ थोय लिख्यते ॥

॥ श्री शंखेश्वर पास जिनेश्वर ॥ ए देशी ॥ प्रभु-जी सर्व सामायिक उच्चरे, सिद्ध नमी मद वारीजी ॥ छद्मस्थ अवस्था रहे छे जिहांलगे, योगासन तप धारी-जी ॥ चोथुं मनःपर्यव तव पामे, मनुज लोक विस्तारी जी ॥ ते प्रभुने प्रणमो भवि प्राणी, विजयलक्ष्मी सुख-कारी जी ॥ इति स्तुति ॥ पछी खमासमण देइ उभा रही गुण स्तववा अर्थे पीठिकाना दोहा कहेवा.

॥ अथ दोहा ॥

॥ मनःपर्यव ङग भेदथी, संयम गुण लही शुद्ध॥ भाव मनोगत संज्ञीना, जाणे प्रगट विशुद्ध ॥ १ ॥ घट ए पुरुष धारीयो, इम सामान्य ग्रहंत ॥ प्राये विशेष विमुख लहे, ऋजुमति मनह मुणंत ॥२॥ ए गुण जेह-ने उपन्यो, सर्व विरति गुणठाण ॥ प्रणमुं हितथी तेह-ना, चरण कमल चित्त आण ॥३॥ नगर जाति कंचन तणो, धार्यो घट एह रूप ॥ इम विशेष मन जाणतो,

विपुलमति अनुरूप ॥४॥ ए गुण जेहने०॥ ए आंकणी ॥ इति मनःपर्यवज्ञान संपूर्ण ॥

॥ हवे खमासमण देइने पंचम केवलज्ञाननुं चैत्यवंदन करवुं, ते कहे छे.

॥ अथ चैत्यवंदन ॥

॥ श्री जिन चउनाणी थइ, शुक्लध्यान अभ्यासे॥ अतिशय अतिशय आत्मरूप, क्षण क्षण प्रकाशे ॥ निद्रा स्वप्न जागरदशा, ते सवि दूरे होवे ॥ चोथी उजागर दशा, तेहनो अनुभव जोवे ॥ क्षपकश्रेणी आरोहिया ए, अपूर्व शक्ति संयोगे ॥ लही गुणठाणुं बारमुं, तुरीय कषाय वियोगे ॥१॥ नाण दंसण आवरण मोह अंतराय घनघाती ॥ कर्म दुष्ट उच्छेदीने, थया परमातम जाती ॥ दोय धरम सवि वस्तुना, समयांतर उपयोग ॥ प्रथम विशेषपणे ग्रहे, बीजे सामान्य संयोग ॥ सादि अनंत भांगे करी ए, दर्शन ज्ञान अनंत॥ गुणठाणुं लही तेरमुं, भाव जिणंद जयवंत ॥२॥ मूल पयडिमां एक बंध, सत्ता उदये चार ॥ उत्तर पयडीनो एक बंध, तिम उदये रहे बायाल ॥ सत्ता पंचासीतणी,

कर्म जेहवां रज्जु गार ॥ मन वच काया योग जास, अविचल अविकार ॥ संयोगी केवलतणी ए, पामी दशाये विचरे ॥ अक्षय केवलज्ञानना, विजयलक्ष्मि गुण उच्चरे ॥ ३ ॥ इति श्री केवलज्ञान चैत्यवंदनं ॥

॥ पछी नमुथ्थुं० ॥ जावंति० ॥ नमोऽर्हत्० ॥ कही स्तवन कहेवुं. ते लखीये छैये.

॥ अथ स्तवन लिख्यते ॥

॥ कपूर होये अति उजलोरे.–ए देशी ॥ श्री जिनवरने प्रगट थयुं रे, क्षायिकभावे ज्ञान ॥ दोष अढार अभावथी रे, गुण उपन्या ते प्रमाण रे ॥ भविया वंदो केवलज्ञान ॥ १ ॥ पंचमी दिन गुणखाण रे ॥ भविया वंदो० ॥ ए आंकणी ॥ अनामीना नामनो रे, किस्यो विशेष कहेवाय ॥ एतो मध्य भावे करी रे, वचन उल्लेख ठराय रे ॥ भवि० ॥ २ ॥ वंदो० ॥ ध्यान टाणे प्रभु तुं होये रे, अलख अगोचर रूप ॥ परा पश्यंति पामीने रे, कांइ प्रमाणे मुनि रूप रे ॥ भवि० ॥ ३ ॥ वंदो० ॥ छती पर्याय जे ज्ञानना रे, तेतो नवि बदलाय ॥ ज्ञेयनी नव नवी वर्तना रे, समयमां सर्व जणाय रे ॥ भ० ॥ ४ ॥

वंदो० ॥ बीजा ज्ञानतणी प्रभारे, एहमां सर्व समाय ॥ रविप्रभाथी अधिक नहीं रे, नक्षत्र गण समुदाय रे ॥ ॥ भ० ॥ ५ ॥ वंदो० ॥ गुण अनंता ज्ञानना रे, जाणे धन्य नर तेह ॥ विजयलक्ष्मिसूरि ते लहे रे, ज्ञान महोदय गेह रे ॥ भवि० ॥६॥ वंदो केवलज्ञान ॥ इति केवलज्ञान स्तवनम् ॥

पछी खमासमण देइ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् श्रीकेवलज्ञान आराधनार्थं करेमि काउस्सग्गं० ॥ वंदणव० ॥अन्नत्थ०॥ लोगस्स०॥एक नवकारनो काउस्सग्ग करी नमोऽर्हत्० कही थोय कहेवी. ते लखीये छिये.

॥ अथ थोय ॥

प्रह उठी वंदूं ॥ ए देशी ॥ छत्र त्रय चामर, तरू अशोक सुखकार ॥ दिव्य ध्वनि दुंदुभि, भामंडल झलकार ॥ वरसे सुर कुसुमें, सिंहासन जिन सार ॥ वंदे लक्ष्मिसूरि, केवलज्ञान उदार ॥ इति स्तुति ॥

पछी खमासमण देइ उभा रही गुण स्तववा दोहा कहेवा. ते कहीये छिये.

॥ अथ दोहा लिख्यते ॥

॥ बहिरातम त्यागे करी, अंतर आतम रूप ॥ अनुभविजे परमातमा, भेद एकज चिद्रुप ॥१॥ पुरुषोत्तम परमेश्वरु, परमानंद उपयोग ॥ जाणे देखे सर्वने, स्वरूप रमण सुख भोग ॥ २ ॥ गुणपर्याय अनंतता, जाणे सघला द्रव्य ॥ काल त्रयवेदि जिणंद, भाषित भव्याभव्य ॥३॥ अलोक अनंतो लोकमां, थापे जेह समत्र ॥ आतम एक प्रदेशमां, वीर्य अनंत पसत्र ॥ ४ ॥ केवल दंसण नाणनो, चिदानंद घन तेज ॥ ज्ञानपंचमी दिन पूजीये, विजयलक्ष्मि शुभ हेज ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ इति श्री विजयलक्ष्मिसूरि कृत विधिसहितं श्री ज्ञानपंचमी देववंदन समाप्तम् ॥

॥ अथ पंडित श्री रूपविजयजी कृत ॥

॥ मौनएकादशीना देववंदन प्रारंभ ॥

॥ तत्र प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ नगर गजपुर पुरंदर पुर, शोभथा अति जित्वरं ॥ गजवाजि रथवर कोटिकलितं, इंदिराभूत मंदिरं ॥

नर नाथ बत्रीश सहस सेवित, चरण पंकज सुखकरं ॥ सुर असुर व्यंतर नाथ पूजित, नमो श्री अर जिनवरं ॥ १ ॥ अप्सरा सम रूप अद्भूत, कला यौवन गुण भरी ॥ एक लाख बाणुं सहस्स उपर, सोहियें अंते-उरी ॥ चोराशी लक्ष गज वाजी स्यंदन, कोटि छन्नू भटवरं ॥ सुर अ० ॥ २ ॥ सग पणिंदी सग एगिंदी, चउद रत्नशुं शोभितं ॥ नव निधानाधि पति नाकी, भक्तिभाव भृतैर्नतं ॥ कोटि छन्नू ग्राम नायक, सकल शत्रु विजित्वरं ॥ सुर अ० ॥ ३ ॥ सहस अष्टोत्तर सुलं-छन, लक्षितं कनक छविं ॥ चिन्ह नंदावर्त शोभितं, स्वरप्रभा निर्जित रविं ॥ चक्रि सप्तम भुक्त भोगी, अष्टादशमो जिनवरं ॥ सुर अ० ॥४॥ लोकांति कामर बोधितो जिन, त्यक्त राज्य रमाभरं ॥ मृगशिर एकादशी शुक्ल पक्षे, ग्रहित संयम सुखकरं ॥ अरनाथ प्रभुपद पद्म सेवन, शुद्ध रूप सुखाकरं ॥ सुर असुर व्यंतरनाथ पूजित, नमो श्री अर जिनवरं ॥५॥ इति चैत्यवंदन ॥

पछी नमुथ्थुणं० ॥ जयवीयराय० अर्धा कही ख-मासमण देइने चैत्यवंदन करवुं, ते कहे छे ॥

॥ अथ चैत्यवंदन लिख्यते ॥

॥ राय सुदर्शन कुल नभें, नूतन दिन मणिरूप ॥ देवी माता जनमियो, नमे सुरासुर नूप ॥ १ ॥ कुमर राज्य चक्रिपणे, भोगवी भोग उदार ॥ त्रेशठ सहस वरषां पछी, लीये प्रभु संयमभार ॥ २ ॥ सहस पुरुष साथे लीए, संयम श्री जिनराय ॥ तस पद पद्म नम्या थकी, शुद्ध रूप जिन थाय ॥ ३ ॥ इति चैत्यवंदन ॥ पछी जंकिंचि॰ ॥ नमुथ्थुणं॰ ॥ अरिहंत चेइयाणं कही एक नवकारनो काउस्सग्ग करीने थोयो कहेवी.

॥ अथ थोयो लिख्यते ॥

॥ श्री अरनाथ जिनेश्वरु, चक्री सप्तम सोहे ॥ कनकवरण छबि जेहनी, त्रिभुवन मन मोहे ॥ भोग करमनो क्षय करी, जिन दिक्षा लीधी ॥ मनपर्यव नाणी थया, करी योगनी सिद्धी ॥१॥ मागशिर शुदि एकादशी, अर दिक्षा लीधी॥ मल्लि जनम व्रत केवली, नमी केवल ऋद्धी ॥ दश खेत्रे त्रण कालना, पंच पंच कल्याण ॥ तिणे ए तिथि आराधतां, लहीये शिवपुर ठाण ॥ २ ॥ अंग अग्यार आराधवा, वलि बार उपांग॥

मूळ सूत्र चारे नलां, षट् छेद सुचंग ॥ दश पयन्ना दीपता, नंदी अनुयोग द्वार ॥ आगम एह आराधतां, लहो भवजल पार ॥३॥ जिनपद सेवा नित्य करे, समकित शुचिकारी ॥ जक्केश जक्क सोहामणो, देवी धारणी सारी ॥ प्रभु पद पद्मनी सेवना, करे जे नरनारी ॥ चिदानंद निज रूपने, लहे ते निरधारी ॥ ४ ॥ इति ॥

पछी नमुथ्थुं० ॥ अरिहंत० कही एक नवकारनो काउस्सग्ग करी पछी बीजी थोयो कहेवी. ते कहे छे.

॥ अथ थोयो लिख्यते ॥

॥ श्री अरजिन ध्यावो, पुण्यना थोक पावो ॥ सवि डुरित गमावो, चित्त प्रभु ध्यान लावो ॥ मद मदन विरावो, भावना शुद्ध भावो ॥ जिनवर गुण गावो, जिम लहो मोक्ष ठावो ॥१॥ सवि जिन सुखकारी, क्षय करी मोह भारी ॥ केवल शुचि धारी, मान माया निवारी ॥ थया जग उपगारी, क्रोध योद्धा पहारी ॥ शुचि गुण गण धारी, जे वर्या सिद्धि नारी ॥ २ ॥ नव तत्त्व वखाणी, सप्त भंगी प्रमाणी ॥ सग नयथी मिलाणी,

चार अनुयोग खाणी ॥ जिनवरनी वाणी, जे सुणे ज-व्य प्राणी ॥ तिणे करी अघ हाणी, जइ वरे सिद्धि राणी ॥३॥ समकिति नर नारी, तेहनी जक्ति कारी ॥ धारणी सूरि सारी, विघ्नना थोक हारी ॥ प्रजु आणाकारी, लब्धि लीला विहारी ॥ संघ दुरित निवारी, होय आणंदकारी ॥ ४ ॥ इति स्तुति ॥

पछी नमुथ्थुणं॰ कही जावंति चेइआइं कही पछी जावंति केविसाहु कही स्तवन कहेवुं. ते कहे छे.

॥ अथ स्तवन लिख्यते ॥

॥ फतमलना गीतनी देशी ॥ जगपति श्री अरजिन जगदीश, हस्तिनागपुर राजीयो ॥ जगपति राय सुदर्शन नंद, महिमा महिमांहे गाजीयो ॥ १ ॥ जगपति कंचनवरण शरीर, कामित पूरण सुरतरु ॥ जगपति लंछन नंदावर्त, त्रण जुवन मंगलकरु ॥२॥ जगपति षट् खंम जरत अखंम, चक्रवर्त्तिनी संपदा ॥ जगपति सहस्स बत्रीश जूपाल, सेवित चरण कमल सदा ॥ ३ ॥ जगपति सोहे सुंदर वान, चउसठी सहस्स अंतेउरी ॥ जगपति जोगवी जोग रसाल, जोगदशा चित्तमां धरी

॥ ४ ॥ जगपति सहस पुरुष संघात, मृगशिर शुदि ए-कादशी ॥ जगपति संयम लीये प्रभु धीर, त्रिकरण योगे उल्लसी ॥५॥ जगपति चोसठ सुरपति ताम, भक्ति करे चित्त गहगही ॥ जगपति नाचे सुरवधू कोडी, अं-ग मोडी आगल रही ॥६॥ जगपति वाजे नव नव छंद, देव वाजित्र सोहामणां ॥ सुरपति देवदुष्य ठवे खंध, पुष्पवृष्टि करे सुर घणा ॥७॥ जगपति धन्य वेळा घडी तेह, धन्य ते सुरनर खेचरा ॥ जगपति जेणे कल्याणक दीठ, धन्य जनम ते भव तर्या ॥८॥ जगपति प्रभु पद पद्मनी सेव, त्रिकरण शुद्धे जे करे ॥ जगपति करीय करमनो अंत, शुद्ध रूप निज ते वरे ॥ ए ॥ इति श्री अरजिन स्तवनम् ॥ पछी जयवीयराय अर्धा कहीने चै-त्यवंदन कहेवुं. ते लखीये छिये.

॥ अथ चैत्यवंदन ॥

अवधिज्ञाने आभोगिने, निज दिक्षा काल ॥ दान संवछरी जिन दिये, मनोवंछित ततकाल ॥ १ ॥ धन कण कंचन कामिनी, राज ऋद्धि भंडार ॥ छोडी संयम आदरे, सहस पुरुष परिवार ॥ २ ॥ मृगशिर

शुदि एकादशी ए, संयम लीये महाराज ॥ तस पद पद्म सेवन थकी, सीझे सघलां काज ॥ ३ ॥ इति चैत्यवंदन ॥ पछी नमुथ्थुणं कहीने जयवीयराय संपूर्ण कहेवा ॥ इति प्रथम देववंदन जोमो कह्यो ॥१॥ एज रीते चार जोमानी विधि जाणवी ॥ हवे बीजो जोमो कहेशे. तिहां प्रथम त्रण चैत्यवंदन कहे छे.

॥ अथ प्रथम चैत्यवंदन लिख्यते ॥

॥ जय जय मल्लिजिणंद चंद, गुण कंद अमंद ॥ नमे सुरासुर चंद, तिम भूपति वृंद ॥ १ ॥ कुसुम गेह शय्या कुसुम, कुसुमाभरण सोहाय ॥ जननी कूखे जब जिन हुता, मल्लि नाम तिणे थाय ॥ २ ॥ कुंभ नरेश्वर कुल तिलो ए, मल्लिनाथ जिनराज ॥ तस पद पद्म नम्या थकी, सीझे सघलां काज ॥३॥ इति प्रथम चैत्यवंदन॥

॥ अथ द्वितीय चैत्यवंदन लिख्यते ॥

नील वरण दुःखहरण, शरण शरणागत वत्सल ॥ निरुपम रूप निधान, सुजस गंगाजल निरमल ॥ १ ॥ सुगुण सुरासुर कोमि, दोमी नित्य सेवा सारे ॥ भक्ति युक्ति नित्य मेव, करी निज जन्म सुधारे ॥२॥ बाल-

पणे जिनराजने ए, सवि मळी हुलरावे ॥ जिन मुख पद्म निहालीन, बहु आणंद पावे ॥ ३ ॥ इति द्वितीय चत्यवंदन ॥

॥ अथ तृतीय चैत्यवंदन लिख्यते ॥

॥ पुरुषोत्तम परमातमा, परम ज्योति परधान ॥ परमानंद स्वरूप रूप, जगमां नही उपमान ॥१॥ मरकत रत्न समान वान, तनु कांति बिराजे ॥ मुख सोभा श्रीकार देखी, विधु मंमल लाजे ॥२॥ इंद्रि वर दल नयन सयल, जन आणंदकारी ॥ कुंभराय कुल भाण भाल, दीपित मनोहारी ॥ ३ ॥ सुरवधू नरवधू मलि मलि, जिन गुण गण गाती ॥ भक्ति करे गुणवंतनी, मिथ्या अघ घाती ॥४॥ मल्लिजिणंद पद पद्मनी ए, नित्य सेवा करे जेह ॥ रूपविजय पद संपदा, निश्चय पामे तेह ॥ ५ ॥ इति तृतीय चैत्यवंदन ॥

॥ हवे थोयजोमा बे कहे छे ॥

॥ अथ थोयोनो प्रथम जोमो ॥

॥ सुण सुणरे साहेली, उठी सहुथी पहेली ॥ करी स्नान वहेली, जिम वधे पुण्य वेली ॥ तजी मोहनी प-

ल्ली, संभ्र करी काम वल्ली ॥ करी भक्ति सुभल्ली, पूजी जिनदेव मल्ली ॥ १ ॥ सवि जिन सुखकारी, मोह निद्रा निवारी ॥ भविजिन निस्तारी, वाणी स्याद्वाद धारी ॥ निर्मल गुणकारी, धौत मिथ्यातगारी ॥ नमिये नर नारी, पाप संताप टारी ॥ २ ॥ मृगशिर अजुआली, सर्व तिथीमां रसाली ॥ एकादशी पाली, पापनी श्रेणी गाली ॥ आगममां रसाली, तिथि कही ते संभाली ॥ शिववधू लटकाली, परणश्ये देइ ताली ॥ ३ ॥ वैरुट्या देवी, भक्ति हियडे धरेवी ॥ जिन भक्ति करेवी, तेहना दुःख हरेवी ॥ मन महिर करेवी, लच्छी लीला वरेवी ॥ कवि रूप कहेवी, देजो सुख नित्य मेवी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ थोयोनो बीजो जोडो ॥

मिथुलापुरी जाणी, स्वर्ग नगरी समाणी ॥ कुंभ नृपं गुणखाणी ॥ तेजथी वज्र पाणी ॥ प्रभावती राणी, देवनारी समाणी ॥ तस कुख्ख वखाणी, जन्म्या जिहां मल्लि नाणी ॥ १ ॥ दिशिकुमरी आवे, जन्मकरणी ठरावे ॥ जिनना गुण गावे, भावना चित्त भावे ॥ जन्मोत्सव दावे, इंद्र सुर शैल ठावे ॥ हरि जिनीगृह आवे,

लेइ प्रभु मेरु जावे ॥ २ ॥ अच्युत सुर राजा, स्नात्र करे भक्ति भाजा ॥ निज निज स्थिति आजा, पूजे जिन भक्ति ताजा ॥ निज चढता दिवाजा, सूत्र मर्याद भाजा ॥ समकित करी साजा ॥ भोगवे सुख माजा ॥ ३ ॥ सुरवधू मली रंगे, गाय गुण बहु उमंगे ॥ जिन लेइ उछरंगे, गोदें आपे उमंगे ॥ जिनपतिने संगे, भक्ति रंग प्रसंगे ॥ संघ भक्ति तरंगे, पामे लच्छी अभंगे ॥ ४ ॥ इति स्तुति ॥ ए थोयोना बे जोमा कह्या ॥

॥ अथ स्तवन लिख्यते ॥

॥ मारो पियुमो परघर जाय, सखी शुं कहिये रे ॥ किम एकलमां रहेवाय, वियोगे मरिये रे ॥ ए देशी ॥ मिथिला ते नयरी दीपति रे, कुंभ नृपति कुलहंस ॥ मल्लि जिणंद सोहामणो रे, सयल देव अवतंस ॥ १ ॥ सखि सुण कहिये रे, मह्रारो जिनजी मोहनवेली, हयमे वहिये रे ॥ ए आंकणी ॥ छप्पन दिशिकुमरी मली रे, करती जन्मनां काज ॥ हेजाली हरखे करी रे, हुलरावे जिनराज ॥ सखी० ॥ २ ॥ मह्रारो० ॥ वीणा वजावे वालही रे, ललीलली जिन गुण गाय ॥ चिरंजीवो ए

बाहुडोरे, जिम कंचनगिरिराय ॥सखी०॥३॥ महा०॥केइ करमां वींजण ग्रही रे, वींजे हरखे वाय ॥ चतुरा चामर ढालती रे, सुरवधू मन मलकाय ॥सखी०॥४॥ महा०॥ नाचे साचे प्रमथी रे, राचे माचे चित्त ॥ जाचे समकित शुद्धता रे, भवजल तरण निमित्त ॥स०॥५॥ महा०॥ उर शिरस्कंध उपररे, सुरवधू होमाहोमी ॥ जगत तिलक भाल धरी रे, करती मोमा मोमी ॥ स० ॥६॥ महा० ॥ तव सुरपति सुर गिरि शिरे रे, नमन करे कर जोमी ॥ तीर्थोदक कुंभ भरी रे, साठ लाख एक कोमि॥स०॥७॥महा०॥ जिन जननीपासे ठवी रे, वरसी रयणनी राशि ॥ सुरपति नंदीश्वर गया रे, धरतां मन उल्लास ॥स०॥८॥ महा०॥ सुरपति नरपतिये कर्यो रे, जन्मउत्सव अति चंग ॥ मल्लि जिणंद पद पद्मशुं रे, रूपविजय धरे रंग ॥ स० ॥ ए ॥ महारो जिनजी मोहनवेली० ॥ इति द्वितीय जोमो संपूर्ण ॥

॥ अथ तृतीय जोमो प्रारभ्यते ॥

॥ अथ प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ अद्भूत रूप सुगंधि सुवास, नहीं रोग विकार ॥ मेल नही जस देह रेह, परस्वेद लगार ॥१॥ सागर वर

गंभीर धीर, सुरगिरि सम जेह ॥ औषधिपति सम सौम्य कांति, वर गुण गण गेह ॥२॥ सहस अष्टोत्तर लक्षणें ए, लक्षित जिनवर देह ॥ तस पद पद्म नम्या थकी, न रहे पापनी रेह ॥ ३ ॥ इति प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ अथ द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ मल्लिनाथ शिवसाथ, आथ वर अक्षयदायी ॥ गाजे त्रिभुवन मांहि, अधिक प्रभुनी ठकुराइ ॥ १ ॥ अनुत्तर सुरथी अनंत गुण, तनु शोभा छाजे ॥ आहार नीहार अदृश जास, वर अतिशय राजे ॥ २ ॥ मृगशिर शुदि एकादशी ए, लीये दिक्षा जिनराज ॥ तस पद पद्म नम्या थकी, सीझे सघलां काज ॥३॥ इति द्वितीय चैत्यवंदन॥

॥ अथ तृतीय चैत्यवंदन ॥

॥ जय जय मल्लि जिणंद देव, सेवा सुरपति सारे॥ मृगशिर शुदि एकादशी, संयम अवधारे ॥ १ ॥ अभ्यंतर परिवारमें, संयति त्रणसें जास ॥ त्रणसें पद नर संयमें, साथे व्रत लीए खास ॥ २ ॥ देव दुष्य खंधे धरी ए, विचरे जिनवर देव ॥ तस पद पद्मनी सेवना, रूप कहे नित्य मेव ॥ ३ ॥ इति तृतीय चैत्यवंदन ॥

॥ अथ थोयोनो प्रथम जोमो ॥

॥ नमो मल्लि जिणंदा, जिम लहो सुख वृंदा ॥ द-
खि कुरगति दंमा, फेरि संसार फंदा ॥ पदयुग अरविं-
दा, सेवियें थइ अमंदा ॥ जिम शिवसुख कंदा, विस्तरे
ऊंमि दंमा ॥१॥ जिनवर जयकारी, विश्व नव्योपगारी॥
करे जब व्रत त्यारी, ज्ञान त्रीजे निहारी ॥ तव सुर अ-
धिकारी, विनवे नक्ति धारी ॥ वरो संयम नारी, परि-
ग्रहारंन गारी ॥ २ ॥ मनपज्जव नाणी, हुआ चारित्र
खाणी ॥ सुरनर इंडाणी, वंदे बहु नाव आणी ॥ ते
जिननी वाणी, सूत्रमांहिं लखाणी ॥ आदरे जेह प्राणी,
ते वरे सिद्धि राणी ॥ ३ ॥ पारणुं जस गेहे, नाथ करे
जइ स्वदेहे ॥ नरे कंचन मेहे, ऊंक तस देव नेहे ॥ संघ
कुरित हरेहिं, देव देवी वरेहिं ॥ कुबेर सुरेहिं, रूपविजय
प्रदेहिं ॥ ४ ॥ इति प्रथम थोय जोमो ॥

॥ अथ द्वितीय थोय जोमो ॥

॥ मल्लि जिन नामे, संपदा कोमि पामे ॥ कुरगति
कुःख वामे, स्वर्गनां सुख जामे ॥ संयम अनिरामे, जे
यथ ख्यात नामे ॥ करी कर्म विरामे, जइ वसें सिद्धि

थामे ॥ १ ॥ पंच भरह मझार, पंच ऐरवत्त सार ॥ त्रिहुं काळ विचार, नेवुं जिननां उदार ॥ कल्याणक उदार, जाप जपिये श्रीकार ॥ जिम करी भवपार, जइ वरो सिद्धिनार ॥ २ ॥ जिनवरनी वाणी, सुत्रमांहे गुंथाणी ॥ षट्द्रव्य वखाणी, चार अनुयोग खाणी ॥ सग भंगी प्रमाणी, सप्त नयथी ठराणी ॥ सांभळे दिल आणी, ते वरे सिद्धिराणी ॥ ३ ॥ वैरुट्या देवी, मल्लि जिन पाय सेवी ॥ प्रभु गुण समरेवी, भक्ति हियडे धरेवी ॥ संघ दुरित हरेवी, पाप संताप खेवी ॥ रूपविजय कहेवी, लब्धी लीला वरेवी ॥ ४ ॥ इति द्वितीय थोय जोडो ॥

॥ अथ स्तवन लिख्यते ॥

॥ सखी आवी देव दीवाळी रे ॥ ए देशी ॥ पंचम सुरलोकना वासी रे, नव लोकांतिक सुविलासी रे, करे विनती गुणनी राशी ॥ १ ॥ मल्लिजिन नाथजी व्रत लीजे रे, भवि जीवने शिवसुख दीजे ॥ मल्लि० ॥ ए आंकणी ॥ तुमे करुणारस भंडार रे, पाम्या छो भवजळ पार रे, सेवकनो करो उद्धार ॥ मल्लि० ॥ २ ॥ भवि० ॥ प्रभु दान संवत्सरी आपे रे, जगनां दारिद्र दुःख

कापे रे, भव्यत्वपणे तस थापे ॥ मल्लि०॥ ३॥ भवि०॥ सुरपति सघला मली आवे रे, मणिरयण सोवन वरसावे रे, प्रभु चरणे शीश नमावे ॥ मल्लि० ॥ ४ ॥ भवि० ॥ तीर्थोदक कुंभा लावे रे, प्रभुने सिंहासन ठावे रे, सुरपति भक्तें नवरावे ॥ मल्लि० ॥ ५ ॥ भवि० ॥ वस्त्राभरणे शणगारे रे, फूलमाला हृदयपरे धारे रे, दुःखडां इंद्राणी उवारे ॥ मल्लि० ॥ ६ ॥ भवि० ॥ मल्या सुरनर कोडा कोडी रे, प्रभु आगे रह्या कर जोडी रे, करे भक्ति युक्ति मद मोडी ॥ मल्लि० ॥ ७ ॥ भवि० ॥ मृगशिर शुदनी अजुआली रे, एकादशी गुणनी आली रे, वर्या संयमवधू लटकाली ॥ मल्लि० ॥ ८ ॥ भवि० ॥ दिक्षा कल्याणक एह रे, गातां दुःख न रहे रेह रे, लहे रूपविजय जस नेह ॥ मल्लि० ॥ ९ ॥ भवि० ॥ इति श्री मल्लि जिन स्तवनम् ॥ इति त्रीजो जोडो समाप्त ॥

॥ अथ चोथो जोडो प्रारंभः ॥

॥ अथ प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ वैदर्भदेश मिथिलापुरी, कुंभ नृपति कुलभा[illegible] ॥ पुण्य वल्ली मल्लि नमो, भवियण सुहझाण ॥ [illegible]

वीश धनुषनी देहडी, नीलवरण मनोहार ॥ कुंभ लंछन कुंभनी परे, उतारे भवपार ॥ २ ॥ मृगशिर शुदि एकादशीये, पाम्या पंचम नाण ॥ तस पद पद्म वंदन करी, पामो शाश्वत ठाण ॥ ३ ॥ इति प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ अथ द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ पहेलुं चोथुं पांचमुं, चारित्र चित्त लावे ॥ क्षपकः श्रेणी जिनजी चढी, घाती कर्म खपावे ॥ १ ॥ दिक्षा दिन शुभ भावथी, उपन्युं केवलनाण ॥ समवसरण सुरवर रचे, चउविह संघ मंडाण ॥२॥ वरस पंचावन सहसनुं ए, जिनवर उत्तम आय ॥ तस पद पद्म नम्या थकी, चिद्रूपे चित्त ठाय ॥३॥ इति द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ अथ तृतीय चैत्यवंदन ॥

॥ जय निर्जित मदमल्ल, शल्य त्रय वर्जित स्वामी ॥ जय निर्जित कंदर्प दर्प, निज आतमरामी ॥ १ ॥ दुर्जय घातिकर्म मर्म, भंजन वडवीर ॥ निर्मल गुण संसार सार, सागरवर गंभीर ॥ २ ॥ अनंत ज्ञान दर्शन धरुए, मल्लि जिणंद मुणिंद ॥ वदन पद्म तस देखतां, लहे चिद्रूप अमंद ॥ ३ ॥ इति तृतीय चैत्यवंदन ॥

॥ अथ प्रथम थोय जोडो ॥

॥ नमो मल्लि जिणंदा, जास नमे देववृंदा ॥ तिम चोसठ इंदा, सेवे पादारविंदा ॥ दुरगति दुःख दंदा, नामथी सुखकंदा ॥ प्रभु सुजस सुरिंदा, गाय भक्तें नरिंदा ॥ १ ॥ नवति जिनराया, सुक्लध्याने सुहाया॥ सोहंपद पाया, त्यक्त मद मोह माया ॥ सुरनर गुण गाया, केवल श्री सुहाया ॥ ते सवि जिनराया, आपजो मोक्ष माया ॥२॥ केवल वरनाणे, विश्वना भाव जाणे ॥ बार परषद ठाणे, धर्म जिनजी वखाणे ॥ गणधर तिणे टाणे, त्रिपदीयें अर्थ माणे ॥ जे रहे सुहझाणे, ते रमे आत्मनाणे ॥३॥ वैरुट्या देवी, भक्ति हैयडे धरेवी ॥ जिन सेव करेवी, विघ्ननां वृंद खेवी॥ संघ दुरित हरेवी, लब्धी लीला वरेवी ॥ रूपविजय कहेवी, आपजो मोज देवी ॥ ४ ॥

॥ अथ द्वितीय थोय जोडो ॥

॥ मल्लि जिनराजा, सेवीयें पुण्य भाजा ॥ जिम चढत दीवाजा, पामियें सुखताजा ॥ कोइ लोपे न माजा, नित्य नवा सुख साजा ॥ कोइ न करे जाजा, पुण्यनी एह माजा ॥ १ ॥ मल्लि नमी नामे, केवल

ज्ञान पामे ॥ दशखेत्र सुठामें, तिमज जिन भिन्न नामें॥ त्रण्य काळ निमामे, घातियाँ कर्म वामे ॥ ते जिन परिणामे, जइ वसे सिद्धि धामे ॥ २ ॥ जिनवरनी वाणी, चार अनुयोग खाणी ॥ नवतत्त्व वखाणी, द्रव्य षट्मां प्रमाणी ॥ गणधरे गुंथाणी, सांभळे जेह प्राणी ॥ करी कर्मनी हाणी, जइ वरे सिद्धि राणी ॥ ३ ॥ सुर कुबेर आवे, शीश जिनने नमावे ॥ मिथ्यात खपावे, शुद्ध सम्यक्त्व पावे ॥ पुण्य थोक जमावे, संघ भक्ति प्रभावे ॥ पद्मविजय सुहावे, शिष्य तस रूप गावे ॥ ४ ॥ इति द्वितीय थोय जोडो ॥

॥ अथ स्तवन लिख्यते ॥

॥सांभळरे तुं सजनी मारी, रजनी किहां रमी आवीजी रे ॥ए देशी॥ मल्लि जिनेश्वर अरचित केशर, अलवेसर अविनाशीजी ॥ परमेश्वर पूरण पदभोक्ता, गुणराशी शिववासी॥ जिनजी ध्यावोजी ॥ १॥ मल्लिजिणंद मुणिंद गुण गावोजी॥ ए आंकणी ॥ मृगशिर शुदि एकादशी दिवसे, उपन्युं केवलनाणजी॥लोकालोक प्रकाशक भासक,प्रगट्यो अभिनव भाण ॥ जिनजी० ॥२॥ मल्लि०॥ मत्यादिक

चउनाणनुं भासन, एहमां सकल समायजी॥ग्रह उडु तारा चंद प्रभा जिम, तरणी तेजमां जाय ॥ जिन० ॥ ॥३॥ म० ॥ ज्ञेय भाव सवि ज्ञाने जाणे, जे सामान्य विशेषजी ॥ आप स्वभावे रमण करे प्रभु, तजी पुद्गल संकलेश ॥ जिन० ॥ ४ ॥ म० ॥ चालीश सहस मुनि जेहना, रत्नत्रय आधारजी ॥ सहस पंचावन साहुणी जाणो, गुण मणि रयण भंडार ॥ जि० ॥ ५ ॥ म० ॥ शत सम न्यून सहस पंचावन, वरस केवल गुण धरता जी॥ विचरे वसुधा उपरे जिनजी, बहु उपगारने करता ॥ जि० ॥ ६ ॥ म०॥ केवलनाण कल्याणक जिननुं, जे भवियण नित्य गावेजी ॥ जिन उत्तम पद पद्म प्रभावे, सूधुं रूप ते पावे ॥जिन०॥७॥ मल्लि०॥ इति स्तवनं ॥ इति चोथो देववंदन जोडो संपूर्ण.



॥ अथ पांचमो जोडो लिख्यते ॥

॥ अथ प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ सकल सुरासुर इंद वृंदा, भावे कर जोडी ॥ सेवे पदपंकज सदा, जघन्यथकी एक कोडी ॥ १ ॥

जास ध्यान एकतान करे, जे सुरनर भावे ॥ संकट कष्ट दूरे टळे, शुचि संपद पावे ॥ २ ॥ सर्व समिहित पूरवाए, सुरतरु सम सोहाय ॥ तस पद पद्म पूज्या थकी, निश्चय शिवसुख थाय ॥ ३ ॥ इति प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ अथ द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ नमो नमो श्री नमि जिनवरु, जगनाथ नगीनो ॥ पदयुग प्रेमें जेहना, पूजे पति शचिनो ॥ १ ॥ सिंहासन आसन करी, जग भासन जिनराज ॥ मधुर ध्वनि दीये देशना, भविजनने हित काज ॥ २ ॥ गुण पांत्रीश अलंकरीए, प्रभु मुख पद्मनी वाणी ॥ ते नमी जिननी सांभळी, शुद्ध रूप लहे प्राणी ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ तृतीय चैत्यवंदन ॥

॥ सकल मंगल केळी कमला, मंदिरं गुण सुंदरं ॥ वर कनक वर्ण सुवर्ण पति जस, चरण सेवे मनहरं ॥ अमरावती सम नयरी मिथिला, राज्य भार धुरा धरं ॥ प्रणमामि श्री नमिनाथ जिनवर, चरण पंकज सुखकरं ॥ १ ॥ गज वाजी स्यंदन देश पुर धन, त्याग करी त्रि-

भुवन धणी ॥ त्रणशें अठयाशी कोमी उपर, दीए लख अेंशी गणी ॥ दिनार जनंनी जनक नामांकित, दीये इछित जिनवरं ॥ प्रण०॥२॥ सहस्राम्रवनमां सहस नरयुत, सौम्य भाव समाचरे ॥ नरक्षेत्र संज्ञी भाव वेदी, ज्ञान मनःपर्यव वरे ॥ अप्रमत्त भावे घाति चउक्खय, लहे केवल दिनकरं ॥ प्रण० ॥३॥ तव सकल सुरपति भक्ति नति करी, तीर्थपति गुण उच्चरे ॥ जय जगत जंतु जात करुणा, वंत तुं त्रिभुवन शिरे ॥ जय अकल अचल अनंत अनुपम, भव्य जन मन जयकरं ॥ प्रण०॥ ॥ ४ ॥ सप्त दश जस गणधरा मुनि, सहस विंशति गुणनीला ॥ सहस एकतालीश साहुणी, सोलशें केवली भला ॥ जिनराज उत्तम पद्मनी परे, रूपविजय सुहंकरं ॥ प्रण० ॥ ५ ॥ इति तृतीय चैत्यवंदन ॥

॥ अथ प्रथम थोय जोमो ॥

श्री नमी जिन नमीये, पाप संताप गमीये ॥ जिन तत्वमां रमीये, सर्व अज्ञान वमीये ॥ सवि विघ्नने दमीयें, वर्तिए पंच समीयें ॥ नवि भववन भमीयें, नाथ आणा न क्रमीयें ॥ १ ॥ दशे खेत्रना इश, तीर्थपति

जेह त्रीश ॥ त्रिहुं काल गणीश, नेवुं जिनवर नमीश ॥ अर्हं ते पद त्रीश, साठ दीक्षा जपीश ॥ केवली जगदीश, साठ संख्या गणीश ॥ २ ॥ सग नय युत वाणी, द्रव्य छकें गवाणी ॥ सग भंगी ठराणी ॥ नव तत्त्वे वखाणी ॥ जे सुणे भवि प्राणी, शुद्ध श्रद्धा न आणी ॥ ते वरे शिवराणी, शाश्वतानंद खाणी ॥ ३ ॥ देवी गंधारी, शुद्ध सम्यकत्व धारी ॥ प्रभु सेवा कारी, संघ चऊविह संभारी ॥ करे सेवना सारी, विघ्न दूरे विदारी ॥ रूपविजयने प्यारी, नित्य देवी गंधारी ॥४॥ इति प्रथम थोय जोडो ॥

॥ अथ द्वितीय थोय जोडो ॥

॥ नमि जिन जयकारी, सेविये भक्ति धारी ॥ मिथ्यात्व निवारी, धारीयें आण सारी ॥ परभाव विसारी, सेवियें सुखकारी ॥ जिम लहो शिव नारी, कर्ममल दूरें मारी ॥१॥ वर केवलनाणी, विश्वना भाव जाणी ॥ शुचि गुण गण खाणी, शुद्ध सत्ता प्रमाणी ॥ त्रिभुवनमां गवाणी, कीर्ति कांता वखाणी ॥ ते जिन भवि प्राणी, वंदीयें भाव आणी ॥ २ ॥ आगमनी वाणी,

सात नयथी वखाणी ॥ नव तत्त्व ठराणी, द्रव्य षट्मां प्रमाणी ॥ सग भंग भराणी, चार अनुयोगें जाणी ॥ धन्य तास कमाणी, जे भणे भाव आणी ॥३॥ एकादशी सारी, मृगशीर्षे विचारी ॥ करे जे नरनारी, शुद्ध सम्यकत्व धारी ॥ तस विघ्न विदारी, देवी गंधारीसारी॥ रूपविजयने भारी, आपजो लक्ष्मी प्यारी ॥ ४ ॥ इति द्वितिय थोय जोडो ॥

॥ अथ स्तवन लिख्यते ॥

॥ इण सरवरीयारी पाल, ऊभी दोय नागरी लखना ॥ ए देशी ॥ परम रूप निरंजन, जनमन रंजणो ॥ ललना ॥ भक्तिवच्छल भगवंत, तुं भव भय भंजणो ॥ ल० ॥ जगत जंतु हितकारक, तारक जगधणी ॥ल०॥ तुज पद पंकज सेव, हेव मुजने घणी॥ ॥ल०॥१॥ आव्यो राज हजूर, पूरव भगति भरें ॥ल०॥ आपो सेवना आप, पाप जिम सवि टले ॥ ल० ॥ तुम सरिखा महाराज, मेहेर जो नवि करे ॥ल०॥ तो अम सरिखा जीवनां, कारज किम सरे॥ल०॥२॥ जगतारक जिनराज, बिरुद छे तुमतणा ॥ल०॥ आपो समकित

दान, पराया मत गणो ॥ ल० ॥ समरथ जाणी देव, से- वना में करी ॥ ल० ॥ तुंहिज छे समरथ, तरण तारण तरी ॥ ल० ॥ ३ ॥ मृगशिर सित एकादशी, ध्यान शुक्ल धरी ॥ ल० ॥ घातिकरम करी अंतके, केवलश्री वरी ॥ ॥ ल० ॥ जग निस्तारण कारण, तीरथ थापीयो ॥ ल० ॥ आतम सत्ता धर्म, भव्यने आपीयो ॥ ल० ॥ अम वे- ला किम आज, विलंब करी रह्या ॥ ल० ॥ जाणो छो महाराज, सेवके चरणां ग्रह्यां ॥ ल० ॥ मन मान्याविना माहरूं, नवि छोडुं कदा ॥ ल० ॥ साचो सेवक तेह जे, सेव करे सदा ॥ ल० ॥ ५ ॥ वप्रा मात सुजात, कहावो श्युं घणुं ॥ ल० ॥ आपो चिदानंद दान, जन्म सफलो गणुं ॥ ल० ॥ जिन उत्तम पद पद्म, विजयपद दी- जीए ॥ ल० ॥ रूपविजय कहे साहिब, मुजरो लीजीए ॥ ललना० ॥ ६ ॥ इति श्री नमीनाथजिन स्तवनं ॥ पछी नमुथ्थुणं कही जयवीयराय संपूर्ण कहेवा ॥

इति पंडित श्री रूपविजयजी कृत मौन- एकादशीना देववंदन समाप्त.

॥ अथ श्री ज्ञानविमलसूरि कृत मौनएकादशीना देववंदनं लिख्यते ॥

॥ एनो विधि प्रथमना देववंदन प्रमाणे सर्व इहा पण जाणी लेवो ॥

॥ अथ प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ सयल संपत्ति सयल संपत्ति, तणो दातार ॥ श्री अरनाथ जिनेसरू, शुद्ध दरिसण जेह आप ॥ भूप सुदर्शन नंदनो, कठिन कर्म वन वेली कापे ॥ एहीज चक्री सातमो, अढारसमो जिन एह ॥ ज्ञानविमल सुख सुजसभो, वर गुण मणिनो गेह ॥ १ ॥ इति प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ अथ द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ कल्पतरुवर कल्पतरुवर, आज मुज बार ॥ फल दल संयुत प्रगटिउं, काम कुंभ शुभ सुखवेली पाइ ॥ चिंतामणि करतलें चढिउं, कामधेनु घर आज आइ ॥ दोष अढाररहित प्रभु दीठो, सवि सुखकार ॥ ज्ञानविमल अरजिन तणा, गुण अनंत अपार ॥ १ ॥ इति द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ अथ तृतीय चैत्यवंदन ॥

एह तारक एह तारक, अछे जगमांहि ॥ अरजिन सरखो को नही, भविकलोकने ग्रहे बांहिं॥ जे छे चक्री सातमो, लहि दोय पदवी उछाहे ॥ अढारसमोए जिनवरु ए, ज्ञानविमल घणुं नूर ॥ आरो भवनो ए दीए, नामे सुख भरपूर ॥ इति तृतीय चैत्यवंदन ॥

॥ अथ थोयो जोडा बे ॥

अरनाथ सनाथ करो स्वामी. में तुम सेवा पुण्यें पामी ॥ करुं विनति ललि ललि शिर नामी, आपो अविचल सुखनो कामी ॥१ ॥ जिनराज सवे पर उप-गारी, जिणे भवनी भावठ सवि वारी ॥ ते प्रणमो सहु ए नरनारी, चित्तमांहि शंका सवि वारी ॥ २ ॥ आगम अति अगम ए छे दरीयों, बहु नय प्रमाण रयणे भ-रीयो ॥ तेहने जे आवी अनुसरियो, ते भवि भवसंकट निस्तरियो ॥ ३ ॥ श्री शासन सुर रखवालिका, करे नित्य बित्य मंगलमालिका ॥ श्री ज्ञानविमल प्रभु नाम जपे, ते दिन दिन तरणी परें तपे ॥ ४ ॥ इति प्रथम थोय जोडो ॥

॥ अथ द्वितीय थोय जोडो ॥

॥ अरजिन आराधो, संयममार्ग साधो ॥ मनुज जन्म लाधो, काम क्रोध नवि बांधो ॥ चउगति दुःख दाधो, न होये तस मोह गाधो ॥ सुख संपत्ति वाधो, मोह मिथ्या न बाधो ॥१॥ सवि जन सुखकारी, विश्व विश्वोपकारी ॥ त्रण जिन चक्रधारी, शांति कुंथु अर जितारी ॥ मद मदन निवारी, वंदीयें पुण्यधारी ॥ नमो सवि नरनारी, दुःख कर्मारि वारी ॥२॥ सकल नय तरंगा, नैगमानेक भंगा ॥ जिहां छे बहु रंगा, जेह एकादशांगा ॥ वली दश दोय अंगा, जैन वाणी सुचंगा ॥ भव दव सम गंगा, सांभलो थइ सुचंगा ॥३॥ जिनचरण उपासे, जक्षणी धरणी पासे ॥ जक्षेंद सहवासे, नामथी दुःख नासे ॥ ज्ञानविमल प्रकासे, बोध वासे सुवासे ॥ अरि सकल निकासे, होय संपूर्ण आसे ॥ ४ ॥ इति द्वितीय जोडो ॥ पछी स्तवन कहेवुं.

॥ अथ स्तवन लिख्यते ॥

(आदर जीव क्षमा गुण आदर–ए देशी.)

आदर करीने अहोनिश सेवो, श्री अरनाथ जिणंदजी ॥ अनुपम फल दिए दरिसण जेहनुं, केवलनाण

दिणंदजी ॥ १ ॥ आ० ॥ पापस्थान अढार निवारी, रथ शीलांगने धारीजी ॥ किरिया विधिजोगें देखाडे, एहवा सहस अढारजी ॥ २ ॥ आ० ॥ गजपुर राय सुदर्शन नृपति, देवी राणी नंदाजी ॥ रेवती रिख मागशिर शुदि दशमी, दीने जाया सुखकंदाजी ॥ ३ ॥ ॥ आ० ॥ अनुक्रमें चक्री थइ मागशिर शुदि, एकादशी दिने दिक्षाजी ॥ विजया शिबिका सहसनर ठठ तप, पाछल प्रहरें शिक्षाजी ॥ ४ ॥ आ० ॥ मीनराशि नंदावर्त लंछन, त्रीश धनुषतणुं चंगाजी ॥ आयु चोराशी वरस सहसनुं, केवल लही शिव संगाजी ॥ ५ ॥ आ० ॥ तेत्रीश गणी गणधर जश जाणो, मुनिवर सहस पचासजी ॥ साठ सहस सुखदायी साहुणी, पूरे वंछित आशजी ॥ ६ ॥ आ० ॥ जेह अबंभ अढार निवारी, दाखे शिवपद पंथाजी ॥ ज्ञानविमल गुण पामे अहोनिश, जे निश्चय निर्ग्रंथाजी ॥ ७ ॥ आदर करीने अहोनिश सेवो, श्री अरनाथ जिणंदजी ॥ इति श्री अरनाथजिन स्तवन ॥

॥ इति प्रथम देववंदन जोडो ॥

॥ अथ द्वितीय जोमो प्रारंभः ॥

॥ तत्र प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ रयण राशीपरें जे गंभीर, मंदर गिरि धीर॥ विधु मंमलपरें निर्मला, जिम शारद नीर ॥ राग दोष दूषित नहीं, नही भवभय जेहने ॥ गुण अनंत भगवंत ते, प्रणमुं हुं तेहने ॥ ज्ञानविमल गुण जेहना ए, कहेता नावे पार ॥ मल्लि जिनेश्वर प्रणमतां, लहीये भवजल पार ॥ १ ॥ इति प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ अथ द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ अभ्यंतर जस पर्षदा, कन्या त्रण शतनी ॥ बाह्य पर्षदा जाणीयें, नृपसुत त्रण शतनी ॥ मृगशिर शुदि एकादशी, दीने संयम लेवे ॥ सकल सुरासुर तिहां मली, जिनना पद सेवे ॥ दिक्षा समयथी ऊपजे ए, तिम महा पज्जव नाण ॥ मल्लिनाथ केवल लहे, ज्ञानविमल सहु जाण ॥ २ ॥ इति द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ अथ तृतीय चैत्यवंदन ॥

॥ मल्लि जिनवर मल्लि जिनवर, सयल सुख देतें ॥ संयम गुण धारी थया, भूप मित्र षट्बोधि आपे ॥ कं-

चनमय करी पूतली, पूर्व प्रेम संकेत थापे ॥ माया तप परज्ञावथी ए, पाम्या स्त्रीनो वेद ॥ ज्ञानविमल गुणथी थया, अचल अरूप अवेद ॥३॥ इति तृतीय चैत्यवंदन॥

॥ अथ थोय जोमा बे ॥

॥ मन मोहन मल्लि जिणंदजी, जयो कुंज नरेसर नंदजी ॥ जपगारी जिन ओगणीशमो, मह्यारे मन अहो-निश ते रम्यो ॥१॥ ऋषन्नादिक चजवीश जिनवरा, जे वरते ठे ज्ञवि सुखकरा ॥ वळी केवलज्ञान दिवाकरा, ते वंदे सुरवर नरवरा ॥२॥ मल्लि जिनवर दीये देशना, सुणे ज्ञविजन बहु विध देशना ॥ दृष्टिवाद महाश्रुत वंदीए, जिम पातक दूर निकंदीए ॥३॥ कुबेर देव सान्निध्य करे, वैराट्या सवि संकट हरे॥ वाणी सुणवा मन खंतमी, ज्ञान-विमल तणी सोहामणी ॥ ४ ॥ इति प्रथम थोय जोमा ॥

॥ अथ द्वितीय थोय जोमो ॥

॥ मल्लि जिनेसर वाने लीला, दीयो मुज समकित लीलाजी ॥ अण परणे जिणे संयम लीधो, सूधा संयम सीलाजी ॥ते नर ज्ञवमां पशु परें जाणो, जे करे तुम अवहीलाजी ॥ तुम पद पंकज सेवाथी होय, बोधि

ज वसीलाजी ॥ १ ॥ अष्टापद गिरि ऋषभ जिनेश्वर,
ावपद पाम्या सारजी ॥ वासुपूज्य चंपाए यदुपति,
ाव पाम्या गिरनारजी ॥ तिम अपापा री शिव पो-
ता, वर्द्धमान जिनरायजी ॥ वीश समेतशिखरगिरि
ध्या, इम जिन चउवीश थायजी ॥ २ ॥ जिव
जिव पुण्य पापने आश्रव, बंध संवर निर्जरणाजी॥
द्दा तत्त्व नव इणी परें जाणो, वली षट्द्रव्य विवर-
जी ॥ धर्म अधर्म नभकालने पुद्गल, एह अजीव
चारोजी ॥ जीवसहित षट् द्रव्य प्रकास्यां, ते आगम
त्त धारोजी ॥ ३ ॥ विद्यादेवी शोल कहीजें, शासन
सुरी लीजेजी ॥ लोकपाल इंद्रादिक सघला, सम-
तदृष्टि भणीजेजी ॥ ज्ञानविमल प्रभु शासन भक्ता,
नी जिनने रंजजी ॥ बोधबीज शुद्ध वासन दृढता,
स विरह नवि कीजेंजी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ स्तवन लिख्यते ॥

(लाछलदे मात मल्हार.—ए देशी.)

मल्लिजिनेश्वर देव, सारे सुरनर सेव, आजहो जे-
गोरे महिमा महिमांहे गाजतोजी ॥ १ ॥ नील वरण

जस ठाय, पणवीश धनुषनी काय, आज हो आयुरे पंचावन वरस सहस्सनुंजी ॥ २ ॥ कुंज नरेसर तात, प्रभावती जस मात, आजहो दीठेरे आनंदित होये त्रिभुवन जनाजी ॥ ३ ॥ लंछन मीसी रह्यो कुंभ, तारक गुणथी अदंभ, आजहो एहवारे गुण वसीया आवी तेहमांजी ॥ ४॥ ज्ञानविमल गुण नूर, वाधे अति महपूर, आजहो पावरे मनोवांछित प्रभुना नामथीजी ॥ ५॥ इति ॥

॥ अथ त्रीजो जोडो लिख्यते ॥

॥ तिहां प्रथम चैत्यवंदन ॥

जयो जिनवर जयो जिनवर, जीयलोय जस पसर्यों ॥ दह दिसि घणो दूध सिंधवर फेण पुंडर, लोकिक देव तणो जिणे ॥ खय कीध पाखंड डंबर, अंबर मणि जिम झलहले ए ॥ दिन दिन अधिक प्रताप ज्ञानविमल प्रभु मल्लि जिन, ध्याने नासे पाप ॥ १ ॥ इति प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ अथ द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ बुद्धि थोडिय बुद्धि थोडिय जिनमुखें, एक म-

हिमा जस महिमंमले, जलधि जेम गुरु गुहिर गाजे॥
त्रिभुवनमां उपमानको, तुम्ह समान जे वस्तु गाजे॥
ज्ञानविमल गुण प्रनु तणा, नांखी शके कहो कोय॥
जाणे पण न कही शके, अक्षय ज्ञान जो होय॥२॥
इति द्वितीय चैत्यवंदन॥

॥ अथ तृतीय चैत्यवंदन ॥

मल्लि जिनवर मल्लि जिनवर, नविक सुखदाय॥
मिथिला नयरी ऊपना, कुंनराय कुल कमल हंसा॥
कुंन लंछन जगणीशमा, प्रनावती कूखे सर राजहंसा
॥ त्रण कल्याणक जेहना ए, जनम चरणनें नाण॥
मृगशिर शुदि एकादशीए, ज्ञानविमल गुण खाण॥
॥ ३ ॥ इति तृतीय चैत्यवंदन॥

॥ अथ थोयो जोमा बे ॥

॥ सुणो विनतमी मल्लिनाथजी, तुं मलियो मुगतिनो साथजी॥ मन मलीयुं तुजशुं निर्मलुं, ते कहीयें न होजो वेगलुं॥१॥ सित्तरी सो जिनवर वंदियें, नव संचित पाप निकंदीयें॥ त्रण काल नमुं धरी नेहशुं, नव नव मन बांध्युं जेहशुं॥२॥ जिहां पंच कल्याणक

जिनतणां, जिनराज सयलनां जिहां नएयां ॥ ते आ-गम अति उलट धरी, सुणियें सवि कपट निराकरी ॥ ॥ ३ ॥ समकितदृष्टि प्रतिपालिका, जिन शासननी रखवालिका ॥ जिन धर्मे नित्य दीपालिका, ज्ञानविमल महोदय मालिका ॥ ४ ॥ इति प्रथम थोय जोडो ॥

॥ अथ द्वितीय थोय जोडो ॥

॥ नमुं जिनवर मल्लि, जेहथी बोधी वली ॥ बहु विध गुण फेली, जाणीए जैन शैली ॥ लहो मुगति बहेली, भाजीयें कर्म पल्ली ॥ भव भेदन भली, दुर्गति द्वार खीली ॥ १ ॥ सवि जिनवर राजे, कर्मना मर्म भाजे ॥ नमे सुरनर राजे, तिर्थनी ऋद्धि गाजे ॥ सजल जलद गाजे, दुंदुभी तेम वाजे ॥ सवि भवि हितकाजे, चार निक्षेपे राजे ॥२॥ जिनवर वर वरणी, द्वादशांगी रचाणी ॥ गणि मति गुणखाणी, पुण्यपीयूष पाणी ॥ भवि श्रवणें सुहाणी, भावशुं चित्त आणी ॥ लही तिणे शिवराणी, सार करी एह जाणी ॥३॥ जस यक्ष कुबेर, सेव सारे सवेर ॥ करे दुश्मन जेर, न होय संसार फेर ॥ शिववधु तस हेरे, पुण्य संपत्ति पेरे ॥ लहे समकित सेरे,

ज्ञानविमलादि केरे ॥४॥ इति द्वितीय थोय जोडो ॥

॥ अथ स्तवन लिख्यते ॥

(शत्रुंजय रूषभ समोसर्या—ए देशी.)

मृगशिर शुदि एकादशी, दिने जायारे ॥ त्रिभुवन भयो रे उद्योत, सेवे सुर आया रे ॥ १ ॥ सुखीया थावर नारकी, शुभ गायारे ॥ पवन थया अनुकूल, सुखाला वायारे ॥ २ ॥ अनुक्रमे जोबन पामीया, सुणी आयारे ॥ पूरवना षट् मित्र, कही समजायारे ॥ ३ ॥ शुदि एकादशीने दिने, व्रत पायारे ॥ तिणें दिने केवलनाण, लहे जिनरायारे ॥ ४ ॥ ज्ञानविमल महिमा थकी, सुजस सवायारे ॥ मल्लि जिनेसर ध्याने, नवनिधि पायारे ॥ ५ ॥ इति स्तवन ॥

॥ अथ चोथो जोडो लिख्यते ॥

॥ तत्र प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ नमो मल्लि नमो मल्लिनाथ शिव साथ, हाथ दीये भव बूडता ए ॥ अपार भव जलधि मांहे, पाप ताप व्यापे नही ॥ एह जिन सुर वृंद गाजे, सकल

समीहित पूर्णो ॥ जगणीशमो जिनराज, ज्ञानविमल प्रभु नामथी, सिध्यां सघळां काज ॥ १ ॥ इति प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ अथ द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ नीलवाने नीलवान जेह जिनराज, पण वीश धनुष तनु दीपतो ॥ इन्द्रनील जिम रत्न सोहे ॥ त्रिगडे बेठा जिनवरु, कहे धर्म भवि चित्त मोहे ॥ ज्ञानविमल गुणथी थयो, लोकालोक प्रकाश ॥ मल्लि जिनवर प्रणमतां, पहोंचे मननी आश ॥ २ ॥ इति द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ अथ तृतीय चैत्यवंदन ॥

॥ गोत्र काश्यप वंश इक्ष्वाग, स्वान त्याग निर्दंभ जे ॥ कुंभ भूप कुळें जे कुमारी, मयण महाभड भंजी यो ॥ वय तरुणपणे निर्विकारी, सारी संयम सिरिवरी ॥ जगणीशमा जिन एह, मल्लिनाथ नामे थया ॥ ज्ञानविमल गुण गेह ॥ इति तृतीय चैत्यवंदन ॥

॥ अथ थायो जोडा बे ॥

॥ मल्लि जिनवरशुं प्रितडी, ते भेदरहित जुगति

जमी ॥ अलगो न रहुं एक घमी, जिम नाती पटोलामां पमी ॥ १ ॥ सवि जिनवरना गुण माल तणी, कंठे आरोपो नविक गुणी ॥ शिवसुंदरी वरवा होंश करो, तो श्री जिन आणा शिर धरो ॥ २ ॥ उपदेश अनुपम जलधरू, वरसे नित्य मल्लि जिनवरू ॥ बोधिबीज सुनिक होय अति घणो, ए महिमा श्री जिनराज तणो ॥ ३ ॥ शासन वछल जे नविकजना. जिनधर्मे जे छे एक मना ॥ तस सान्निध्य करजो सुरवरा. श्री ज्ञानविमल उद्योतकरा ॥ ४ ॥ इति प्रथम थोय जोमो ॥

॥ अथ द्वितीय थोय जोमो ॥

॥ कुंन नरेश्वर घर जिन जाया, मल्लि नामे जिनवर राया, नील वरण जस गाया ॥ प्रनावती छे जेहनी माया, पणवीश धनु माने छे काया, कुंन लंछन सुख दाया ॥ पूरव तपनी प्रगटी माया, स्त्री रूपे ए अचरिज थाया, सकल सुरासुरें गाया ॥ बालपणे सुखकार कहेवाया, इंद्र इंद्राणी सवि मलि आया, मेरु शिखरे नवराया ॥ १ ॥ चोवीशे जिन संप्रति काले, प्रणमतां सवि पातक गाले, नविजनने प्रतिपाले ॥ जेह

अनादि मिथ्यामत टाले, करतां समकित सुख सुगाले, नाठां डुष्कृत डुःकाले ॥ ग्रंथी भेद करी पंथ पखाले, आतम अनुभव शक्ति संभाले, पुण्य सरोवर पाले ॥ अनंत चोवीशी जिनवर माले, लोके चउ निक्षेप रसाले, प्रणमुं तेह त्रिकाले ॥ २ ॥ मति श्रुत अवधि ग्रहे त्रण नाण, सयमथी मन पज्जव नाण, जिहां छद्मस्थ मंम्हाण॥ पामे पंचम केवलनाण, जाणे उदयो अभिनव भाण, समवसरण गुण खाण ॥ तिहां तीर्थ आपे सुप्रमाण, अर्थ थकी भांखे प्रभु वाण, सरखी जोयण प्रमाण ॥ सूत्रे गुंथे गणधर जाण, नय निक्षेप गम भंग प्रमाण, समजे जे होय जाण ॥ ३ ॥ मल्लि जिनेश्वर महिमा पूरे, वैरोटचा सवि संकट चूरे, दिन दिन अधिक सनूरे॥ यक्ष कुबेर ते परता पूरे, जित तणां वली वाजे तूरे, नासे डुश्मन दूरे ॥ प्रगटे ज्ञानविमलनो नूर, जाणे उग्यो अनुभव सूर, तेज प्रताप पदूर ॥ हर्षित हेजें होय हजूर, महिमादीक गुण सवि मदभूर, श्री जिन ध्यान सनूर ॥ ४ ॥ इति द्वितीय थाय जोडो ॥

——✻✻✻——

॥ अथ. स्तवन लिख्यते ॥

(जावड समरा उद्धार.—ए देशी.)

॥ श्री मल्लि जिनसार, अम्वीश गणि गणधार ॥ सहस्स चालीश अणगार, पंचावन सहस साहुणी सार॥ ॥ १ ॥ एक लाख सहस्र चोराशी, श्रावक समकित-वासी ॥ त्रण लाख पांसठ सहस, श्राविका एह जगीश ॥२॥ पण वीश धनु तनु मान, अणपरण्या व्रत ध्यान॥ सहस्र पंचावन वरीस, आयु सकल गुण धरीश ॥ ३ ॥ कुबेर शासन देव, वैरोट्या करे सेव ॥ मास संलेषणा कीध, काउस्सग्गें थया सिद्ध ॥ ४ ॥ जे जिनवरने आ-राधे, ज्ञानविमल सुख साधे ॥ एणी परें देव वांदीजें, मानव भव फल लीजे ॥ ५ ॥ इति मल्लिजिन स्तवन॥

॥ इति चोथो जोडो संपूर्ण ॥

॥ अथ पंचम जोडो लिख्यते ॥

॥ तत्र प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ नमो नमि जिन नमो नमि जिन, मुगति दाता र ॥ सोवनवाने सोहतो, सकल लोक जस सेवा सारे ॥ सुमति सुगतिने आपतो, सकल कर्मना दोष वारे ॥

एकवीशमो जिन पूजीयें, जिम लहियें नव पार ॥
ज्ञानविमल सूरि एम नणे, एं प्रनु जगदाधार ॥ १ ॥
इति प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ अथ द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ गोत्र काश्यप गोत्र काश्यप, वंश इक्काग ॥ श्री नमि जिननो जाणीयें, सयल लोय आणंद कारण ॥ अवनीतलमां उपन्या, मानुं तेह सवि नविक तारण॥ कारण एहीज मुगतिनुं, श्री जिनवरनी सेव ॥ ज्ञानविमल प्रनुता घणी, आय मले स्वयमेव ॥२॥ इति ॥

॥ अथ तृतीय चैत्यवंदन ॥

॥ फुःख दोहग फुःख दोहग, जाय सवि दूर ॥ फुर्मति फुर्गति सुपनमां, तेह जननी पासें नावे ॥ जे श्री नमि जिननुं सदा, नाम ध्यान एकाग्र ध्यावे ॥ करुणा रसनो कूपलो, त्रिनुवननो आधार ॥ ज्ञानविमल प्रनु सेवतां, लहीये लील अपार ॥ ३ ॥ इति तृतीय चैत्यवंदन ॥

॥ अथ थोय जोडा बे ॥

॥ नमीनाथ निरंजन देवतणी, सेवा चाहुं हुं निशिदिन घणी ॥ जस लंबन नील कमल सोहे, एकवीशमा

जिनवर मन मोहे ॥१॥ दोढसो कल्याणिक जिनतणां, दश क्षेत्रें एह सोहामणां ॥ मृगशिर एकादशी ऊज-ळी, जिन सेवा पुण्यें आवी मळी ॥ २ ॥ एह अंग इग्यार आराधियें, ज्ञान भावें शिवसुख साधीयें ॥ आ-गम दिनकर विस्तरे, तो मोह तिमिरने अपहरे ॥ ३ ॥ समकितदृष्टि सुप्रभाविका, शासननी सान्निध्य कारिका ॥ कहे ज्ञानविमलसूरीसरू, जगमांहे होजो जयकरू ॥ ॥ ४ ॥ इति प्रथम थोय जोडो ॥

॥ अथ द्वितीय थोय जोडो ।

॥ श्री नमीनाथ निरंजन देवा, कीजे तेहनी सेवा-जी ॥ एह समान अवर नहिं दीसे, जिम मीठा बहु मेवाजी ॥ अहोनिश आतम मांहि वसीया, जिम गजनें मन रेवाजी ॥ आदर धरीने प्रभु तुम आणा, शिर धारुं नित्य सेवाजी ॥ १॥ चोत्रीश अतिशय पांत्रीश जाणो, वाणीना गुण गाजेजी ॥ आठ प्रातिहारज निरंतर, तेहने पासे विराजेजी ॥ जास विहारे दश दिशि केरा, ईति उपद्रव भाजेजी ॥ ते अरिहंत सकळ गुण भ-रिया, वांछित देइ निवाजेजी ॥ २ ॥ मिथ्या मत तत

दुष्ट भुजंगम, तेणे जे जन डशीयाजी ॥ आगमनागम ताप रीजाणो, तेहथी ते विष नसीयांजी ॥ श्री जिन वयण सुणवाने हेते, भवि मधुकर ले रसीयाजी ॥ भाव गंभीर अनुपम भांख्या, धन ते जस चित्त वसीयाजी ॥ ३ ॥ श्री नमी जिनवर शासन भासन, भ्रकुटी यक्ष जयकारीजी ॥ परता पूरे संकट चूरे, वरदाई गंधारीजी ॥ ज्ञानविमल प्रभु आणा धारे, कुमति कदाग्रह वारी-जी ॥ बोधिबीज वडबीज तणी परें, होजो मुज विस्ता-रीजी ॥ ४ ॥ इति द्वितीय थोय जोडो ॥

॥ अथ स्तवन लिख्यते ॥

(राग काफी.)

॥ नमिये श्री नमिनाथनेरे लाल, विजय नरेसर नंद मेरे प्यारे रे ॥ अपराजितथी आवीयोरे लाल, विजय भरें अरविंद मेरे प्यारे रे ॥ १ ॥ नमिये० ॥ मृगशिर शुदि एकादशी रे लाल, नक्षत्र अश्विनी सार मेरे प्यारेरे ॥ प्रथम प्रहर अट्ठम तपे रे लाल, बकुल तरुतलें सार मेरे प्यारे रे ॥ २ ॥ नमी० ॥ घातिकरम

द्राय केवली रे लाल, सत्तर गणधर जास मेरे प्यारे रे ॥ वीश सहस मुनि साध्वी रे लाल, सहस एकतालीश खास मेरे प्यारे रे ॥ ३ ॥ न० ॥ श्रावक एक लक्ष उपरें रे लाल, सत्तरी सहस्स उदार मेरे प्यारे रे ॥ त्रण लाख वर श्राविका रे लाल, अमृतालीश हजार मेरे प्यारे रे ॥ ४ ॥ न० ॥ पन्नर धनुष तनु जेहनुं रे लाल, दश सहस वरसनुं आय ॥ मे० ॥ नील कमल लंछन नमुं रे लाल, समेत गिरि सिद्ध थाय ॥ मे० ॥ ॥ ५ ॥ न० ॥ एकवीशमो जिन जाणीयें रे लाल, प्रणमतां पातक जाय ॥मे०॥ ज्ञानविमल प्रभु सान्निधि रे लाल, नामे नवनिधि थाय ॥ मे० ॥६॥ न० ॥ इति नमिजिन स्तवनं ॥ इति पांचमो जोडो समाप्त ॥

॥ हवे ए देववंदननो पाछलनो विधि कहे छे ॥

दिवसे मध्यान्ह समये काउस्सग्ग अगीआर लोगस्सनो करीये. पछी बेसीने अग्यार नवकार गणीये ॥

॥ इति श्री ज्ञानविमलसूरि कृत मौनएकादशीना देववंदन संपूर्ण ॥

॥ अथ श्री दानविजयजी कृत मौनएकादशीना देववंदन लिख्यते ॥

॥ तत्र प्रथम जोडानां त्रण चैत्यवंदन ॥

॥ सकल नयर शिणगार हार, गजपुर वर नयर ॥ राय सुदर्शन तास नारी, देवि जस अपछर ॥ तस कूखे अवतार लीध, त्रिहुं भवन वंदिता ॥ कुमरपणे एकवीश सहस, सुखे वरस व्यतीता ॥ तेतां वरस मंडलीकपणुं ए, पाले अखंडित आण ॥ ते अरजिनवर नामथी, दान लहे कल्याण ॥ १ ॥ इति प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ अथ द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ चउराशी लख रथ तुरंग, गजराज उदार ॥ पायक छन्नु कोडि, भूप बत्रीश हजार ॥ चोशठ सहस अंतेउरी, पुर गाम अपार ॥ चउद रतन नवनिधि सहित, बहु ऋद्धि विस्तार ॥ एम चक्रीपणुं भोगवी ए, बरस सहस एकवीश ॥ सुमति दान दायक सदा, ते अरजिन जगदीश ॥ २ ॥ इति द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ अथ तृतीय चैत्यवंदन ॥

॥ आप ज्ञानथी अनुभवी, निज दिक्षा काल ॥

नगरादिक सवि परिहरी, परिग्रह जंजाल ॥ एक सहस वर पुरुष साथे, करी बहु अति मान ॥ मृगशिर शुदि एकादशी, अश्विनी अभिराम ॥ लोच करी व्रत आदरे ए, चार जाम जस धर्म ॥ ते अर जिनवर मुज दीयो, दान सदाशिव शर्म ॥ ३ ॥ इति तृतीय चैत्यवंदन ॥

॥ अथ थोयो जोमा बे ॥

॥ श्री अर जिनवर गुण मणि मंदिर, सुंदर वदन सरुपजी ॥ राय सुदर्शन नाग्रवंश प्रभाकर, कर पंकज अनुरूपजी ॥ नव निधि चउद रतन प्रमुख सवि, गोमी ऋद्धि अनूपजी ॥ मृगशिर शुदि एकादशी दिवसे, आप थया मुनिरूपजी ॥ १ ॥ भोग्य करम त्रूटे निज ज्ञाने, निज व्रत काल विभावेजी ॥ नव लोकांतिक देव प्रभुने, दिक्षा समय जणावेजी ॥ दान संवत्सरी दे तव जाम, सहुना दारिद्र समावेजी ॥ आदरे व्रत इण विधि ते जिनवर, हुं वंडुं मन भावेजी ॥ २ ॥ सिद्ध नमी सामायक उच्चरे, राग रोष मद वारेजी ॥ मनः पर्यव तव नाण उपजे, मनुज लोक विस्तारेजी ॥ जबलग रहे छद्मस्थपणे प्रभु, तप किरिया व्रत चारी-

जी ॥ जिन स्वरूप जिहां इणविधि भाख्युं, ते आगम सुखकारीजी ॥ ३ ॥ व्यंतर भवनपति ने जोइष, वैमानिक सुररायजी ॥ दिक्षा उत्सव एम करी जिननो, पुण्य भंभार भरायजी ॥ नंदीश्वर करी यात्रा अनुपम, सुरलोके जायजी ॥ ते देवा सेवा करे जिननी, दान सदा सुखदायजी ॥ ४ ॥ इति प्रथम थोय जोमो ॥

॥ अथ द्वितीय थोय जोमो ॥

॥ अरजिन सुखकारी, सातमो चक्रधारी ॥ मद मदन विदारी, मान मातंगवारी ॥ अशुभ तम निकारी, उष्ट कर्मारि हारी ॥ व्रत विपिन विहारी, पुण्य विस्तारकारी ॥ १ ॥ जस यश जगे गाजे, मोहना जोर भांजे ॥ सुरनर मुनिराजे, जे थुण्या बहु दिवाजे ॥ सुगति सुख निवाजे, विश्वना रूप गाजे ॥ जिन तह शुभ साजे, वंदीयें मोक्ष काजे ॥ २ ॥ नवल नय तरंगा, सप्त भंग प्रसंगा, कृत परमत भंगा, सर्वथा जे अभंगा ॥ विमल दश डुष्यंगा, पाप संताप गंगा ॥ भविक जन सुणि चंगा, जैन वाणी सुरंगा ॥ ३ ॥ जिन चरणनी सेवी, सर्व संसार खेवो ॥ मन महिर वहेवी, विघ्नवाभी द-

हेवी॥ बहु भक्ति धरेवी, संघ रक्षा करेवी॥ सक्तीधरणी देवी, दान संसिद्धि लेवी॥४॥ इति द्वितीय थोय जोडो॥

॥ अथ स्तवन लिख्यते ॥

(श्री अजित जिनेसर राया–ए देशी.)

श्री अरजिनवर जगदीश, भवियण ध्याउरे॥ मन भाव धरी निशि दिश॥ भवि०॥ जिम पहोंचे सकल जगीश॥ भवि०॥ ए आंकणी॥ हस्तिनागपुरनो धणीरे, राय सुदर्शननंद॥ देवी सुदर्शन नंदन वंदतारे, भाजे भावठ दंड॥ भवि०॥ १॥ कंचनवर्ण तनु सोहतोरे, रूप कला गुणवंत॥ चक्रवर्तिनी संपदारे, पामे प्रभु जयवंत॥ भवि०॥ २॥ भरतक्षेत्र षट् खंडमांरे, आण अखंडित जास॥ चोसठ सहस अंतेउरीरे, भोगवे भोगविलास॥ भवि०॥ ३॥ मृगशिर शुदि एकादशीरे, उज्ज्वल पक्ष उदार॥ सहस पुरुष साथे प्रभुरे, आदरे संयमभार॥ भवि०॥४॥ सुरनर असुर मिलि तिहांरे, उत्सव करे सुविवेक॥ सुरभि नीर फल फूलनीरे, वसुधा वृष्टि अनेक॥ भवि०॥ ५॥ देवतणां वाजे घणांरे, [illegible] आकाश॥ नाचे नव नव छंदशुंरे,

नारी नवल विलास ॥ भवि० ॥ ६॥ दिक्षा कल्याणक इम्युंरे, आराधे नर जेह ॥ दान सकल सुख संपदारे, पामे पुण्ये तेह ॥ भवियण ध्यानरे ॥ ७ ॥

इति प्रथम जोडो संपूर्ण ॥

॥ अथ द्वितीय जोडो ॥

॥ तत्र प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ सुख कारण जिन जननी, कूखें ज्यारे अवतरीयो ॥ त्यारे शुभ सूचक उदार, चित्त डोहलो धरियो ॥ पंचवरण वर सुरभि गंध, अमला ने अमूल ॥ शय्या विरचुं सुघट घाट, लेइ मालती फूल ॥ ते माटे जनम्या पछी ए, दीयुं मल्लि अभिधान ॥ ते जिन समरणथी सदा, लहे परम सुखदान ॥१॥ इति प्रथम चैत्यवंदन॥

॥ अथ द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ जिम शशि उदित सकल, लोक अंधार पलाय॥ घन वर्षते जिम भूमि, नवपल्लव थाय ॥ प्रगट्यो जिन जनमंत, तिम सघले परकाश ॥ पसर्यो जग जन चित्तमांहि, तिम हरष उल्लास ॥ मृगशिर शुदि एकादशी

ए, जनम्या मल्लि जिणंद ॥ ते जिन पाय पसायथी, दान लहे आणंद ॥ २ ॥ इति द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ अथ तृतीय चैत्यवंदन ॥

॥ अद्भूत देह सरूपहे, गुण गेह विराजे ॥ लाजे जस मुख देखी चंद, मृग नयणे लाजे ॥ नीलकवान सोभागवान, उपमान न अवर ॥ बालपणाथी अधिक तेज, जाणे नव दिनकर ॥ पीत प्रमुख बहु लोकने ए, अंतर घन विश्राम ॥ ते मल्लि जिन देखतां, दान मरे सवि काम ॥ ३ ॥ इति तृतीय चैत्यवंदन ॥

॥ अथ थोयो जोडा बे ॥

॥ मिथिला नयरी वर विस्तार, कुंभराय तिहां बहु अधिकार, राणी प्रभावती सार ॥ जब तस कूखे लह्यो अवतार, चौद सुपन देखी तिणि वार, पामे परम करार ॥ मृगशिर मास शुकल पक्ष तार, तिथि एकादशी ने शुभ वार, मध्य रात्रे निरधार ॥ मल्लि जिन जनम्या जगदाधार, तव सघले थयो हरख अपार, वरत्यो जय जयकार ॥ १ ॥ इंद्रना जब सिंहासन हाले, तब सुरपति निज ज्ञान संभाले, जिनवर जन्म निहाले ॥

घंट सुघोषा तव संचाले, सुर सवे बेशी विमान विशाले, सुरगिरि उपर चाले ॥ तिहां जिन आणी भाव रसाले, तीर्थउदकशुं अंग पखाले, निज सवि पातक टाले॥ चउवीशे जिननो निशि काले, इम उत्सव कीधो सुरपाले, ते जिन भव अजुआले ॥ २ ॥ जिन जन्महोत्सव अवसर जाणी, आवे सुरपति उलट आणी, भाव भगति सह नाणी ॥ आठ जाति करी कलश विनाणी, सुरभि भर्या वर तीरथ पाणी, पुष्पादिक बहु आणी ॥ अच्युतेंद्र आदि गुणखाणी, तिम अंते सोहम वज्र पाणी, स्नात्र करे शुभ नाणी ॥ एहवी विधि जेहमांहि वखाणी, ते आगम निसुणो भवि प्राणी, जिम लहो शिवपटराणी ॥ ३ ॥ वीणा ताल मृदंग बजावे, कोइ सुर सुंदरी नृत्य बनावे, गीत सरस कोइ गावे ॥ भक्ति राग मनमांहि जगावे॥ जिन मुखशुं निज नयन लगावे, निज भव पाप भगावे ॥ इम जन्मोत्सव करी मनभावे, सवि सुरपति निज स्थानक आवे, मन परमानंद पावे॥ ते चउविह देवा सदभावे, सकल संघने कुशल वधावे, दान सकल दुःख जावे ॥४॥ इति प्रथम थोय जोडो॥

॥ अथ द्वितीय थोय जोडो ॥

॥ मल्लि जिन अद्भूत तनु सुंदर, जन्म्या जेणि वेला जी ॥ छप्पन दिशीकुमरी तव आवे, गावे जिन-गुण हेलांजी ॥ जिन जिनजननीना पद प्रणमी, सूति-करम करे भेलांजी ॥ निज स्थानक जइ हरख धरंती, सवि परिवार समेताजी ॥ १ ॥ देहरूप मलरहित सुगंधी, नहिं प्रस्वेद विकारजी ॥ नवि छद्मस्थ निहाले कोइ, आहारने निहारजी ॥ रुधिर मांस उज्ज्वल अभिनं-दित, श्वास कमल अनुकारजी ॥ जन्म थकी जस ए चउ अतिशय, ते जिन वंडुं उदारजी ॥ २ ॥ मति श्रुत अवधि नाण गुण खाणी, जाणे बहु जग भाव जी ॥ तोहि पण प्रभु बालकनी परें, राखे बाल स्वभाव जी ॥ निज अगुंठे अमृत पीवे, नहि खेलादि विभाव जी ॥ इम कही बालदशा जिनजीनी, आगम तेह अपाव जी ॥ ३ ॥ कंडुक प्रमुख रयणमय विरची, केली करे बहु भ्रांति जी ॥ बालरूप करी भक्तिराग धरी, जे रमे जिन संघात जी ॥ समकितधारी पर उपगारी, वरते गुण पक्षपातजी ॥ देजो संधने ते सुर मंगल, दान

सकल डुःख घातजी ॥४॥ इति द्वितीय थोय जोडो ॥

॥ अथ स्तवन लिख्यते ॥

(मात लाछलदे नंद.–ए देशी)

॥मिथिला नयरी मझार, कुंजराय घर बार, आज हो गाजेरे दीवाजे, उच्छव अजिनवारे ॥ १ ॥ शुदि मृगशिर शुन्न वार, एकादशी सुखकार, आज हो मल्लि- जिनरे जन्म्या, राणी प्रन्नावतीरे ॥ २ ॥ नूमि लहे उल्लास, सघले थयो प्रकाश, आज हो गाजेरे आवाजे, देवनी डुंडुहीरे ॥ ३ ॥ घर घर चंदन माल, बांधी झाक झमाल, आज हो दीजेरे हाथा, कुंकुम रोलनारे ॥ ४ ॥ दीजे याचक दान, कीजे बहु सनमान, आज हो आवेरे सजुनां, सबल वधामणां रे ॥ ५ ॥ वाजे मादल ताल, नाचे नवली बाल, आज हो गावेरे धवल मंगल, कुल कामिनी रे ॥ ६ ॥ सगा सज्जन संतोष, थयो हरखनो पोष, आज हो जगमां रे राज्य, एक आनंदनुंरे ॥७॥ जन्मोत्सव अधिकार, इम कीधो विस्तार, आज हो पाम्यारे सुर नरपति, तिहां सुख घणां रे ॥८॥ जन्म कल्याणक एह, आराधे बहु नेह, आज

हो ते नर रे दान; मंगलमाला लहेरे ॥ ए ॥ इति मल्लि जिन स्तवनं ॥ इति बीजो जोडो समाप्त ॥

॥ अथ त्रीजो जोडो ॥

॥ तत्र प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ मेरुतणी परे धीर वीर, न ऋद्धि गंभीरा ॥ चंद्र तणी परे सौम्य तेज, झलके जिम हीरा ॥ राग रोष मन नहीं लिगार, नहीं विषय विकार ॥ शांति कांति रति मति प्रमुख, गुण जलधि अपार ॥ दिन दिन वान वधे बहु ए, जिम कंचन पर भाग ॥ ते भगवंतनी भक्तिथी, दान थयो महाभाग ॥१॥ इति प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ अथ द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ रहे अहो निशि सुख मगन, नहीं रोग वियोग ॥ वेदोदय विण भोगवे, प्रभु भोग अशोग ॥ आया निर्जरे पूर्व कर्म, नव बंधन आणे ॥ गृहवासे रहे शत वर्ष, चोथे गुणठाणे ॥ क्षय कषाय द्वादश करीए, लहे छठुं गुणठाण ॥ मल्लिनाथजिन तेहना, दान करे गुणगान ॥२॥ इति द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ अथ तृतीय चैत्यवंदन ॥

॥ अभ्यंतर परिषद अनुप; त्रणशें नृप कन्या ॥ तिम त्रणशें नृप पुत्रबाह्य, परिषदमां धन्या ॥ मृगशिर शुदि एकादशी, ग्रहे दिक्षा न्नावे ॥ देवदुष्य तब इंद्र एक, जिन खंधे ठावे ॥ उग्रविहार तप प्रज्ञु करे ए, समता रस ज्नरपूर ॥ मल्लिनाथ ते मन धरतां, दान गयां दुःख दूर ॥३ ॥ इति तृतीय चैत्यवंदन ॥

॥ अथ थोयो जोडा बे ॥

॥ प्रज्ञु मल्लि जिनसर, आदरे दिक्षा जाम ॥ चउविह सुर आवी, उत्सव करे अन्निराम ॥ मणिरयण कंचननी, वृष्टि करे उद्दाम ॥ न्नविजन ते जिनना, मन राखो गुणग्राम ॥ १ ॥ व्रत लेइ वरते, अप्रतिबद्ध विहार ॥ सम तृण मणि जीवित, मरण अमम अविकार ॥ धरी विविध अन्निग्रह, इंद्रिय निग्रह कार ॥ ते जिन चोवीशे, वंडुं वारंवार ॥ २ ॥ प्रज्ञु हस्तयुगलमां, सागर सर्वे समाय ॥ शिखा उपरें वाधे, बिंडु पात नवि थाय ॥ ठद्मस्थ जिणंदनी, इम जिहां लब्धि कहाय ॥ ते आगम सुणतां, संशय सकल पलाय ॥३॥ विहरंता

जिनने, उपसर्ग उपजे जाम ॥ जाणी इंद्रादिक, आवी निवारे ताम ॥ जिन सेवा ततपर, जे देवा गुण धाम॥ पूरो श्री संघने, दान सकल सुख ठाम ॥ ४॥ इति ॥

॥ अथ द्वितीय थोय जोमो ॥

॥ भुवन नंदन जिननी, नीलवरण जस देह ॥ प्रभावती नंदन, मंगल तरुवन मेह ॥ मृगशिर शुदि केरी, एकादशी दिन एह ॥ थया भाव चरण धरी, ठंडीप-रिकर गेह ॥१॥ अहो दान घोषणा, सुर डुंडुभि वा-जंत ॥ निवडे वसुधारा, जल सुगंध वरषंत ॥ फूल वृष्टि करे सुर, ए पंच दिव्य हवंत ॥ जस पारण ठामे, ते वंदु अरिहंत ॥२॥ सामायिक आदि, चारित्र पंच प्र-माण ॥ ते मांहि पहिलुं, चोथुं पंचम जाण॥ जिनने ए होये, क्रम चढत गुणठाण॥ ए कह्यो जिहां विधि, ते वंदुं सुयनाण ॥३॥ छद्मस्थपणे जिन, विचरे महियलमांहि॥ इंद्रादिक आवे, भक्तिवंत उछाहि ॥ प्रभु उन्नति काजे, बहु पूजा करे त्यांहि ॥ ते सुर सान्निध्यथी, दान सु-मति अवगाहि ॥ ४ ॥ इति द्वितीय थोय जोडो ॥



॥ अथ स्तवन लिख्यते ॥

(प्रभु पासनुं मुखडुं जोतां.—ए देशी.)

॥ वनमां मोहनघर एक, षट् बार करे सुविवेक ॥ कंचनमय पूतली सार, करे रंगाने अनुकार ॥१॥ एक कवल मांहे नांखे, तेह कमले ढांकी राखे ॥ पडिबोधि आदि महाभाग, छए मित्र धरी अनुराग ॥२॥ आव्या ते परणवा काजे, मिथिला विंटी निज साजे ॥ प्रभु ते घरमांहि तेडावे, हरख्या ते सघला आवे ॥३॥ उघाडे कवल जिणि वार, पसर्यो डुरगंध अपार ॥ नृप चिंते मनुजनो देह, अहो एम अशुचिना गेह ॥ ४ ॥ धिग् धिग् धिगूहो ए संसार, कुणनो पुरुष कुणनी नार ॥ वैराग्यरसें मन भीनो, वाध्यो संवेग मन लीनो ॥ ५ ॥ देइ दान संवत्सरी सार ॥ छए मित्रतणो परिवार ॥ उज्ज्वल पक्ष मृगशिर मास, एकादशी व्रत ग्रहे खास ॥६॥ मल्लिजिननुं व्रत कल्याण, करतां थाये कोडि कल्याण ॥ तेह मल्लिनाथ अभिधान, जपतां लहे बहु सुख दान ॥७॥ इति श्री मल्लिजिन दिक्षाकल्याणक स्तवन ॥

॥ इति त्रीजो जोडो ॥

॥ अथ चोथो जोडो ॥

॥ तत्र प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ चउनाणी थइ शुक्लध्यान, मुनिराज अन्यासें ॥ अधिक अधिक तिम आप तेज, क्षण क्षण प्रकाशे ॥ पाणि पडिग्गह लब्धि चित्त, दुःकर व्रत धार ॥ दुर्द्धर सिंहपरें अनेक, परिसह सहनार ॥ इणविध दिक्षाने दिने ए, प्रगट्युं केवलज्ञान ॥ ते अरिहंत प्रणामथी, लहिये समकित दान ॥ १ ॥ इति प्रथम चैत्यवंदन॥

॥ अथ द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ चढी क्षपकश्रेणी अपूर्व, उत्साह धरीने ॥ लहे गुणठाणुं बारमुं, संजलण हरीने ॥ नाण दंसणावरण कर्म, अंतराय उछेदी ॥ गुणठाणुं लही तेरमुं, प्रभु थया अवेदी ॥ लोकालोक प्रकाशतो ए, दर्शन अनंत ॥ भावतीर्थंकर तव थया, दान दया कर संत ॥२॥ इति द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ अथ तृतीय चैत्यवंदन ॥

॥ भव्यजीव वर कमल खंद, प्रतिबोध वधारे ॥ नाण किरण विस्तार सार, तम पम्ल निवारे ॥ सुरनर

मुनिपति सेवमान, बहु लोक सुखकर ॥ दिन दिन अभिनव उदयवंत, मल्लि जिन दिनकर ॥ नाण लह्युं एकादशी ए, उज्ज्वल मृगशिर मास ॥ ते जिनराज प्रसादथी, दान लहे उल्लास ॥ ३ ॥ इति तृतीय चैत्यवंदन ॥

॥ अथ थोयो जोडा बे ॥

॥ वर शुक्लध्यानना, भाग दोय जब ध्यात ॥ करी करण अपूरव, तब टाले घन घात ॥ पामे प्रभु केवल, दरिसण ज्ञान विख्यात ॥ मल्लि जिन जाणे, सर्व भाव साक्षात ॥ १ ॥ छत्र त्रय चामर, तरु अशोक सुखकार ॥ दिव्य ध्वनि दुंदुभि, भामंम्डल झलकार ॥ सुर कुसुम वृष्टि वर, भद्रासन अति सार ॥ एह प्रातिहार्य जस, ते जिन वंदुं उदार ॥ २ ॥ वर केवलनाणे, जाणे सयल पयत्थ ॥ भांखे शुभ वचन ते, श्री जिनपति तिहां अत्थ ॥ विरचे सूत्र रूपे, गणधर तेह समत्थ ॥ जगमांहि तेहिज, आगम एक समत्थ ॥ ३ ॥ श्री मल्लि जिनेश्वर, सेवा करे गुण धाम ॥ जिन शासन देवी, वैरुट्या इति नाम ॥ गुण रागे रंजित, सप्तधातु अभिराम ॥ तेह दान पसाये, राखजो श्री संघ नाम ॥ ४ ॥ इति प्रथम थोय जोडो ॥

॥ अथ द्वितीय थोय जोडो ॥

॥ समवसरण सिंहासन बेठा, नीलवरण जस कायाजी ॥ मानुं मेरुशिखर शिर उपर, ए नव जलद सुहायाजी ॥ भवि चातकने जस दर्शनथी, पाप संताप पलायाजी ॥ मल्लि जिनेसर महिमा मंदिर, भवि प्रणमो तस पायाजी ॥ १ ॥ एकादश जस अतिशय प्रगटे, कर्म कलंक उछेदेजी ॥ तिम उगणीश करे शुभ अतिशय, सुर समुदाय अखेदेजी ॥ जन्मातिशय चउर संयुत ए, अतिशय चोत्रीश भेदेजी ॥ तेहशुं जेह विराजे जिनवर, प्रणमुं तेह उमेदेजी ॥ २ ॥ चउमुख रूप जिन उपदेशे, चार प्रकारे धर्मजी ॥ तेहमांहि जीवा जीवादिक, सूक्ष्म छे बहु मर्मजी ॥ शीतल तर चंदन अनुकार, वारे तव दुःख घर्मजी ॥ ते जिन वाणी भवि प्राणीनां, टाले सकल कुकर्मजी ॥ ॥ ३ ॥ शुदि मृगशिर एकादशी उपन्युं, मल्लि जिनने नाणजी ॥ प्रभु पासे रहे अहोनिशि तनुथी, सुरवर कोडी प्रमाणजी ॥ शांति समाधि वैय्यावच्चकारक, समरण योग्य सुजाणजी ॥ दान शिवं‌ ‌र ‌े ‌ुर करजो, श्री

संघ नित्य कल्याणजी ॥४॥ इति द्वितीय थोय जोमो ॥

॥ अथ स्तवन लिख्यते ॥

(यादवराय जइ रह्यो.–ए देशी)

सकल सुहंकर सेवियेरे, मल्लिजिणंद मयाल ॥ चित्त अंतर आराधतांरे, थाय दुःख विसराल ॥ १ ॥ भविक जन वंदो जिनवर एह ॥ एतो भवदुःखनो करे छेह ॥ भवि० ॥ ए आंकणी ॥ उज्ज्वल मागशिर मासनीरे, तिथि एकादशी सार ॥ पश्चिम भागे दिवसनेरे, अश्विनी योग उदार ॥ भवि० ॥ २ ॥ तिणे दिन प्रभुने उपन्युंरे, केवलनाण पसन्न ॥ काल भाव द्रव्य क्षेत्रथीरे, जाणे अनंत पयन्न ॥ भवि० ॥ ३ ॥ जिम वादल फाटे थकेरे, पसरे रवि परकाश ॥ तिम केवलरुचि फलहलेरे, थाते आवरण नाश ॥ भवि० ॥४॥ निज तनु वाने जीपतोरे, इंद्र नील मणि सार ॥ कुंभ लंछन कुंभनी परेरे, उतारे भव पार ॥ भवि० ॥ ५ ॥ वरस पंचावन सहस्सनुंरे, समुदित जेहनुं आय ॥ ऊणुं शत वर्ष करी रे, तेह केवलीपर्याय ॥ भवि० ॥६॥ ज्ञान कल्याणक जिनतणुं रे, आराधे मति मान ॥ तस प्रभु दान पसायथी रे, वाधे दिन दिन वान ॥ भवि० ॥७॥ इति॥

॥ अथ पंचम जोडो ॥

॥ तत्र प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ सकल समीहित सुखकरण, सुर तरू उपमान ॥ तरुण तरणी परे तेजवंत, जग तिलक समान ॥ भक्ति धरी सुर सुंदरी, करे जस गुण गान ॥ ध्याये सुर नर असुर नाथ, जस शुभ अभिधान ॥ शुदि मागशिर एकादशी ए, पाम्युं ज्ञान अनंत ॥ दान सुहंकर एम वदे, ते नमि जिन जयवंत ॥ इति प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ अथ द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ मूल प्रकृतिमां एक बंध, चउ सत्ता उदयें ॥ एक बंध उत्तर प्रकृति, तिम बेंतालीश उदये ॥ सत्ता पंचाशी विचार, जेहवी वली ठार ॥ मन वच काया जोग जास, अविचल अधिकार ॥ तेरमा गुणठाणा तणो ए, धरे दशा एम जेह ॥ ते नमि जिन एकवीशमो, दान दया गुण गेह ॥ २ ॥ इति द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ अथ तृतीय चैत्यवंदन ॥

॥ पुरुषोत्तम परमेष्टि रूप, परमातम योगी ॥ परमानंद प्रकाशवान, अक्षय उपयोगी ॥ निज अनंत पर्याय

युत, सवि जाणे प्राप्य ॥ काल- त्रितयवेदी जिणंद, लहे भव्या भव्य ॥ केवलज्ञानने दरिसन ए, जलहलें अंतर तेज ॥ ते श्री नमि जिनराजने, दान नमे धरी हेज ॥ ३ ॥ इति तृतीय चैत्यवंदन ॥

॥ अथ थोयो जोडा बे ॥

॥ सकल गुण निधानं, शांत मुद्रा प्रधानं ॥ शिव सुगति निदानं, भर्हिता भंग मानं ॥ सुर कृत गुणगानं, विश्व विख्यात दानं ॥ भज नमि अभिधानं, श्री जिनं सावधानं ॥ १ ॥ नमित सुर नरिंदा, दीप्त तेजे दिणंदा ॥ शमित सकल कंदा, दग्ध संसार कंदा ॥ वदन विजित चंदा, प्रीति आणी अमंदा ॥ भविकजन जिणंदा, वंदिये ते अफंदा ॥ २ ॥ मदन अगनि पाणी, पाप वेली कृपाणी ॥ उपशम गुण खाणी, इंद्र चंडे वखाणी ॥ त्रुवन जन गुराणी, भव्य जीवे घराणी ॥ त्रिभु- वनपति वाणी, सांभलो भाव आणी ॥३॥ कर कमल धरंती, केलि लीला करंती ॥ जिनपद समरंती, संघ विघ्नो हरंती ॥ समकित गुणवंती, भारती सौम्यकांति ॥ शुभ मति विलसंती, दान दिक्षा जयंती ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ द्वितीय थोय जोडो ॥

॥ श्री नमि जिनवर भुवन दिणंद, विजयराज कुळ जळनिधि चंद, वप्रा राणी नंद ॥ सुरपति पूजित पद अरविंद, मन मदन मातंग मयंद, माया वेळी गयंद ॥ मन वच काया जास अफंद, क्रोधादिक अरि कीधा मंद, छेदित कुमति दंद ॥ शुदि मृगशिर मासे सुखकंद, एकादशी दिवसे आणंद, केवळ पाम्युं अमंद ॥ १ ॥ जिन केवळ ऊपजे जिणे ठाय, टाळे रेणुं विकूर्वी वाय, नीर कुसुमवृष्टि थाय ॥ रयण कंचनने रजत सुहाय, प्राकार त्रण रचे सुखदाय, तिहां मणि पीठ ठराय ॥ ते विंचे वृक्ष अशोकनी छाय, सोवन सिंहासन मंडाय, तिहां बेसे जिनराय ॥ शिर ऊपरे त्रण छत्र धराय, चिहुं पखे सुर चामर विंजाय, प्रणमुं तेहना पाय ॥ २ ॥ सिंहासन बेसी जिनभाण, भांखे वाणी अमृत समान, स्यादवाद मंडाण ॥ श्री जिनवर ते पोत सुखाण, जिहां बहु नय निक्षेप प्रमाण, हेतु भंग गम ठाण ॥ जिहां निश्चय व्यवहार वखाण, पसरे जोयण भूमि प्रमाण, गुण पांत्रीश निदाण ॥ निज निज भाषा रूपे जाण, सहुने परिणमे

घन उवमाण, सांजळो तेह सयाण ॥ ३ ॥ जिन पद-कज मधुकर अनुकार, जे मुनि पंचमहाव्रत धार, साधवी गुण जंमार ॥ श्रावक जे पाळे व्रत बार, श्राविकानो एहज आचार, संघ चतुर्विध सार ॥ तेहनी रक्षाना करनार, जे देवा छे चतुर प्रकार, जेहनी शक्ति अपार ॥ ते हरजो डुःखनो विस्तार, करजो सकळ विघ्न संहार, दान सदा जयकार ॥ ४ ॥ इति द्वितीय थोय जोमो ॥

॥ अथ स्तवन लिख्यते ॥

जवडुःख वारण शिवसुख कारण, श्री नमिनाथ जिणंदा ॥ प्रणमो जवि जावे जिम थावे, सकळ कुशल आणंदा ॥ श्री नमि० ॥ १ ॥ सुरपुरी सुंदर मिथिला नयरी, राय विजय तिहां सोहे ॥ वप्रा राणी तस पटराणी, रूपे सुरनर मोहे ॥ श्री० ॥ २ ॥ तस सुत मति श्रुत अवधिनाणयुत, काया कंचनवान ॥ आण अखंमित वरते जेहनी, परगट पुण्य निधान ॥ श्री० ॥ ३ ॥ व्रत लेइ विधिसहित आराधे, करे सकळ मळ हाण ॥ मागशिर शुदि एकादशी दिवसे, पाम्या केवळनाण ॥ ॥ श्री० ॥ ४ ॥ सपरिवार चोसठ सुरपति तिहां, समव-

सरण तव विरचे ॥ कंचन रजत रयण गढ करीने, त्रिजुवनपति पद अरचे ॥ श्री० ॥५॥ कोमाकोमी सुरनर तिहां मळीया, ढुंडुभि देव वजावे ॥ जिननी ऋद्धि अनुपम निरखी, मन परमानंद पावे ॥ श्री० ॥ ६ ॥ ज्ञान कल्याणक इणि परें करतां, जव जव संकट जाजे ॥ ते नमि जिनवर प्रणमो प्रेमे, दान सकल सुखकाजे ॥ श्री नमिनाथ जिणंदा ॥ ७ ॥ इति नमिनाथ स्तवनं ॥

॥ इति श्री दानविजयजी कृत मौनएकादशीना देववंदनं समाप्तम् ॥

॥ अथ श्री मौनएकादशीनुं दोढशो कल्याणिकनुं गणणुं प्रारंजः ॥

१ जंबुद्वीपे जरते अतीत चोवीशी.

४ श्री महायशः सर्वज्ञाय नमः ॥
६ श्री सर्वानुजूति अर्हते नमः ॥
६ श्री सर्वानुजूति नाथाय नमः ॥
६ श्री सर्वानुजूति सर्वज्ञाय नमः ॥
७ श्री श्रीधर नाथाय नमः ॥

२ जंबुद्वीपे भरते वर्त्तमान चोवीशी.

२१ श्री नमिनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥
१९ श्री मल्लिनाथ अर्हते नमः ॥
१९ श्री मल्लिनाथ नाथाय नमः ॥
१९ श्री मल्लिनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥
१८ श्री अरनाथ नाथाय नमः ॥

३ जंबुद्वीपे भरते अनागत चोवीशी.

४ श्री स्वयंप्रभ सर्वज्ञाय नमः ॥
६ श्री देवश्रुत अर्हते नमः ॥
६ श्री देवश्रुत नाथाय नमः ॥
६ श्री देवश्रुत सर्वज्ञाय नमः ॥
७ श्री उदयनाथ नाथाय नमः ॥

४ धातकीखंडे पूर्वभरते अतीत चोवीशी.

४ श्री अकलंक सर्वज्ञाय नमः ॥
६ श्री शुभंकरनाथ अर्हते नमः ॥
६ श्री शुभंकरनाथ नाथाय नमः ॥
६ श्री शुभंकरनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥
७ श्री सप्तनाथ नाथाय नमः ॥

५ घातकीखंडे पूर्वभरते वर्त्तमान चोवीशी.

२१ श्री ब्रह्मेंडनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥
१९ श्री गुणनाथ अर्हते नमः ॥
१९ श्री गुणनाथ नाथाय नमः ॥
१९ श्री गुणनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥
१८ श्री गांगिकनाथ नाथाय नमः ॥

६ घातकीखंडे पूर्वभरते अनागत चोवीशी.

४ श्री सांप्रत सर्वज्ञाय नमः ॥
६ श्री मुनिनाथ अर्हते नमः ॥
६ श्री मुनिनाथ नाथाय नमः ॥
६ श्री मुनिनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥
७ श्री विशिष्टनाथ नाथाय नमः ॥

७ पुष्करवरद्वीपे पूर्वभरते अतीत चोवीशी.

४ श्री सुमृदुनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥
६ श्री व्यक्तनाथ अर्हते नमः ॥
६ श्री व्यक्तनाथ नाथाय नमः ॥
६ श्री व्यक्तनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥
७ श्री कलाशत नाथाय नमः ॥

८ पुष्करवरद्वीपे पूर्वभरते वर्त्तमान चोवीशी.

२१ श्री अरण्यवास सर्वज्ञाय नमः ॥
१९ श्री योगनाथ अर्हते नमः ॥
१९ श्री योगनाथ नाथाय नमः ॥
१९ श्री योगनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥
१८ श्री अयोगनाथ नाथाय नमः ॥

९ श्री पुष्करवरद्वीपे पूर्वभरते अनागत चोवीशी.

४ श्री परम सर्वज्ञाय नमः ॥
६ श्री शुद्धार्तिनाथ अर्हते नमः ॥
६ श्री शुद्धार्तिनाथ नाथाय नमः ॥
६ श्री शुद्धार्तिनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥
७ श्री निःकेशनाथ नाथाय नमः ॥

१० धातकीखंडे पश्चिमभरते अतीत चोवीशी.

४ श्री सर्वार्थ सर्वज्ञाय नमः ॥
६ श्री हरिभद्र अर्हते नमः ॥
६ श्री हरिभद्र नाथाय नमः ॥
६ श्री हरिभद्र सर्वज्ञाय नमः ॥
७ श्री मगधाधिप नाथाय नमः ॥

११ धातकीखंडे पश्चिमभरते वर्त्तमान चोवीशी.

२१ श्री प्रयछ सर्वज्ञाय नमः ॥
१ए श्री अक्षोभनाथ अर्हते नमः ॥
१ए श्री अक्षोभनाथ नाथाय नमः ॥
१ए श्री अक्षोभनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥
१ت श्री मलयसिंह सर्वज्ञाय नमः ॥

१२ धातकीखंडे पश्चिमभरते अनागत चोवीशी.

४ श्री दिनरुक् सर्वज्ञाय नमः ॥
६ श्री धनदनाथ अर्हते नमः ॥
६ श्री धनदनाथ नाथाय नमः ॥
६ श्री धनदनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥
७ श्री पौषधनाथ नाथाय नमः ॥

१३ पुष्करवरद्वीपे पश्चिमभरते अतीत चोवीशी.

४ श्री प्रलंब सर्वज्ञाय नमः ॥
६ श्री चारित्रनिधि अर्हते नमः ॥
६ श्री चारित्रनिधि नाथाय नमः ॥
६ श्री चारित्रनिधि सर्वज्ञाय नमः ॥
७ श्री प्रशमराजित नाथाय नमः ॥

१४ पुष्करवरद्वीपे पश्चिमभरते वर्त्तमान चोवीशी.

२१ श्री स्वामी सर्वज्ञाय नमः ॥
१ए श्री विपरीतनाथ अर्हते नमः ॥
१ए श्री विपरीतनाथ नाथाय नमः ॥
१ए श्री विपरीतनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥
१० श्री प्रसादनाथ नाथाय नमः ॥

१५ श्री पुष्करवरद्वीपे पश्चिमभरते अनागत चोवीशी.

४ श्री अघटितनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥
६ श्री ब्रमणेंडनाथ अर्हते नमः ॥
६ श्री ब्रमणेंडनाथ नाथाय नमः ॥
६ श्री ब्रमणेंडनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥
७ श्री ऋषनचंड नाथाय नमः ॥

१६ जंबुद्वीपे ऐरवते अतीत चोवीशी.

४ श्री दयांत सर्वज्ञाय नमः ॥
६ श्री अजिनंदननाथ अर्हते नमः ॥
६ श्री अजिनंदननाथ नाथाय नमः॥
६ श्री अजिनंदननाथ सर्वज्ञाय नमः ॥
७ श्री रत्नेशनाथ नाथाय नमः ॥

१७ जंबुद्वीपे ऐरवते. वर्त्तमान चोवीशी.

२१ श्री श्यामकोष्ट सर्वज्ञाय नमः ॥
१९ श्री मरुदेवनाथ अर्हते नमः ॥
१९ श्री मरुदेवनाथ नाथाय नमः ॥
१९ श्री मरुदेवनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥
१८ श्री अतिपार्श्व नाथाय नमः ॥

१८ जंबुद्वीपे ऐरवते अनागत चोवीशी.

४ श्री नंदिषेण सर्वज्ञाय नमः ॥
६ श्री व्रतधरनाथ अर्हते नमः ॥
६ श्री व्रतधरनाथ नाथाय नमः ॥
६ श्री व्रतधरनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥
७ श्री निर्वाणनाथ नाथाय नमः ॥

१९ धातकीखंडे पूर्व ऐरवते अतीत चोवीशी.

४ श्री सौंदर्य सर्वज्ञाय नमः ॥
६ श्री त्रिविक्रमनाथ अर्हते नमः ॥
६ श्री त्रिविक्रमनाथ नाथाय नमः ॥
६ श्री त्रिविक्रमनाथ सर्वज्ञायनमः ॥
७ श्री नरसिंहनाथ नाथाय नमः ॥

२० घातकीखंडे पूर्व ऐरवते वर्त्तमान चोवीशी.

२१ श्री खेमंत सर्वज्ञाय नमः ॥
१९ श्री संतोषितनाथ अर्हते नमः ॥
१९ श्री संतोषितनाथ नाथाय नमः ॥
१९ श्री संतोषितनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥
१८ श्री कामनाथ नाथाय नमः ॥

२१ घातकीखंडे पूर्व ऐरवते अनागत चोवीशी.

४ श्री मुनिनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥
६ श्री चंद्रदाह अर्हते नमः ॥
६ श्री चंद्रदाह नाथाय नमः ॥
६ श्री चंद्रदाह सर्वज्ञाय नमः ॥
७ श्री दिलादित्य नाथाय नमः ॥

२२ पुष्करार्धे पूर्व ऐरवते अतीत चोवीशी.

४ श्री अष्टादिक सर्वज्ञाय नमः ॥
६ श्री वणिक्नाथ अर्हते नमः ॥
६ श्री वणिक्नाथ नाथाय नमः ॥
६ श्री वणिक्नाथ सर्वज्ञाय नमः ॥
७ श्री उदयज्ञान नाथाय नमः ॥

२३ पुष्करार्धे पूर्व ऐरवते वर्त्तमान चोवीशी.

२१ श्री तमोकंद सर्वज्ञाय नमः ॥
१९ श्री सायकाक्ष अर्हते नमः ॥
१९ श्री सायकाक्ष नाथाय नमः ॥
१९ श्री सायकाक्ष सर्वज्ञाय नमः ॥
१८ श्री क्षेमंतनाथ नाथाय नमः ॥

२४ पुष्करार्धे पूर्व ऐरवते अनागत चोवीशी.

४ श्री नीर्वाणिक सर्वज्ञाय नमः ॥
६ श्री रविराज अर्हते नमः ॥
६ श्री रविराज नाथाय नमः ॥
६ श्री रविराज सर्वज्ञाय नमः ॥
७ श्री प्रथमनाथ नाथाय नमः ॥

२५ धातकीखंडे पश्चिम ऐरवते अतीत चोवीशी.

४ श्री पूरुरवा सर्वज्ञाय नमः ॥
६ श्री अवबोध अर्हते नमः ॥
६ श्री अवबोध नाथाय नमः ॥
६ श्री अवबोध सर्वज्ञाय नमः ॥
७ श्री विक्रमेंद्र नाथाय नमः ॥

२६ धातकीखंडे पश्चिम ऐरवते वर्त्तमान चोवीशी.

२१ श्री सुशांति सर्वज्ञाय नमः ॥
१९ श्री हरदेव अर्हते नमः ॥
१९ श्री हरदेव नाथाय नमः ॥
१९ श्री हरदेव सर्वज्ञाय नमः ॥
१८ श्री नंदिकेश नाथाय नमः ॥

२७ धातकीखंडे पश्चिम ऐरवते अनागत चोवीशी.

४ श्री महामृगेन्द्र सर्वज्ञाय नमः ॥
६ श्री अशोचित अर्हते नमः ॥
६ श्री अशोचित नाथाय नमः ॥
६ श्री अशोचित सर्वज्ञाय नमः ॥
७ श्री धर्मेन्द्रनाथ नाथाय नमः ॥

२८ पुष्करवरद्वीपे पश्चिम ऐरवते अतीत चोवीशी.

४ श्री अश्ववृंद सर्वज्ञाय नमः ॥
६ श्री कुटिलक अर्हते नमः ॥
६ श्री कुटिलक नाथाय नमः॥
६ श्री कुंटिलक सर्वज्ञाय नमः ॥
७ श्री वर्द्धमान नाथाय नमः ॥

२९ पुष्करवरद्वीपे पश्चिम ऐरवते वर्त्तमान चोवीशी.

२१ श्री नंदिकेश सर्वज्ञाय नमः ॥
१९ श्री धर्म्मचंद्र अर्हते नमः ॥
१९ श्री धर्म्मचंद्र नाथाय नमः ॥
१९ श्री धर्म्मचंद्र सर्वज्ञाय नमः ॥
१८ श्री विवेकनाथ नाथाय नमः ॥

३० पुष्करवरद्वीपे पश्चिम ऐरवते अनागत चोवीशी.

४ श्री कलापक सर्वज्ञाय नमः ॥
६ श्री विशाम अर्हते नमः ॥
६ श्री विशाम नाथाय नमः ॥
६ श्री विशाम सर्वज्ञाय नमः ॥
७ श्री अरण्यनाथ नाथाय नमः ॥

॥ अथ मुनि श्री दानविजयजी कृत चैत्रीपुनमना देववंदन प्रारंभः ॥

॥ तिहां प्रथम विधि कहीये छैये ॥

प्रथम चौमुखनी प्रतिमा स्थापीये, पछी स्नात्र भणावीये, प्रभुने दश तिलक करीये, फूलना हार दश चढावीये, दश वखत अगरबती उखेवीये, दश वखत

चामर वींजीये, दश दीवटनो दीवो करीये, पछी दश वखत घंट वजाडीये. चोखानां साथीया दश करीये, ते साथीयानी उपर दश बदामो मूकीये, चौमुखजीने चारे पासे चार श्रीफळ मूकीये, अखियाणुं गोधुम शेर त्रण मूकवा, तेनी उपर एक श्रीफळ मूकवुं, नैवेद्य मध्ये दश जातिनां पकवान्न दश ढोश्ये, पछी जे जे जातिनां फळ मळे. ते सर्व जातिनां दश दश फळ मूकवां, परंतु ते फळ सर्व उत्तम जातिनां लेवां, पछी देव वांदीये, पछी शांतिकर स्तोत्र कहीये, पछी श्री शत्रुंजयनां एकवीश नाम दश वखत लेवां. ते एकवीश नाम लखीये छैये.

१ श्री विमलाचलाय नमः
२ श्री पुंडरीकगिरीये नमः
३ श्री सिद्धक्षेत्राय नमः
४ श्री सुराचलाय नमः
५ श्री महाचलाय नमः
६ श्री श्रीपदये नमः
७ श्री पर्वतेंद्राय नमः
८ श्री पुण्यराशये नमः
९ श्री दृढशक्तये नमः
१० श्री मुक्तिधराय नमः
११ श्री महातीर्थाय नमः
१२ श्री अकर्मणे नमः
१३ श्री शाश्वतगिरीये नमः
१४ श्री सर्वकामदाय नमः
१५ श्री पुष्पदंताय नमः
१६ श्री महापद्माय नमः

१७ श्री पृथ्विपीठाय नमः	२० श्री कैलासपर्वतायनमः
१८ श्री प्रभुपदगिरीये नमः	२१ श्री क्षितिमंगल पर्वताय नमः
१९ श्री पातालगिरीये नमः	

ए एकवीश नाम दशवार कहीने पछी दश नवकार गणीये, पछी खमासमण दश आपीये, पछी भंमार दोइये, एटले तिहां यथाशक्तिये रूपानाणुं मूकीये, पछी प्रदक्षिणा दश आपवी. ए रीते देववंदनना प्रथम जोडामां सर्व ठववा, अने नैवेद्य, दीवेट, टीली, चामर, आरती, चोखाना साथीया प्रमुख सर्व दश दश करवा. तेमज बीजा जोडामां वीश, त्रीजा जोडामां त्रीश, चोथा जोडामां चालीश, अने पांचमामां पचास. एवा अनुक्रमे वस्तु मूकवी ॥ हवे देव वांदवानो विधि कहे छे. प्रथम इरियावहि पडिक्कमी एक लोगस्सनो काउस्सग करी पछी प्रगट लोगस्स कहीने चैत्यवंदन करीये. ते चैत्यवंदन लखीये छैये.

॥ अथ चैत्यवंदन ॥

॥ नाभिनरेसर वंश चंद, मरुदेवा मात ॥ सुर रमणी रमणीय जास, गाये अवदात ॥ कंचनवर्ण समान

कांति, कमनीय शरीर ॥ सुंदर गुणगण पूर्ण भव्य, जन मन तरु कीर ॥ आदिश्वर प्रभु प्रणमीये ए, प्रणत सुरासुर वृंद ॥ मनमोदें मुख देखतां, दान मिटे दुःख दंद ॥ ए चैत्यवंदन कह्या पछी नमुथ्थुणं० ॥ कही आ- ढघो जयवीयराय कहेवो. पछी बीजुं चैत्यवंदन कहेवुं.

॥ अथ चैत्यवंदन ॥

॥ पूर्णचंद उपमान जास, वदनांबुज दीठे ॥ भव भव संचित पाप ताप, ते सघलां नीठे ॥ भविजन न- यन चकोर चंद, तव हरषित थाय ॥ अंधकार अज्ञान तम, निर्विषयी जाय ॥ समता शीतलता वधे ए, पूर्ण ज्योति परकाश ॥ ऋषभदेव जिन सेवतां, दान अ- धिक उल्लास ॥ २ ॥ इति चैत्यवंदन ॥ पछी नमुथ्थुणं अने अरिहंत चेइयाणं० कहीने जे थोय कहेवी, ते लखीये छैये ॥

॥ अथ थोय लिख्यते ॥

॥ सिरि शत्रुंजय गिरि मंमणो, दुःख दोहग दुरिय वि- हंमणो ॥ चैत्रीपुनमे सिरि रिसहेसरु, पूजो पुंडरीक गणि सुंदरु ॥ १ ॥ पछी लोगस्स० कहीने बीजी थोय कहेवी ॥

॥ अथ बीजी थोय ॥

॥ अतीत अनागत वर्त्तमान, जिनवर आवी अनंत तान ॥ चैत्रीपुनम दिवसे समोसर्या, ते ध्यायी मुक्तीवधू वर्या ॥२॥ पछी पुख्खरवरदी० कहीने त्रीजी थोय कहेवी ॥

॥ अथ त्रीजी थोय ॥

॥ विमलाचल महिमा भाखियो, जिनवर गणधर तिहां दाखियो ॥ ते आगम समरो धरिय भाव, दुस्तर भवसागर सार नाव ॥ ३ ॥ पछी सिद्धाणं बुद्धाणं० कही चोथी थोय कहेवी ॥

॥ अथ चोथी थोय ॥

॥ चक्केसरीदेवी सुरवरा, जिनवर पय सेवे हितकरा ॥ विमलाचलगिरि रखवालिका, वरदान देजो गुणमालिका ॥४॥ पछी नमुथ्थुणं०॥ अरिहंत चेइआणं कहेवुं ॥

॥ अथ थोय जोडो बीजो ॥

॥ विमलाचल भूषण, ऋषभ जिनेश्वर देव ॥ तस आण लहीने, ऋषभसेन गणदेव ॥ ते तीरथमां मुख्य, परणी शिववहु सार ॥ चैत्रीपुनम दिन, आणी हर्ष अपार ॥ १॥ पछी लोगस्स कही थोय कहेवी ॥ विम-

लाचल महिमा, जिनवर कोमी अनंत ॥ उपदेशे पंमित, परिषदमांहि अनंत ॥ ते जिनवर दियो, मंगलमाला ऋद्धि ॥ चैत्रीपुनम तप, आराधकने सिद्धि ॥ २ ॥ पछी पुक्खर० कही थोय कहेवी ॥ अष्टापद पमुहा, तीरथ कोमी अनेक ॥ तेहमां ए राजा, इम कहे आगम ठेक ॥ ते आगम निसुणो, आणी हृदय विवेक ॥ चैत्रीपुनम दिन, जिम होय पुण्य विवेक ॥३॥ पछी सिद्धाणं बुद्धाणं० कही थोय कहेवी ॥ चक्केसरी देवी, जिनशासन रखवाली ॥ सिंहासन बेठी, सिंहलंकी लटकाली ॥ चैत्रीपुनम तप, विघ्न हरजो माय ॥ श्री विजयराजसूरि, दान मान वरदाय ॥४॥ इति स्तुति ॥ पछी नमुथ्थुणं० जावंतिचेइ० जावंत केविसाहु० नमोऽर्हं० कही स्तवन कहीये ॥

॥ अथ स्तवन लिख्यते ॥

सुखकारी रे, सिद्धाचल गुण गेह रे ॥ जवि प्रणमो रे, हृदय धरी बहु नेह रे ॥ त्रुटक ॥ बहु नेह आणी एह जाणी, सकल तीरथ सेहरो ॥ श्री ऋषजदेव जिणंद पूजी, पूर्व सवि ऽुष्कृत हरो ॥ असुर सुर मुनिराज किन्नर, जास दरसन अहिलसे ॥ जेहनुं फरसन करी

भविजन, मुगति सुखमा उल्लसे ॥ १ ॥ ढाल ॥ आदिसर रे, विहरंता जगमांहिरे ॥ सिद्धाचल रे, आवी समोसर्या त्यांहिरे ॥ त्रुटक ॥ त्यांहिं गणधर पुंमरिकने, त्रुवनगुरु इम उपदिशे ॥ तुम नामथी ए तीर्थ केरो, अधिक महिमा वाधशे ॥ सवि कर्म तोमी मोह मोडी, लही केवलनाण रे ॥ चैत्रीपुनम दिवसे इणे गिरी, पामशो निर्वाण रे ॥ २ ॥ ढाल ॥ इम निसुणि रे, श्री गणधर पुंडरिक रे ॥ जवजलथी रे, जिम अलगुं पुंमरिक रे ॥ त्रुटक ॥ पुंडरिक परें जे जय न पामे, परिसह उपसर्गथी ॥ क्रोधने मद मान माया, जास चित्त रतनथी ॥ पंच कोमि मुनिवर संघाते, तिहां अणसण उच्चरे ॥ अष्टकर्म जाली दोष टाली, सिद्धमंदिर अनुसरे ॥ ३ ॥ ढाल ॥ ते दिनथी रे, ए गिरीनुं अतिरूद्धि रे ॥ पुंमरिक इति रे, नाम थयुं प्रसिद्ध रे ॥ त्रुटक ॥ प्रसिद्ध महिमा चैत्रीपुनिम, दिनें जेहनो जाणीये ॥ बहु भाव आणी सार जाणी, सुगुण जास वखाणीये ॥ दश वीश त्रीश अने चालीश, पचास पुष्फमाल रे ॥ लोगस्स तेती काउस्सग्गनो थुइ, नमुक्कार रसाल रे ॥

॥ ४ ॥ ढाल ॥ फल तेतां रे, होय तेती प्रदक्षिणा ॥ चैत्री पूजा रे, इणि विधि कीजे विचक्षणा ॥ त्रुटक ॥ विचक्षणा जिनराज पूजी, पुंमरिक हियमे धरो ॥ शत्रुंजय गिरीवर आदि जिनवर, नमी भवसायर तरो ॥ इम चैत्रीपुनमतणो उत्सव, जे करे भविलोय रे ॥ श्री विजयराज सूरिंद विनयी, दान शिवसुख होय रे ॥ ॥ ५ ॥ इति स्तवन ॥ पछी जयवीयराय आभवमखंमा सुधी कहेवा. पछी चैत्यवंदन कहेवुं, ते कहे छे ॥

॥ अथ चैत्यवंदन ॥

॥ चैत्रीपुनमनो अखंड, शशीधर जिम दीपे ॥ अंगारक आदि अनेक, ग्रहगणने जीपे ॥ तिम परतीर्थी देवथी, जेह अधिक विराजे ॥ लोकोत्तर अतिशय अनंत, दीपंत दिवाजे ॥ चैत्रीपुनमने दिने ए, भजो एह भगवंत ॥ श्री विजयराज सूरिंदनो, दान सकल सुख हुंत ॥ ३ ॥ इति देववंदननो प्रथम जोडो समाप्त ॥ अहीआं नमुथ्थुणं तथा जयवीयराय संपूर्ण कही शांतिकरं स्तोत्र कहेवुं ॥ ए प्रकारनो सर्व विधि जेम प्रथम लख्यो छे, तेम आंहीं जाणी लेवो.

॥ अथ देववंदननो बीजो जोडो ॥

॥ तत्र प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ श्री शत्रुंजय सिद्धक्षेत्र, सिद्धाचल साचो ॥ आदिश्वर जिनरायनो, तिहां महिमा जाचो ॥ इहां अनंत गुणवंत साधु, पाम्या शिव वास ॥ एह गिरी सेवाथी अधिक, होय लील विलास ॥ दुष्कृत सवि दूरे हरे ए, बहु भव संचित जेह ॥ सकल तीर्थ शिर सेहरो, दान नमे धरी नेह ॥ १ ॥ इति प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ अथ द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ आदिसर जिनरायनो, गणधर गुणवंत ॥ प्रगट नाम पुंडरिक जास, महिमांहे महंत ॥ पंच कोडि साथे मुणिंद, अणसण तिहां कीध ॥ शुक्लध्यान ध्यातां अमूल, केवल तिहां लीध ॥ चैत्रीपुनमने दिन ए, पाम्या पद महानंद ॥ ते दिनथी पुंडरिकगिरी, नाम दान सुखकंद ॥२॥ इति द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ अथ तृतीय चैत्यवंदन ॥

॥ सकल सुहंकर सिद्धक्षेत्र, सिद्धाचल सुणिए ॥ सुर नर नरपति असुर खेचर, निकरे जे थुणीये ॥ सकल तीरथ अवतार सार, बहु गुण भंडार ॥ पुंडरिक गणधर

जव, पाम्या नव पार ॥ चैत्रीपुनमने दिने ए, कर्म मर्म करी दूर ॥ ते तीरथ आराहिये, दान सुयश नरपूर ॥ ॥ ३ ॥ इति तृतीय चैत्यवंदन ॥

॥ अथ थोयो जोमा बे ॥

॥ श्री शत्रुंजय गिरीवर वासव, वासव सेवित पायजी॥ जयवंता वरतो तिहुं काले, मंगल कमला दायजी ॥ सिरि रिसहेसर शिष्य शिरोमणी, पुंमरिकथी ते साध्यो जी॥ चैत्रीपुनम आ चोवीशी, महिमा जेहनो वाध्यो जी ॥ १ ॥ अनंत तिर्थंकर शत्रुंजयगिरी, समोसस्या बहु वारजी॥ गणधर मुनिवरशुं परवरिया, तिहुंअणना आधारजी॥ ते जिनवर प्रणमो नवि नावे, तिहुअण सेवित चरणाजी ॥ नव नय त्राता मंगलदाता, पाप रजोहर नरणाजी ॥२ ॥ श्री आदिश्वर वचन सुणिने, पुंमरिक गणधारजी ॥ आगम रचना कीधी पोढी, नय निक्षेपा धारजी ॥ चैत्रीपुनमने दिन आगम, आराधो नविप्राणीजी ॥ आतम निर्मलता वर नावो, कतक फले जिम पाणीजी॥३॥ शत्रुंजय सेवानो रसियो, वसियो नविजन चित्तेजी ॥ चउविह संघना विघन ह-

रेवा, उद्यत अतिशय नित्तेजी ॥ कवम्ह यक्ष जिनशासन मंडपे, मंगल वेलि वधारोजी ॥ श्री विजयराज सूरीश्वर सेवक, सफल करो अवतारोजी ॥४॥ इति ॥

॥ अथ द्वितीय थोय जोम्मो ॥

॥ शत्रुंजय मंम्मण मोह खंम्मण, नाभिनंदन देव ॥ वार पूर्व नवाणुं आव्या, सहित गणधर देव ॥ रायण हेठे ठवि आसन, सुणत पर्षद वार॥ शत्रुंजय महिमा प्रगट कीधो, लोकने हितकार ॥ १ ॥ विमलगिरीवर सेवनाथी, पापना भम्वाय ॥ तम घटा जिम सूर देखी, दूर दहदिशि जाय ॥ चैत्रीपुनम उपदिशी इम, तिर्थंकरनी कोडी॥ सेविये भविका तेह जिनवर, नित्य निज कर जोम्मी ॥ २ ॥ सात छठ ने एक अठ्ठम, जाप विधिशुं वेलि ॥ शत्रुंजयगिरी आराधि इम, वाधे गुणनी केली॥ इम कहे आगम विविध विधिशुं, कर्म भेद उपाय ॥ ते समय निसुणो भक्ति आणी, दलित दुर्मति दाय ॥३॥ गोमुख सुंदर यक्ष गोमुख, यक्ष वर्ग परधान॥ जैनतीरथ विघन वारण, निपुण बुद्धिनिधान ॥ श्री नाभिनंदो शिष्य मुनिवर, पुंम्मरिक गणधार ॥ श्री वि-

जयराज सूरिंद संघने, करो कुशल विस्तार ॥ ४ ॥
॥ इति द्वितीय थोय जोडो ॥

॥ अथ स्तवन लिख्यते ॥

श्री शत्रुंजय तीरथ सार, प्रणमो प्राणी भगति उदार ॥ नंदीश्वर यात्राए फल जेह, कुंमलगिरी बमणुं होय तेह ॥ १ ॥ तेह त्रमणुं रुचकाचल जोय, तेह गजदंते चउ गुणुं होय ॥ तेहथी बमणुं जंबू वृक्ष, चैत्य वांदतां होय प्रत्यक्ष ॥ २ ॥ चैत्य जे धातकीखंम मफार, छ गुणुं ते फल नमतां सार ॥ छत्रीश गुणुं फल तेहथी होय, पुष्करवर जिन नमतां जोय ॥ ३ ॥ मेरुचूलाना जिन प्रणमंत, तेहथी तेर गुणुं फल हुंत ॥ तेहथी सहस गुणुं फल थाय, समेतशिखर जे यात्रा जाय ॥४॥ ते लख गुणुं अंजनगिरी जाण, ते दश लख रैवत जाण ॥ अष्टापद वंदे मन भाय, तेहने पण एहिज फल थाय॥५॥ पुंमरगिरी प्रणमी गहगहे, तेहथी कोमी गुणुं फल लहे ॥ भांख्युं एह फल परिमाण, भावथी जन अधिक मन आण ॥ ६ ॥ पुंडरिक गणधर जिहां सिद्ध, पुंमरिक गिरी तेह प्रसिद्ध ॥ वंदि एह गिरी लहि संपदा, दान

विजय भांखे एम मुदा ॥ ७ ॥ इति स्तवन ॥ अर्हीं नमिऊण स्तोत्र० कहीये ॥ इति देववंदननो बीजो जोडो संपूर्ण ॥ ते वार पछी खमणो विधि करीने त्रीजो जोडो कहीये, ते कहे छे. ॥

॥ अथ देववंदननो त्रीजो जोडो ॥

॥ तिहां प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ ए तीरथ उपर अनंत, तिर्थंकर आव्या, वली अनंता आवशे, समतारस भाव्या॥ आ चोवीशीमांहि एक, नेमीश्वर पांखे ॥ जिन त्रेवीश समोसर्या, एम आगम भांखे॥गणधर मुनिवर केवली, समोसर्या गुणवंत॥ प्रेमे ते गिरी प्रणमतां, हरखे दान हसंत ॥१॥ इति ॥

॥ अथ द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ ए तीरथना उपरे, थया उद्धार असंख्य॥ तिम प्रतिमा जिनरायनी, थइ तास नवि संख्य ॥ अजित शांति जिनराज इह, रह्या चौमासी ॥ ए तीरथ मुनि अनंत, हुआ शिवपुरवासी ॥ चैत्री पुनमने दिने ए, महिमा जास महान॥ ए तीरथ सेवन थकी, दान वधे बहु वान ॥ २॥ इति द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ अथ तृतीय चैत्यवंदन ॥

॥ अष्टापद आदि अनेक, जग तीरथ मोटां ॥ तेहथी अधिकुं सिद्धक्षेत्र, एह वचन न खोटां ॥ जे माटे ए तीर्थ सार, शासय प्रतिरूप ॥ जेह अनादि अनंतशुद्ध, इम कहे जिनभूप ॥ कलिकाले पण जेहनो ए, महिमा प्रबल पदूर ॥ श्री विजयराज सूरिंदथी, दान वधे बहु नूर ॥ ३ ॥ इति तृतीय चैत्यवंदन ॥

॥ अथ थोयो जोमा बे ॥

॥ विमलाचल सिहर शिरोमणी, तनु तेजे निर्जित दिनमणी ॥ श्री नाभेय जिन जग गुहमणी, जयो तिहुअण वांछित सुरमणी ॥ १ ॥ एकशत अमसानुं सोहामणा, निषधादिक छे गुणे वामणा ॥ शिखरे शिखरे बहु जिनवरा, आवी समोसर्या गुण सायरा ॥ ॥ २ ॥ पुंमरिक तपोविध भांखियो, मधुराकारे शत्रुंजय साखीयो ॥ सुहगुरु संघपूजा जिहां कही, ते आगम अभ्यासे गहगही ॥ ३ ॥ शशीवयणी कमल विलोचना, चक्केश्वरी देवी विरोचना ॥ रिसहेसर भक्ति विधायिका, वरदान देजो सुप्रभाविका ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ द्वितीय थोय जोडो ॥

॥ सति मरुदेवी उरि सरोवर हंस, नृप नाभिकुला बर जे वर हंस ॥ सिरि रिसहेसर सेवो सदा, चैत्री पुनम लहो संपदा ॥ १ ॥ ऐरवत विदेहने भरते जेह, ते जिन प्रशंसे तीरथ एह ॥ ते तिर्थंकर भव भय हरो, भवियण चैत्री तप अनुसरो ॥ २ ॥ तीरथयात्रा ते दुःख हरे, ए करणीथी शिवसुख वरे ॥ इम उपदेशे गणधर देव, चैत्री तप करो नित्य मेव ॥ ३ ॥ श्रुतदेवी सीत कमले रही, विमलाचल सेवा गहगही ॥ चैत्री तप सान्निधि करे माय, जिम दान सकल दुःखमां दूर जाय ॥ ४ ॥ इति ॥ द्वितीय थोय जोडो ॥

॥ अथ स्तवन लिख्यते ॥

प्रणमो प्रेमे पुंडरिकगिरी राजीयो, गाजीयो जगमां रे एह ॥ सोभागी ॥ यात्राये जातां पगे पगे निर्जरे, बहु भवसंचित खेह ॥ सोभागी ॥ १ ॥ प्रणमो० ॥ पाप होय वज्रलेप समोवड, तेह पण जायरे दूर ॥ सो० ॥ जो एह गिरीनुं दर्शन कीजीये, भाव भगति भरपूर ॥ ॥ सो० ॥ २ ॥ प्रणमो० ॥ गोहत्यादिक हत्या पंच छे,

कारक तेहना जे होय ॥ सो० ॥ तेपण ए गिरीनुं द-र्शन जो करे, पामे शिवगति सोय ॥ सो० ॥ ३ ॥ प्र० ॥ श्री शुकराज नृपति पण इणगिरी, करतो जिनवर ध्यान ॥ सो० ॥ षट्मासे रिपु विलय गया सवे, वाध्यो अधिक तस वान ॥ सो० ॥ ४ ॥ प्रणमो० ॥ चंद्रशेखर निज भगिनी भोगवी, कीधुं पाप महंत ॥ सो० ॥ तेपण ए तीरथ आराधतां, पाम्यो शुभगति संत ॥ सो० ॥ ५ ॥ ॥ प्र० ॥ मोर सर्प वाघण प्रमुख बहु, जीव छे जे विकराल ॥ सो० ॥ तेपण ए गिरी दर्शन पुण्यथी, पामे सुगति विशाल ॥ सो० ॥ ६ ॥ प्र० ॥ एहवो महिमा ए तीरथ तणो, चैत्रीपुनमे विशेष ॥ सो० ॥ श्री विजयराज सूरिश्वर शिष्यने, दान गयां दुःख लेश ॥ सो० ॥७॥ ॥प्र०॥ इति स्तवन ॥ अहीं तिजयपहुत्त कहीये ॥ इति त्रीजा देववंदननो त्रीजो जोडो संपूर्ण ॥ अहींआं पूर्व-नीपरें विधि त्रिगुणो करीने चोथा जोडानो प्रारंभ करीये॥

॥ अथ देववंदननो चोथो जोडो ॥

॥ तिहां प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ जोयण शत परिमाण एक, जे पहिले आरे ॥ बी-

जे आरे जोयण जेह, एंशी विस्तारे ॥ तिम त्रीजे जोयण साठ, चोथे पंचास ॥ पांचमे आरे बार सार, विस्तार ले जास ॥ छठाने अंते हुसे ए, एक हस्त जस मान ॥ एह अवस्थित ले सदा, ते प्रणमे मुनि दान ॥१॥ इति ॥

॥ अथ द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ जरत नरेसर जरतक्षेत्र, चक्रि इण ठामे ॥ आव्या संघ सजी सनूर, मन आणंद पामे ॥ कंचनमय प्रसाद कीध, उत्तंग उदार ॥ मंरूप तोरण विविध जाल, मालित चउ बार ॥ धणु पण सय मित्त मणि तणाए, थापी ऋषजनी मूर्त्ति ॥ दान दयाकर तिर्थथी, पसरी जग जस कीर्त्ति ॥ २ ॥ इति द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ अथ तृतीय चैत्यवंदन ॥

॥ ऋषजनी प्रतिमा मणिमयी, जरतेश्वरे कीधी ॥ ते प्रतिमा ले इणे गिरी, एह वात प्रसिद्धि ॥ देखे दरिसण कोय जास, मानव इणे लोके ॥ त्रीजे जव जे मुक्ति योग्य, नर तेह विलोके ॥ स्वर्णगुफा पश्चिम दिशे ए, एले जास अहिठाण ॥ दान सुहंकर विमलगिरी, ते प्रणमुं हित आण ॥ ३ ॥ इति तृतीय चैत्यवंदन ॥

॥ अथ थोयो जोमा बे ॥

॥ चैत्री तप तीरथ नावतो; अनुलवमां आतम रा-खतो ॥ रिसहेसर जिन नवि नजो, जिम थाये नवजल शुं त्यजो ॥ १ ॥ जयवंता वरतो जिनवरा, तिहुअणवर नवियण हितकरा ॥ पुंडरिक तपो विधि जाणता, चैत्री पुनम दिवस वखाणता ॥२॥ नय गम पर्याये पूरियो, नवि पाखंडीये चूरियो ॥ जिनवरनो आगम मन धरो, जिम डुर्मति डुःकृत परिहरो ॥ ३ ॥ जिनशासन देवी चक्केसरी, जिन हेते दान द्यो इश्वरी ॥ जिनशासन उ-दय वधारजो, चैत्री तप विघन निवारजो ॥४॥ इति ॥

॥ अथ द्वितीय थोय जोमो ॥

॥ शत्रुंजय महिमा, प्रगट्यो जेहथी सार ॥ चैत्री पुनम दिन, आप्यो एह उदार ॥ रिसहेसर सेवा, सिर वहो धरी आणंद ॥ तिहुंअण नवि कैरव, विपिन विका-शन चंद ॥१॥ जिनवर उपदेशे, नरतादिक नृप ठेक ॥ शत्रुंजय शिखरे, चैत्य कराव्यां अनेक ॥ ते जिन आस-हो, नक्ति धरी अति ठेक ॥ आतम अनुनावी, वाधे वृद्धि विशेष ॥ २ ॥ शत्रुंजय सिहरे, समोसर्या जिनरा-

ज ॥ आगम उपदेशे, प्रतिबोधि सुसमाज ॥ ते आगम निसुणी, चैत्री तप करो सार ॥ पुंमरिक मुनिसर परें, लेशो जय जयकार ॥३॥ गौमुख चकेसरी, शासन चिंताकारी ॥ रिसहेसर सेवा, रसिक वसे सुखधारी ॥ विमलाचल सेवक, विघन निवारो माइ ॥ श्री विजयराज सूरि, शिष्य कहे चित्तलाइ ॥ इति द्वितीय थोय जोमो ॥

॥ अथ स्तवन लिख्यते ॥

॥ श्री सिद्धाचल शत्रुंजय, सिद्धक्षेत्र अभिराम ॥ दर्शन करतां उरगति त्रुटे, बूटे बंध निधान ॥ श्री रिसहेसर पट्ट धुरंधर, असंख्यात नर राय ॥ श्री आदित्ययशाथी यावत, अजित जिनेश्वर ताय ॥१॥ चउ दस इग इग, चउ दस इण विध ॥ थइ श्रेणि असंख्यात सिद्ध, दंमिकामांहि सघलो, एह अछे अवदात ॥ सर्वार्थसिद्धने शिवगति विण, त्रीजी गति नवि पामी ॥ तिणे पण ए तीरथ फरस्यो, वंदो भवि शिर नामी ॥ ॥२॥ नमि विनमि विद्याधर नायक, दो कोडी मुनि संघाते ॥ ए गिरी सेव्याथी शिवगति पाम्या, सकल कर्म निपाते ॥ श्री आदिश्वर सुतना नंदन, द्राविम्म वारिखिल्ल

जाण ॥ कातिपुनम दिन दश कोडी, ऋषि युत लहे निर्वाण ॥ ३ ॥ अष्टादश अक्षोहिणी दलना, चूरक जे बलवंत ॥ गोत्र निकंदन करीने संच्यो, जेणे पाप अनंत ॥ तेपण एहज तीरथ उपरे, करी अणसण उच्चार॥ उत्तम नर ते पांचे पांम्व, पाम्या भवजल पार ॥ ४ ॥ त्रण कोम्मी ने लाख एकाणुं, ऋषियुत राम मुणिंद ॥ तिम नारदादिक साधु अनंता, पाम्या पद महानंद ॥ ते माटे ए गिरीनुं साचुं, सिद्धक्षेत्र इति नाम ॥ श्री विजयराज सूरीश्वर विनयी, दान करे गुणग्राम ॥ ५ ॥ इति स्तवन ॥ अहीं भक्तामरस्तोत्र कहीये ॥ इति देववंदननो चोथो जोम्मो संपूर्ण ॥ अहींयां पूर्वनी परे विधि चोगुणो करीने पांचमा जोम्मानो प्रारंभ करीये ॥

॥ अथ देववंदननो पांचमो जोम्मो ॥

॥ तिहां प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ सगरादिक नरपति अनेक, इणे पर्वत आव्या॥ विविध विचित्र बिराजमान, प्रासाद कराव्यां ॥ भक्ति भरी जिनवर तणी, बहु प्रतिमा थापी ॥ तिणे महियलमां तेहनी, किरति अति व्यापी ॥ सुरपति नरप-

तिना थया ए, इहां बहु उद्धार ॥ ते शत्रुंजय सेविये, दान सकल सुखकार ॥ १ ॥ इति प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ अथ द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ एह गिरी उपरे आदि देव, प्रभु प्रतिमा वंदो ॥ रायण हेठे पाडुका, पूजी आणंदो ॥ एह गिरीनो महिमा अनंत, कुण करे वखाण ॥ चैत्रीपुनमने दिवसे, तेह अधिको जाण ॥ एह तीरथ सेवो सदाए, आणी भक्ति उदार ॥ श्री शत्रुंजय सुखदायको, दानविजय जयकार ॥ २ ॥ इति द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ अथ तृतिय चैत्यवंदन ॥

॥ चैत्रीपुनमने दिवस, शत्रुंजय भेटे ॥ भक्ति धरे जे भव्यलोक, ते भव दुःख मेटे ॥ आदिश्वर जिननी अमूल, पूजा विरचावे ॥ इति भीति सघली टले, सुख संपद पावे ॥ परमातम परकाशथी ए, प्रगटे परमानंद ॥ श्री विजयराज सूरिश्वर, दान अधिक आनंद ॥ ३ ॥ इति तृतिय चैत्यवंदन ॥

॥ अथ थोयो जोमा बे ॥

॥ परम सुख विलासी, शुद्ध चिद्रूप भासी ॥ स-

ह्जरुचि विकासी, मोक्ष आवासवासी ॥ मद मदन निवासी, विश्वथी जे उदासी, ऋषभ जिन अनासी, वंदीये ते निरासी ॥ १ ॥ जिनवर हितकारा, प्राप्त संसार पारा ॥ कृत कपट विदारा, पूर्ण पुण्य प्रचारा ॥ कलि-मल मलहारा, मर्दितानंग चारा ॥ दुःख विपिन कुठारा, पूजीये प्रेम धारा ॥ २ ॥ प्रबल नयन प्रकाशा, शुद्ध निक्षेप वासा ॥ विविध नय विलासा, पूर्ण नाणाव ज्ञा-सा ॥ परिहरि तक दासा, दत्त दुर्वादि वासा ॥ ज्ञवि जन सुणि खासा, जैन वाणी जयासा ॥३॥ सकल सूर विशिष्टा, पालिता नेक शिष्टा ॥ गरिम गुण गरिष्टा, ना-सिता शेषरिष्टा ॥ जनम मरण निष्टा, दान लीला पदिष्टा ॥ हरतु सकल दुष्टा, देवी चक्रा वरिष्टा ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ द्वितीय थोय जोमो ॥

॥ विमलाचल तीरथ सुंदरु, एक शत अम्नाम सुहंकरु ॥ इति उपद्रव संहरु, जस नामे लहीये सुख वरु ॥ तसु सिहरे श्री रिसहेसरु, मूरति ने महिमा सायरु ॥ जपतां जस नाम गुणायरु, पामीजे शिवसं-पद तरु ॥ १ ॥ चउवीशी जिनवरा, एक नेमी विना

त्रेवीश वरा ॥ विमलाचल आव्या सादरा, जस सेवे सुरनर किन्नरा ॥ वली कोडाकोडी मुनिश्वरा, अणसण करी निवृत्तिधरा ॥ ए तीरथ फरसो भवि नरा, चैत्रीपुनम दिनगत भरा ॥ २ ॥ उपदेशी वाणी जिनेश्वरे, ते श्रुतिपथ आणी गणधरे ॥ ते अंगादिक रचना करे, जिहां जीवादिक भांख्या विवरे ॥ ते निसुणि भवि उछाह धरे, पुंडरिकादिक तप आदरे ॥ ते आगम जगडुरमति हरे, शिवनारी मेलो दृढ करे ॥ ३ ॥ वज्रसेन सूरिश्वरनी वाणी, सांभलीने मन ममता नाणी ॥ पच्चखाण कर्युं तिणे शुभ नाणी, तेहथी थयो व्यंतर सुनाणी ॥ तेह यक्ष कपर्दि बहु माणी, मुज दुःख दोहग नांखो ताणी ॥ श्री विजयराज गुरु गुण खाणी, एम दान कहे सुणो भवि प्राणी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ स्तवन लिख्यते ॥

(राग गोडी–मन लागो.–ए देशी.)

भव भगति भविजन धरी, भेटो ए गिरीरायरे। ए तीरथ वारु ॥ अतिशय गुण ए गिरितणा, एक मुखे न कहेवायरे ॥ ए तीरथ वारु ॥ १ ॥ जोयण दश जस

चुलिघ, पंचास जोयण विस्ताररे ॥ ए० ॥ आठ जो-
यण उन्नतपणे, एह मान ऋषभने वारेरे ॥ ए० ॥२॥
इणगामे आदिसरु, साथे बहु परिवाररे ॥ ए० ॥ रा-
यण रुंख समोसस्या, पूर्व नवाणुं वाररे ॥ ए० ॥ ३ ॥
थावच्चा सुत मुनिवरु, तिम शुकराज मुनीशरे ॥ ए० ॥
पंथग शेलग इणि गिरी, आप थया जगदिशरे ॥
॥ ए० ॥ ४ ॥ सांब प्रद्युम्न आदि जिहां, असंख्यात
मुनिरायरे ॥ ए० ॥ शाश्वतसुख पाम्युं सही, वंदूं तेहना
पायरे ॥ ए० ॥ ५ ॥ सीमंधरस्वामि उपदिशे, परषद्
बार मझाररे ॥ ए० ॥ इंद्रप्रते कहे भरतमां, एक श-
त्रुंजय साररे ॥ ए० ॥ ६ ॥ इम निसुणी ए गिरी नमी,
आव्या कालिकसूरि पासरे ॥ ए० ॥ पूछी विचार नि-
गोदना, वात कही तव खासरे ॥ ए० ॥ ७ ॥ प्रतिमा
चैत्य थया इहां, तिम असंख्य उद्धाररे ॥ ए० ॥ चै-
त्रीपुनम दिन एहनो, महिमा भांख्यो अपाररे ॥ए०॥
॥ ८ ॥ चैत्री उत्सव जे करे, ते लहे भवदुःख भंग
रे ॥ ए० ॥ श्री विजयराज सूरिश्वरु, दान अधिक उ-
छरंगरे ॥ ए० ॥ ९ ॥ इति स्तवनं ॥ पछी नमुथ्थुणं

जयवीयराय संपूर्ण कही· देववंदनभाष्य कहीये अने त्रिण पूर्वे लख्या छे तेहथी· पांचगुणो करीये ॥ इति पंचम देववंदन जोडो संपूर्ण ॥

॥ इति मुनि श्री दानविजयजी कृत चैत्रीपुनमना देववंदन समाप्त ॥

॥ अथ श्री ज्ञानविमळसूरि कृत चैत्रीपुनमना देववंदन प्रारंभः ॥

॥ तिहां प्रथम विधि लखीये छेये ॥

॥ प्रथम प्रतिमा चार मांडीये तथा चोमुख होय तो चोमुख मांडीये. तिहां प्रथम टीकी दश करवी, फूलना हार दश, अगरबत्ती दशवार उखेववी, दश वाटनो दीवो करवो, दशवार घंट वजाववो, दशवार चामर विंजवा, दश साथीया चोखाना करवा, जेटली जातीनां फल मळे ते सर्व जातीनां प्रत्येके दशदश मूकवां, सोपारी प्रमुख सर्व दशदश मूकवा, नैवेद्य मध्ये साकरीयाचणा तथा एलचीपाक, द्राख, खारेक, शिंगोडां, निंबजां, पीस्तां, बदामादि मेवा जे जातिना मळे ते सर्व जातिना प्रत्येके दशदश वानां मूकवां. अखीयाणुं

गोधूम शेर त्रण, लीलां नालियेर चार मूकवां, इत्यादिक विधि मेलवीने देव वांदवा. पछी श्री सिद्धाचलजीना एकवीश नाम लीजे, ते नाम लखीये छैये.

१ श्री शत्रुंजय.	८ श्री श्रीपद	१५ श्री महापद्म.
२ श्री पुंडरीक.	९ श्री पर्वतेंद्र.	१६ श्री पृथ्वीपीठ.
३ श्री सिद्धक्षेत्र.	१० श्री महातीर्थ	१७ श्री सुभद्र.
४ श्री विमलाचल	११ श्री शाश्वतपर्व	१८ श्री कैलास.
५ श्री सुरगिरी.	१२ श्री दृढशक्ति	१९श्रीशतालमूल.
६ श्री महागिरी.	१३ श्री मुक्तिनिलय	२० श्री अकर्मक.
७ श्री पुण्यराशि.	१४ श्री पुष्पदंत.	२१ श्री सर्वकामद.

ए प्रमाणे एकवीश नाम लीजे ॥

॥ अथ प्रथम त्रण चैत्यवंदन लिख्यते ॥

॥ आदिश्वर अरिहंत देव, अविनाशी अमल ॥ अक्षय सरूपीने अनुप, अतिशय गुण विमल ॥ मंगल कमला केली वास, वासव नित्य पूजित ॥ तुझ सेवा सहकार वर, करतां कल कुंजित ॥ योजित युग आदि जिणे ए, सकल कला विज्ञान ॥ श्री ज्ञानविमलसूरि गुण तणो, अनुपम निधि भगवान ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ वंश इख्काग सोहामणो, सोवनवन काय ॥ नाभिराय कुल मंडणो, मरुदेवी माय ॥ भरतादिक शत पुत्रनो, जे जनक सोहाय ॥ नारी सुनंदा सुमंगला, तस कंत कहाय ॥ ब्राह्मी सुंदरी जेहनी ए, तनया बहु गुण खाण, ज्ञानविमल गुण तेहना, संभारो सुविहाण ॥ ॥ २ ॥ इति द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ अथ तृतीय चैत्यवंदन ॥

प्रथम नाथ प्रगट प्रताप, जेहेना जगे राजे ॥ पाप ताप संताप व्याप, जस नामे भाजे ॥ परम तत्त्व परमात्म रूप, परमानंद दाइ ॥ परम ज्योति जस जलहले, परम प्रभुता पाइ ॥ चिदानंद सुख संपदा ए, विलसे अक्षय सनूर ॥ ऋषभदेव चरणे नमे, श्री ज्ञानविमल गुण सूर ॥ ३ ॥ इति तृतिय चैत्यवंदन ॥

॥ अथ थोयो जोडा बे ॥

॥ श्री शत्रुंजय मंडण, रिसह जिणेसर देव ॥ सुर नर विद्याधर, सारे जेहनी सेव ॥ सिद्धाचल शिखरे, सोहाकर शृंगार ॥ श्री नाभि नरेसर, मरुदेवीनो म-

व्हार ॥ १ ॥ ए तीरथ जाणी, जिन त्रेवीश उदार ॥ एक नेमविना सवि, समवसखा सुखकार ॥ गिरी कं-डणे आवी, पहोता गढ गिरनार॥ चैत्रीपुनम दिने, ते वंदूं जयकार ॥ २ ॥ ज्ञाता धर्म कथांगे, अंतगम सूत्र मझार ॥ सिद्धाचल सिध्या, बोल्या बहु अणगार ॥ ते माटे ए गिरी, सवि तिरथ शिरदार ॥ जिणे भेटे थावे, सुख संपत्ति विस्तार ॥ ३ ॥ गोमुख चक्केश्वरी, शासननी रखवाली॥ ए तीरथ केरी, सानिध्य करे संभाली॥ गि-रुउं जस महिमा, संप्रति काले जास ॥ श्री ज्ञानवि-मलसूरि, नामे लील विलास ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ द्वितीय थोय जोडो ॥

॥ त्रेशठ लखपूरव राज करी, लीये संयम अति आणंद धरी ॥ वरस सहेंस केवललच्छी वरी, एक लख पूर्वे शिवरमणी वरी ॥१॥ चोवीशे पहिला ऋषभ थया, अनुक्रमे त्रेवीश जिणंद भया ॥ चैत्रीपुनम दिन तेह नमो, जिम दुर्गति दुखमां दूर गमो ॥ २ ॥ एकवीश एकतालीश नाम कह्यां, आगमे गुरु वयणे तेह लह्यां॥ अतिशय महिमा इम जाणीये, ते निशि दिन मनमां

आणीये ॥३॥ शत्रुंजय गिरीनां सवि विघन हरे, चक्केसरी देवी भगति करे॥ कहे ज्ञानविमल सूरिश्वरू, जिनशासनने होजो जयकरू॥४॥ इति द्वितीय थोय जोमो ॥

॥ अथ स्तवन लिख्यते ॥

॥ सिद्धाचल गुण गेह, भवि प्रणमो धरी नेह ॥ आज हो सोहे मन मोहे तीरथ राजीयो जी ॥१॥ आदिश्वर अरिहंत, मुगतिवधूनो कंत, आज हो पूरव नवाणुंवार आवी समोसर्या जी ॥ २ ॥ सकल सुरासुर राज, किन्नर देव समाज, आज हो सेवा रे सारे कर जोमी करी जी॥३॥ दरशनथी दुःख दूर, सेवे सुख भरपूर, आज हो एणे रे कलिकाले कल्पतरु अछे जी ॥४॥ पुंमरिक गिरी ध्यान, लहीये बहु यश मान, आज हो दीपेरे अधिकी तस ज्ञानकला घणीजी ॥ ५ ॥ इति स्तवनं ॥

पछी शांतिकरं कहीये, पछी नवकार दश गणवा, पछी श्री शत्रुंजयनां एकवीश नाम नमस्कार पूर्वक लेवां. जेम श्री शत्रुंजयाय नमः श्री पुंमरिकाय नमः इत्यादि एकवीश नाम लेइ पछी भंमार ढोइये. पछी खमासमण दश देइ प्रदक्षिणा दश देवी, एटले एक जोमानो विधि थयो ॥

बीजा जोमानो विधि पण प्रथमनी प्रमाणेज छे. वस्तु पण तेहीज सर्व मेलववी, परंतु एटलो फेर के दश दश वस्तुने ठेकाणे वीश वीश वस्तु मूकवी. खमासमणां तेहिज मूकवुं. अने शांतिकरंने स्थानके नमिऊण कहेवुं ॥ इति विधि ॥

॥ अथ देववंदननो बीजो जोमो ॥

॥ अथ चैत्यवंदन त्रय लिख्यते ॥

॥ नाभिनरेसर वंश मलय, गिरी चंदन सोहे ॥ जस परिमलशुं वासियो, त्रिभुवन मन मोहे ॥ अपछर रंभा उर्वशी, जेहना अवदात ॥ गाये अहोनिश ह- र्षशुं, मरुदेवी मात ॥ निरुपाधिक जस तेजशुं, ए सम मय सुखनो गेह ॥ ज्ञानविमल प्रभुता घणी, अक्षय अनंती जेह ॥ १ ॥ इति प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ अथ द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ जिम चैत्रीपुनम तणो, अधिको विधु दीपे ॥ ग्रह गण तारादिक तणा, परम तेजने जीपे ॥ तिम लौ- किकना देव ते, तुम्ह आगे हीणा ॥ लोकोत्तर अतिशय गुणे, रहे सुरनर लीना ॥ निवृत्ति नगरे जायवा ए, ए- हिज अविचल साथ ॥ ज्ञानविमलसूरि एम कहे, भव भव ए मुफ नाथ ॥ २ ॥ इति द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ अथ तृतीय चैत्यवंदन ॥

॥ अजर अमर अकलंक अरुज, निरुज अविनाशी ॥ सिद्धस्वरूपी शंकरो, संसार उदासी ॥ सुख संसारे भोगवी, नही भोग विलासी ॥ जीती कर्म कषायने, जे थयो जित काशी ॥ दासी आशि अवगणीए, समीचीन सर्वांग ॥ नय कहे तस ध्याने रहो, जिम होय निर्मल अंग ॥ ३ ॥ इति तृतिय चैत्यवंदन ॥

॥ अथ थोयो जोमा बे ॥

॥ श्री शत्रुंजय मंडण रिसह जिणंद, पाप तणो उन्मूले कंद ॥ मरुदेवी मातानो नंद, ते वंदूं मन धरी आनंद ॥ १ ॥ त्रण चोवीशी बहुत्तर जिना, भाव धरी वंदूं एक मना ॥ अतीत अनागत ने वर्त्तमान, तिम अनंत जिनवर धरयो ध्यान ॥ २ ॥ जेहमां पंच कह्या व्यवहार, नय प्रमाण तणा विस्तार ॥ तेहना सुणवा अर्थ विचार, जिम होय प्राणी अल्प संसार ॥ ३ ॥ श्री जिनवरनी आणा करे, जग जसवाद घणा विस्तरे ॥ श्री ज्ञानविमलसूरि सान्निध्य करे, शासनदेवी संकट हरे ॥ ४ ॥ इति प्रथम थोय जोमो ॥

॥ अथ द्वितीय थोय जोडो ॥

प्रणमो भविया रिसहजिणेश्वर, शत्रुंजय केरो राय जी ॥ वृषभलंछन जस चरणे सोहे, सोवनवरणी काय जी॥ भरतादिक शत पुत्रतणो जे, जनक अयोध्या राय जी॥ चैत्रीपुनमने दिन जेहना, महोटा महोत्सव थाय जी ॥ १ ॥ अष्टापदगिरी शिवपद पाम्या, श्री रिसहेसर स्वामीजी ॥ चंपाये वासुपूज्य नरेसर, नंदन शिवगति गामीजी॥ वीर अपापापुर गिरनारे, सिध्या नेम जिणंदो जी॥ वीश समेतगिरी शिखरे पहोता, एम चोवीशे वंदो जी॥ २॥ आगम नागमता परें जाणो, सवि विषनो करे नाशजी॥पाप ताप विष दूरे करवा, निशिदिन जेह उपासेजी ॥ ममताकंचूकी कीजे अलगी, निर्विषता आदरीयेजी॥ इणीपरे सहजथकी भव तरीये, जिम शिवसुंदरी वरीयेजी ॥३॥ कवड्जक्ष प्रत्यक्ष अछे, जेहना परता पूरेजी ॥ दोहग दुर्गति दुर्जननो करे, संकट सघळां चूरेजी ॥ दिन दिन दोलत दीपे अधिकी, ज्ञानविमल गुण नूरजी ॥ जीत तणा निशान वजावो, बोधिबीज भरपूरजी ॥ ४ ॥ इति द्वितीय थोय जोडो ॥

॥ अथ स्तवन लिख्यते ॥

॥ एक दिन पुंमरिक गणधरु रे लाल, पूछे श्री आदिजिणंद ॥ सुखकारी रे ॥ कहीये नवजल उतरी रे लाल, पामीश परमानंद ॥ नववारी रे ॥ एक० ॥ ॥ १ ॥ कहे जिन इण गिरी पामशो रे लाल, ज्ञान अने निर्वाण ॥ जयकारी रे ॥ तीरथ महिमा वाधशे रे लाल, अधिक अधिक मंडाण ॥ निर्धारी रे ॥ एक० ॥ ॥ २ ॥ एम निसुणी तिहां आवीया रे लाल, घाति-कर्म करयां दूर ॥ तम वारी रे ॥ पंच कोमी मुनिये परि-वरया रे लाल, हुवा सिद्धि हज्जूर ॥ नव वारी रे ॥ ॥एक०॥३॥ चैत्रीपुनम दिन कीजीये रे लाल, पूजा वि-विध प्रकार॥ दिल धारी रे ॥ फल प्रदक्षिणा काउस्स-ग्गा रे लाल, लोगस्स थुइ नमुक्कार ॥ नर नारी रे ॥ एक०॥ ॥४॥ दश वीश त्रीश चालीश नला रे लाल, पचास पुष्पनी माल ॥ अति सारी रे ॥ नरनव लाहो लीजीये रे लाल, जिम होय ज्ञान विशाल ॥ मनोहारी रे ॥ एक०॥ ॥ ५ ॥ इति स्तवन ॥ पछी नमिउण कहेवुं ॥ इति द्वितीय जोडो संपूर्ण ॥

अथ देववंदननो त्रीजो जोडो प्रारंभः ॥

॥ ए त्रीजा जोडामां त्रीश त्रीश वानां ढोववां ॥

॥ अथ चैत्यवंदन त्रय लिख्यते ॥

आदिश्वर जिनरायनो, पहेलो जे गणधार ॥ पुंडरिक नामे थयो, भविजनने सुखकार ॥ चैत्रीपुनमने दिने, केवलसिरि पामी ॥ इण गिरी तेहथी पुंडरिक, गिरीअभिधा पामी ॥ पंच कोडि मुनिशुं लह्या ए, करी अनशन शिव ठाम ॥ ज्ञानविमल सूरि तेहना, पय प्रणमे अभिराम ॥ १ ॥ इति प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ अथ द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ जाइ जुइ मालती, दमणो ने मरुवो ॥ चंपक केतकी कुंद जाति, जस परिमल गिरुवो ॥ बोलसिरि जासुल वेली, वालो मंदार ॥ सुरभि नाग पुन्नाग अशोक, वली विविध प्रकार ॥ ग्रंथिम वेढिम चउविधे ए, चारु रची वरमाल ॥ नयकहे श्री जिन पूजतां, चैत्री दिन मंगलमाला ॥ २ ॥ इति ॥

॥ अथ तृतिय चैत्यवंदन ॥

॥ चैत्रीपुनमने दिने, जे इण गिरी आवे ॥ आठ सत्तर बहु भेदशुं, जे भक्ति रचावे ॥ आदिश्वर अरि-

हंतनी, तस सघला कर्म ॥ दूरे टले संपद मले, भाजे भव भर्म ॥ इह भव परभव भव भवे ए, ऋद्धि वृद्धि कल्याण ॥ ज्ञानविमल गुणमणि तणो, त्रिभुवन तिलक समान ॥ ३ ॥ इति तृतिय चैत्यवंदन ॥

॥ अथ थोय जोमा बे प्रारंभः ॥

॥ चैत्री पूनम दिन, शत्रुंजय गिरी अहिगाण ॥ पुंमरिक वर गणधर, तिहां पाम्या निर्वाण ॥ आदिश्वर केरा, शिष्य प्रथम जयकार ॥ केवल कमला वर, नाभि नरिंद मल्हार ॥ १ ॥ चार जंबूद्वीपे, विचरंता जिनदेव ॥ अम धातकीखंमे, सुरनर सारे सेव ॥ अड पुष्कर अर्धे, इणिपरे वीश जिनेश ॥ संप्रति ए सोहे, पंच विदेह निवेश ॥ २ ॥ प्रवचन प्रवहण सम, भवजल नीधिने तारे ॥ कोहादिक महोटा, मत्स्यतणा भय वारे ॥ जिहां जीवदया रस, सरस सुधारस दाख्यो ॥ भवि भाव धरीने, चित्त करीने चाख्यो ॥ ३ ॥ जिनशासन सान्निध्य, कारी विघन विदारे ॥ समकितदृष्टि सुर, महिमा जास वधारे ॥ शत्रुंजय गिरी सेवो, जेम पामो भव पार ॥ कवि धीरविमल नो, शिष्य कहे सुखकार ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ द्वितीय थोय जोडो ॥

॥ वंदूं सदा शत्रुंज तीर्थ राजे, चूडामणि आदि जिणंद गाजे ॥ उच्छ कम्मठ विरोध भांजे, मानुं शिवा रोहण एह पाजे ॥ १ ॥ देवाधिदेवा कृत देव सेवा, संभारिये ज्यूंगज चित्त रेवा ॥ सव्वे विते थुत्ति थुया मद्दीया, अणागया संपइ जेअइया ॥ २ ॥ जे मोहना योध वडा कहाया, चत्तारि उछा कसिणा कसाया ॥ ते जीतीये आगम चक्कु पामी, संसार पारुत्तरणाय धामी ॥ ३ ॥ चक्केसरी गोमुह देव जुत्ता, रक्खा करी सेवय भाव पत्ता ॥ दियो सया निम्मल नाण लद्धी, होवे पसन्ना शिव सिद्धि लद्धी ॥ ४ ॥ इति द्वितीय थोय जोडो ॥

॥ अथ स्तवन प्रारंभः ॥

(शेत्रुंजे जइये लालन—ए देशी.)

सिद्धगिरी ध्यावो भविका, सिद्धगिरी ध्यावो ॥ घरे बेठां पण बहु फल पावो. भविका बहु फल पावो ॥ १ ॥ नंदीश्वर यात्रे जे फल होवे ॥ तेथी बमणेरुं फल कुंडलगिरी होवे ॥ भ० ॥ कुं० ॥ २ ॥ त्रिगणुं रुचक गिरी चउ गजदंता ॥ तेथी बमणेरुं फल जंबु महंता ॥ भ० ॥

॥जं०॥३॥ षडगणुं धातकी चैत्य जुहारे, बत्रीशगणुं फल पुष्कर विहारे ॥ज०॥ पु०॥४॥ तेहथी तेरसगणुं मेरु चैत्य जुहारे, सहसगणुं फल समेतशिखरे ॥ ज०॥स०॥ ॥५॥ लाखगणुं फल अंजनगिरी जुहारे, दशलाखगणुं फल अष्टापद गिरनारे ॥ज०॥ अ० ॥ ६ ॥ कोडीगणुं फल श्री शत्रुंजे भेटे, जेमरे अनादिनां दुरित उमेठे ॥ ज० ॥ दु० ॥ ७ ॥ भाव अनंत अनंतफल पावे, ज्ञानविमलसूरि इम गुण गावे ॥ ज० ॥ इम० ॥८॥ इति स्तवनं संपूर्ण॥ अहीं जयतिहुअण कहेवुं, पछी त्रीश नवकार गणवा, पछी श्री शत्रुंजयायनमः॥ एवं एकवीश नाम सिद्धगिरीनां नमस्कारपूर्वक गणवां, पछी भंडार ढोंवंवो एटले रूपानाणुं मूकवुं, पछी त्रीश खमासमण देवां, पछी त्रीश प्रदक्षिणा देवी. इति देववंदनना त्रीजो जोडो.



॥ अथ देववंदननो चोथो जोडो ॥

॥ अहीयां पूर्वोक्त वस्तु सर्व चालीश चालीश ढोवत्री, तेमज अखीयाणुं पण मूकवुं अने बीजो पण सर्व विधि करवो ॥

॥ अथ त्रण चैत्यवंदन लिख्यते ॥

॥ श्री शत्रुंजय सिद्धक्षेत्र, पुंमरिकगिरी साचो ॥ विमलाचल ने तिर्थराज, जस महिमा जाचो ॥ मुक्तिनिलय शतकूट नाम, पुष्पदंत भणीजे ॥ महापद्म ने सहस्त्रपत्र, गिरीराज कहीजे ॥ इत्यादिक बहु भांतिशुं ए, नाम जपो निराधार ॥ धीरवीमल कविराजनो, शिष्य कहे सुखकार ॥१॥ इति प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ अथ द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ रजत कनकतणि जम्तिनो, भूषण विरचावो ॥ तिलक मुकुट कुंमल युगल, बेहरखा बनावो ॥ रुचिर ज्योति मोतितणा, कंठे ठवो हार ॥ कणदोरो श्रीफल करे, आपीजे सार ॥ एणिपरे बहुविध भूषणे, शोभावो जिन देह ॥ ज्ञानविमल कहे तेहने, शिववधू वरे धरी नेह ॥ २ ॥ इति द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ अथ तृतीय चैत्यवंदन ॥

॥ प्रथम देव शत्रुंजय, गिरी मंमन ॥ भवियण मन आनंद करण, डुख दोहग खंदण ॥ सुरनर किन्नर नमे तुज, भगतिशु पाया ॥ पाप पंक फेमे समब, प्रभु

त्रिभुवन राया ॥ ज्ञानविमल प्रभु तुम तणे, चरणे शरणे राखो ॥ कर जोडीने विनवे, मुक्तिमार्ग मुज दाखो ॥३॥

॥ अथ थोय जोडा बे लिख्यते ॥

॥ ऋषभदेव नमुं गुण निर्मला, दूधमांहे भेली सीतोपला ॥ विमल शैलतणा शणगार छे, भव भव मुज चित्तें ते रुचे ॥१॥ जेह अनंत थया जिन केवली, जेह हशे विचरंता ते वली ॥ जेह अशासय शासय त्रिहुं जगे, जिन पडिमा प्रणमुं नितु फगमगे ॥ २ ॥ सरस आगम अक्षर महोदधी, त्रिपदी गंग तरंग करी वधी ॥ भविक देह सदा पावन करे, दुरित ताप रजोमल अपहरे ॥३॥ जिनशासन भासनकारिका, सुर सुरी जिनआणा धारिका ॥ ज्ञानविमल प्रभुता दिये दंपती, दुरित दुष्टरणा भय झींपती ॥४॥ इति प्रथम थोय ॥

॥ अथ द्वितीय थोय जोडो ॥

॥ श्लोक ॥ मालीनीवृत्तं ॥ सवि मलि करी आवो, भावना भव्य भावो ॥ विमलगिरि वधावो, मोतीयां थाल लावो ॥ जो होय शिव जावो, चित्त नो वात भावो ॥ न होय दुश्मन दावो. [illegible] रचावो ॥

॥१॥ शुभ्न केशर घोळी, मांहे कर्पूर चोळी ॥ पहेरी सित पटोळी, वासीयें गंध धूळी ॥ भरी पुष्कर नोळी, टाळिये दुःख होळी ॥ सवि जिनवर टोळी, पूजिये भाव भोळी ॥ २ ॥ शुभ्न अंग अग्यार, तेम उपांग बार ॥ वळी मूळ सूत्र चार, नंदी अनुयोग द्वार ॥ दश पयन उदार, छेद षट्वृत्ति सार ॥ प्रवचन विस्तार, भाष्य निर्युक्ति सार ॥ ३ ॥ जय जय जय नंदा, जैनदृष्टि सूरिंदा ॥ करे परमानंदा, टाळता दुःख दंदा ॥ ज्ञानविमल सूरिंदा, साम्य माकंद कंदा ॥ वर विमल गिरिंदा, ध्यानथी नित्य भद्दा ॥४॥ इति द्वितीय थोय जोमो ॥

॥ अथ स्तवन लिख्यते ॥

॥ ए गिरुउ गिरी राजीउ, पणमीजे भावे ॥ भवभव संचित आकरां, पातकमां जावे ॥ वज्रलेप सम जे होवे, ते पण तेम दूरें ॥ एहनुं दर्शन कीजीये, धरी भक्ति पडूरें ॥१॥ चंद्रशेखर राजा थयो, निज भगिनी लुब्धो ॥ ते पण ए गिरी सेवतां, क्षणमांहे सिध्यो ॥ २ ॥ शुकराजा जय पामीयो, एहने सुपसाये ॥ गोहत्यादिक पाप जे, ते दूर पलाये ॥ ४ ॥ अगम्य अपेय अभक्ष जे, कीधां

जेणे प्राणी ॥ ते निर्मल इण गिरीये थया, ए जिनवर वाणी ॥ ५ ॥ वाघ सर्प प्रमुखा पशु, ते पण शिव पाम्या ॥ ए तीरथ सेव्याथकी, सवि पातक वाम्या ॥ ६ ॥ चैत्रीपुनमे वंदतां, टले दुःख कलेश ॥ ज्ञानविमल प्रभुता घणी, होये सुजस विशेष ॥ ७ ॥ इति स्तवनं ॥

॥ अहीं भक्तामर अथवा कल्याणमंदिर कहेवुं, पछी चालीश नवकार गणवा, श्री सिद्धाचलजीनां एकवीश नाम नमस्कारपूर्वक गणवां, पछी भंडार मूकवो, चालीश खमासमण देवां, चालीश प्रदक्षिणा देवी ॥ इति देववंदननो चोथो जोडो समाप्त ॥

॥ अथ देववंदननो पांचमो जोडो ॥

॥ अहींयां पूर्वोक्त सर्व वस्तु प्रत्येके पचाश पचाश ढोववी, तेमज अखीयाणुं अने श्रीफल पण ढोववां. बीजो पण पूर्वली परे सर्व विधि करवो.

॥ अथ प्रथम चैत्यवंदन प्रारंभः ॥

॥ शेत्रुंज शिखरे चढिय स्वामि, कहीये हुं अर्चिशुं ॥ रायण तरुयरतले पाय, आणंदे अरचिशुं ॥ न्हवण विलेपन पूजना, करी आरती उतारीश ॥ मं-

गल दिपक ज्योति थुति, करी दुरित निवारीश ॥ धन्य धन्य ते दिन माहरो ए, गणीश सफल अवतार ॥ नय कहे आदिश्वर नमो, जिम पामो जयकार ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ तुज मूर्त्तिने निरखवा, मुज नयणां तरसे ॥ तुम गुण गणने बोलवा, रसना मुफ हरखे ॥ काया अति आणंद मुज, तुम युगपद फरसे ॥ तो सेवक तारया विना, कहो किम हवे सरशे ॥ एम जाणीने साहेबा ए, नेक नजरे मोहि जोय ॥ ज्ञानविमल प्रनु सुनजरथी, ते शुं जे नवि होय ॥ २ ॥ इति द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ अथ तृतिय चैत्यवंदन ॥

॥ मादल ताल कंसाल सार, नुंगलने नेरी ॥ ढोल ददामा दम्वम्मी, शरणाइ नफेरी ॥ श्री मंम्मल वीणा रबाप, सारंगी सारी ॥ तंबूरा कठ ताल शंख, फल्लरी फणकारी ॥ वाजित्र नव नव छंदशुं ए, गाउं गुणीजन गीत ॥ ज्ञानविमल प्रनुता लहो, जिम होये जगे जसरीत ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय जोमा बे लिख्यते ॥

॥ जिहां नगएयोतेर कोडाकोमी, तेम पंचाशी लख-

ठी जोमी, चुम्मालीश सहस्स कोमी॥ समवसरया जिहा एती वार, पूर्व नवाणुं एम प्रकार, नाभि नरिंद मल्हार ॥ १॥ सहस कूट अष्टापद सार, जिन चोवीशतणा गणधार, पगलांना विस्तार ॥ वली जिनबिंबतणो नहीं पार, देहेरी थंभे बहु आकार, वंदूं विमलगिरी सार ॥२॥ एंशी सीतेर साठ पंचास, बार जोयणमाने जस विस्तार, इगती चउपण आर ॥ मान कह्युं एहनुं निरधार, महिमा एहनो अगम अपार, आगममांहे उदार ॥ ३॥ चैत्रीपुनम दिन शुभ भावे, समकितदृष्टि सुर नर आवे, पुजा विविध रचावे॥ ज्ञानविमलसूरि भावना भावे, दुरगति दोहग दूर गमावे, बोधबीज जस पावे॥४॥ इति॥

॥ अथ द्वितीय थोय जोडो ॥

शेत्रुंज साहेब प्रथम जिणंद, नाभिभूप कुल कमल जिणंद, मरुदेवीनो नंद ॥ जस मुख सोहे पुनमचंद, सेवा सारे इंद्र नरिंद, उन्मूले दुःख दंद॥ वांछित पूरण सुरतरु कंद, लंछन जेहने सुरभि नंद, फेमे भव भय फंद ॥ प्रणमे ज्ञानविमल सूरिंद, जेहनी अहोनिश पद अरविंद, नामे परमानंद ॥ १ ॥ श्री सीमंधर जिनवर

राजे, महाविदेहे वार समाजे, भावे इम भविकाजे ॥ सिद्धक्षेत्र नामे गिरी राजे, एहज भरतमांहे ए गाजे, भवजळ तरण जहाजे ॥ अनंत तिर्थंकर वाणी गाजे, भवि मन केरा संशय भांजे, सेवक जनने निवाजे ॥ वाजे ताल कंसाल पवाजे, चैत्री महोत्सव अधिक दीवाजे, सुरनर सजी बहु साजे ॥ २॥ रागद्वेष विष खीलण मंत, भांजी भवभय भावठ भ्रांत, टाले दुःख दुरंत ॥ सुख संपत्ति होये जे समरंत, ध्याये अहोनिश सघला संत, गाये गुण महंत ॥ शिवसुंदरी वश करवा तंत, पाप ताप पीलण ए जंत, सुणीए ते सिद्धांत ॥ आणी मोटी मननी खांत, भवियण ध्यावो एकण चित्त, रान वेला जल हुंत ॥ ३ ॥ आदिजिनेश्वर पद अनुसरती, चतुरंगुल उंची रहे धरती, दुरित उपद्रव हरती ॥ सरस सुधारस वयण झरंती, ज्ञानविमल गिरी सानिध्य करंती, दुश्मन दुष्ट दलंती॥ दाडिम पक्क कलीसम दंती, ज्योतिगुण इहां राजी पंती, समकित बीज वपंती ॥ चक्केसरी सुरसुंदरी हुंती, चैत्रीपुनम दिने आवंती, जय जयकार भणंती ॥ ४ ॥ इति द्वितीय थोय जोडो ॥

॥ अथ स्तवन प्रारंभः ॥

॥ तीरथ वारु ए तीरथ वारु, सांभलजो सो तारु रे॥ भवजलनिधि तरवा भविजनने, प्रवहण परे ए तारु रे॥ ॥ती० ॥ १ ॥ ए तीरथनो महिमा मोटो, नवि माने ते कारु रे॥ पार न पामे कहेतां कोइ, पण कहिये मति सारु रे॥ती०॥ २॥ साधु अनंता इहांकणे सिधा, अंत कर्मना कीधा रे॥ अनुभव अमृतरस जिणे पीधा, अभयदान जगे दीधां रे ॥ ती० ॥ ३॥ नमि विनमि विद्याधर नायक, द्रविड वारिखिल्ल जाणो रे॥ थावच्चा शुको सेलग पंथग, पांडव पांच वखाणो रे ॥ ती०॥४॥ राम मुनि ने नारद मुनिवर, शंख प्रद्युम्नकुमार रे॥ महानंदपद पाम्या तेहना, मुनिवर बहु परिवारो रे ॥ ती० ॥ ५॥ तेह भणी सिद्धक्षेत्र एहनुं, नाम थयुं निरधार रे॥ शत्रुंजय कल्पे माहात्मये, एहनो बहु अधिकार रे॥ ती० ॥६॥ तीरथ नायक वांछित दायक, विमलाचल जे पावे रे॥ ज्ञानविमलसूरि कहे ते भविने, धर्म शर्म घरे आवे रे ॥ ती०॥७॥ इति स्तवनं समाप्तं॥ ए देव वांदवाना पांचमा जोडानो विधि थयो॥ इहां पछवाडेथी चैत्यवंदनभाष्य कहेवुं॥

॥ अथ श्री ज्ञानविमलसूरि कृत अगीआर गणधरना देववंदन प्रारंभः ॥

॥ तत्र प्रथम श्री इंद्रभूतिजी देववंदनं ॥

॥ एनो विधि आवी रीते के, प्रथम थापना थापी इरियावही पडिकमीने चैत्यवंदन कहेवुं. ते लखे छे.–

॥ अथ चैत्यवंदन प्रारंभः ॥

॥ बिरुद धरी सर्वज्ञनुं, जिन पासे आवे ॥ मधुर वचने वीरजी, गौतम बोलावे ॥ पंचभूतमांहे थकी, ए भपसे विणसे ॥ वेद अरथ विपरीतथी, कहो किम भव तरशे ॥ दान दया दम त्रिहुं पदे ए, जाणे तेहीज जीव ॥ ज्ञानविमल धन आतमा, सुख चेतना सदैव ॥ इति चैत्यवंदन समाप्त ॥ इहां जंकिंचि नामतिछं, नमुथ्थुणं० अरिहंत चेइयाणं कही एक नवकारनो काउस्सग्ग करी नमो अरिहंताणं संपूर्ण कहीने पछी थोयो कहीये ते लखीये छैये.

॥ अथ थोयो लिख्यते ॥

॥ कनक तिलक भाले ॥ ए देशी ॥ मालिनीवृत्तम् ॥ गुरु गणपति गाउं, गौतम ध्यान ध्याउं ॥ सवि

कृत सवाउं, विश्वमां पूज्य थाउं ॥ जग जीत बजाउं, र्मने पार जाउं ॥ नवनिधि रिद्धि पाउं, शुद्ध समकेत गाउं ॥ १ ॥ सवि जिनवर केरा, साधुमांहे वडे- ॥ जगवन अधिकेरा, चउदसय शुन्न लेरा ॥ व्या ऊत आंधेरा, वंदीये ते सवेरा ॥ गणधर गुण घेरा, नाम तेह मेरा ॥ २ ॥ सवि संशय कापे, जैन चारित्र गा- ॥ तव त्रिपदी आपे, शिष्य सौन्नाग्य व्यापे ॥ गणधरपद थापे, द्वादशांगी समापे ॥ जवडुःख न संतापे, ासने छष्ट आपे ॥ ३ ॥ करे जिनवर सेवा, जेह इंद्रादि वा ॥ समकित गुण मेवा, आपता नित्य मेवा ॥ जव जल निधि तरेवा, नौ समी तीर्थ सेवा ॥ ज्ञानविमल लहेवा, लील लब्धी वरेवा ॥ ४ ॥ इति थोयो ॥ इहां नमुथ्थुणं० जावंति अने नमो० कहीने स्तवन कहीये. ते लखे ठे.

॥ अथ गौतम स्तवन प्रारंन्नः ॥

॥ सकल समीहित पूरणो, गुरु गौतमस्वामि ॥ इंद्रन्नूति नामे जलो, प्रणमुं शिर नामि ॥ हा० ॥ १ ॥ मगध देशमां उपन्यो, गोबर इति गाम ॥ वसुन्नूति द्विज पृथिवीतणो, नंदन गुण धाम ॥ २ ॥ ज्येष्ठ न-

क्षेत्रे जण्यो, सोवनवन देह ॥ वरस पंचाश घरे वसी, धरयो वीरशुं नेह ॥ ३ ॥ त्रीश वरस छद्मस्थनो, पर्याय आराधे ॥ बार वरस लगे केवली, पछी शिवसुख साधे ॥ ४ ॥ वीर मोक्ष पहोत्या पछी, लह्या केवल मुक्ते ॥ राजगृहे ते पामीया, सवि लब्धिनी शक्ते ॥ ५ ॥ बाणुं वरस सवि आउखुं, थया मास संलेषे ॥ जेहने शिर निज कर दीये, ते केवल देखे ॥६॥ पंचसया मुनिनो धणी, सवि श्रुतनो दरियो ॥ ज्ञानविमल गुणथी जिणे, तारयो निज परियो ॥७॥ इति गौतम स्तवनं ॥

अहीयां जयवीयराय संपूर्ण कहीये, पछी गौतम स्वामि सर्वज्ञायनमः ॥ ए पाठ अगीयारवार गणीये, पछी अगीयार नवकार गणीये, पछी उभा थइने श्री गौतमस्वामि गणधर आराधनार्थं करेमि काउस्सग्गं. एम कही अगीयार लोगस्सनो काउस्सग्ग करी एक लोगस्स प्रगट कहीये. ए श्री प्रथम गणधरदेवने वांदवानो विधि संपूर्ण थयो. एज रीते बीजा दश गणधरोने पण वांदवा. परंतु प्रत्येक गणधरनुं नाम, नमस्कार, स्तुति अने स्तवन, ए चार जूदां कहेवां. तेमां पण वळी

चार थोयो मांहेली पाछली त्रण थोयो तो तेहीज कहीये, अने एक प्रथम थोयमां गणधर देवनुं नाम फेरवाय छे माटे ते प्रत्येक गणधरनी जूदी करेली छे. ए रीते सर्वत्र विधि जाणवो.

॥ अथ द्वितीय श्री अग्निभूतिजी देववंदनं ॥

॥ तत्र प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ कर्मतणो संशय धरी, जिन चरणे आवे ॥ अग्निभूति नामे करी, तव ते बोलावे ॥ एक सुखी एक छे दुःखी, एक किंकर स्वामी ॥ पुरुषोत्तम एक करी, केम शक्ति पामी ॥ कर्मतणा परभावथी ए, सकल जगत मंमाण । ज्ञानविमलथी जाणीये, वेदारथ सुप्रमाण ॥ इति चैत्यवंदन ॥

॥ अथ थोयो प्रारंभः ॥

॥ मालिनीवृत्तम् ॥ अग्निभूति सोहावे, जेह बीजो कहावे, गणधरपद पावे, बंधुने पक्ष आवे ॥ मन संशय जावे, वीरना शिष्य थावे ॥ सुरनर गुण गावे, पुष्पवृष्टि वधावे ॥ १ ॥ ए प्रथम थोय कहीने पछी फरी प्रथम गणधरना वंदनमां जे "सवि जिनवर केरा" ए त्रण थोयो कहेली छे ते कहीये ॥ इति थोयो ॥

॥ अथ स्तवन् प्रारंभः ॥

॥ बीजो गणधर गाइये, अग्निभूति इति नाम ॥ ललना ॥ वसुभूति द्विज पृथिवी मायनो, नंदन गुण अभिराम ॥ ल० ॥१॥ बी० ॥ गोबर गाम मगध देशे, गौतम गोत्र रतन्न ॥ ल० ॥ कृत्तिका नक्षत्रे जनमियो, संशय कर्मनो मर्म ॥ल०॥२ ।बी०॥ वरस छेतालीश घर वस्या, व्रत पर्याये बार ॥ल०॥ शोल वरस केवल-पणे, पंचसयां परिवार ॥ ल० ॥ ३ ॥ बी० ॥ चिहुंत्तेर वरसनुं आउखुं, पाळी पाम्या सिद्धि ॥ल०॥ मासभक्त संलेषना; पूर्ण ऋद्धि समृद्धि ॥ल०॥ ४॥बी०॥ वीर थकां शिव पामीया, राजगृही सुखकार ॥ल०॥ कंचन-कांति झलहले, ज्ञानविमल गुणधार॥ल० ॥५॥ बी० ॥

॥ इति श्री अग्निभूति स्तवनं संपूर्णम् ॥

॥अथ तृतिय श्री वायुभूतिजी देववंदनं॥

॥ तत्र प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ वायुभूति त्रीजो कह्यो, तस संशय एह ॥ जीव शरीर बेहु एक छे, पण भिन्न न देह ॥ १॥ ब्रह्मज्ञान तपे करी, ए आतम लहीये ॥ कर्म शरीरथी वेगळो,

ए वेद सद्दहिये ॥ २ ॥ ज्ञानविमल गुण घन घणीए, जन्मां केम होय एक ॥ वीर वयणथी ते लह्यो, आणी हृदय विवेक ॥ ३ ॥ इति चैत्यवंदन ॥

॥ अथ थोयो प्रारभ्यते ॥

॥ मालिनीवृत्तम् ॥ वायुभूति वली भाइ, जेह त्रीजो सहाइ ॥ जिणे त्रिपदी पाइ, जीतभंभा वजाइ ॥ जिनपद अनुयायी, विश्वमां कीर्ति गाइ ॥ ज्ञानविमल भलाइ, जेहने नामे पाइ ॥ १ ॥ तथा "सवि जिनवर केरा" इत्यादि त्रण थोयो कहेवी ॥ इति थोयो ॥

॥ अथ स्तवन प्रारंभः ॥

॥ त्रीजो गणपति गाइये, वसुभूति पृथिवी नंद ला- लरे ॥ स्वातिनक्षत्रे जाइऊ, गौतम गोत्र अमंद ॥ ला० ॥ ॥ १ ॥ त्री० ॥ मगध देश गाम गोबरे, सगा सहोदर तीन ॥ ला० ॥ वरस बेंतालीश घरे वस्या, पछे जिन चरणे लीन ॥ ला० ॥ २ ॥ त्री० ॥ छद्मस्थ दश वरसनो, केवली व- रस अढार ॥ ला० ॥ कंचनवन सवि आउखुं. सित्तेर वरस उदार ॥ ला० ॥ ३ ॥ त्री० ॥ राजगृहीये शिव पा- मीया, मास भगत सुखकार ॥ ला० ॥ पांचसें परिकर

साधतो, सवि श्रुतनो भंमार ॥ ला० ॥ ४ ॥ त्री० ॥ वीर
छते थया अणसणी, लब्धि सिद्धि दातार ॥ ला० ॥
ज्ञानविमल गुण आगरु, वायुभूति अणगार ॥ ला० ॥
॥ ५ ॥ त्रीजो० ॥ इति वायुभूति स्तवनम् ॥

॥ अथ चतुर्थ श्री व्यक्तजी देववंदनं ॥

॥ तत्र प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ पंचभूतनो संशयी, चोथो गणि व्यक्त ॥ इंद्रजा-
लपरे जग कह्यो, तो किम तस सक्त ॥ १ ॥ पृथिवी
पाणी देवता, इम भूतनी सत्ता ॥ पण अध्यातम चिं-
तने, नहि तेहनी ममता ॥ २ ॥ इम स्याद्वादमत क-
रीए, टाल्यो तस संदेह ॥ ज्ञानविमल जिन चरणशुं,
धरतो अधिक सनेह ॥ ३ ॥ इति चैत्यवंदन ॥

॥ अथ थोयो प्रारभ्यते ॥

॥ मालिनी वृत्तम् ॥ चोथो गणधर व्यक्त, धर्म कर्मे
सुसक्त ॥ सुर नर जस भक्त, सेवता दिवस नक्त ॥ जि-
नपद अनुरक्त, मूढता विप्रमुक्त ॥ कृत करम विमुक्त,
ज्ञान लीला प्रसक्त ॥१॥ तथा "सवि जिनवर केरा"
ए त्रण थोयो कहेवी ॥ इति थोयो ॥

॥ अथ स्तवन प्रारंभः ॥

(झुंबखडानी देशी.)

॥ चोथो गणधर चोंपशुं रे, वंदूं चित्त धरी भाव ॥ सलूणे साजनां ॥ कोल्लाग सन्निवेशे थयो रे, पाम्यो भवजल नाव ॥ स० ॥ १ ॥ धनमित्र द्विज वारुणी प्रिया रे, नंदन दिये आणंद ॥स०॥ श्रवणनक्षत्रे जनमियो रे, भारद्वाज गोत्र अमंद ॥स०॥२॥ वरस पचास घरे रह्या रे, बार छद्मस्थ पर्याय ॥स०॥ वरस अढारह केवली रे, वरस एंशी सवि आय ॥ स० ॥ ३ ॥ पांचशें शिष्य कंचनवने रे, संपूरण श्रुत लब्धि ॥ स० ॥ मास भगतराज गृहे रे, वीर थके लह्या सिद्धि ॥स०॥४॥ पढम संघयण संस्थान छे रे, वीरतणो ए शिष्य ॥स०॥ ज्ञानविमल तेजे करी रे, दीपे अधिक जगीश ॥ स० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ पंचम श्री सुधर्माजी देववंदनं ॥

॥ तत्र प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ सोहमस्वामिने मने, छे संशय एहवो ॥ जे इहा होये जेहवो, परभवे ते तेहवो ॥१॥ शाली थकी शाली नीपजे, पण भिन्न न थाय ॥ सुणी एहवो निश्चय नथी,

इम कहे जिनराय ॥ २ ॥ गोपयथी विंठी होये ए, एम विसदृश पण होय ॥ ज्ञानविमल मतिशुं करी, वेदारथ शुद्ध जोय ॥ ३ ॥ इति चैत्यवंदन ॥

॥ अथ थोयो प्रारभ्यते ॥

॥ मालिनीवृत्तम् ॥ गणधर अभिराम, सोहम स्वामि नाम ॥ जित दुर्जय काम, विश्वमां वृद्धिमाम ॥ दुप्पसह गणि जाम, तिहां लगे पट्ट ठाम ॥ बहु दोलत दाम, ज्ञानविज्ञान धाम ॥ १ ॥ तथा "सवि जिनवर केरा" इत्यादि त्रण थोयो कहेवी ॥ इति ॥

॥ अथ स्तवन प्रारंभः ॥

(देशी नायकानी.)

॥ सोहमगणधर पांचमा रे लाल, अग्निवेसायन गोत्र ॥ सुखकारी रे ॥ कोल्लागसन्निवेशे थयो रे लाल, भद्दिला धम्मिल पुत्र ॥ सु० ॥ १ ॥ सो० ॥ उत्तराफाल्गुनीये जणयो रे लाल, पंचसया परिवार ॥ सु० ॥ वरस पचास घरे रह्या रे लाल, व्रत बेंतालीश सार ॥ सु० ॥ २ ॥ सो० ॥ आठ वरस केवलीपणे रे लाल, एक शत वरसनुं आय ॥ सु० ॥ वाधे पट्ट परंपरा रे लाल, आज लगे जस थाय ॥ यावत्

दुप्पसह राय ॥ सु० ॥ ३ ॥ सो० ॥ संपूरण श्रुतना धणी रे लाल, सर्व लब्धि भंडार ॥ सु० ॥ वीश वरस जिनथी पछीरे लाल, शिव पाम्या जयकार ॥ सु० ॥ ४ ॥ सो० ॥ उदय अधिक कंचनवनेरे लाल, शत शाखा विस्तार ॥ सु० ॥ नाम थकी नवनिधि लहेरे लाल, ज्ञानविमल गणधार ॥ सु० ॥ ५ ॥ सोहम० ॥ इति ॥

॥ अथ षष्ठ श्री मंडितजी देववंदन ॥

॥ तत्र प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ छठो मंडित बंभणो, बंध मोक्ष न माने ॥ व्यापक विगुण जे आतमा, ते किम रहे छाने ॥ १ ॥ पण सावरण थकी नहे, केवल चिद्रुप ॥ तेह निरावरण थइ, होये ज्ञान सरूप ॥ २ ॥ तरणि किरण जेम वादल ए, होय निस्तेज सतेज ॥ ज्ञानगुणे संशय हर्यो वीर चरणे करे हेज ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोयो प्रारभ्यते ॥

॥ मालिनीवृत्तम् ॥ गणित मंडित वारु, जेह छठो करारु ॥ भवजलनिधि तारु, दीसतो जे दिदारु ॥ सकल लबधि धारु, कामगद तीव्र दारु ॥ दुशमन भय

वारु तेहने ध्यान सारु ॥ १ ॥ तथा "सवि जिनवर केरा" इत्यादि त्रण थोयो कहेवी ॥ इति ॥

॥ अथ स्तवन प्रारंभः ॥

॥ जीहो छठो मंम्डित गणधरु, जीहो मोरी सान्निवेश गाम ॥ जीहो विजया माता जेहनी, जीहो धनदेव जनकनुं नाम ॥ १ ॥ भविक जन वंदो गणधर देव ॥ जीहो वीर तणी सेवा करे, जीहो भाव धरी नित्य मेव ॥भ०॥ ए आंकणी ॥ जीहो जनम नक्षत्र जेहनुं मघा, जीहो वरस त्रेपन्न घरवास ॥ जीहो चौद वरस छद्मस्थमां, जीहो केवल शोलह वास ॥ भ० ॥ २ ॥ जीहो त्याशी वरस सवि आउखुं, जीहो सयल लब्धि आवास ॥ जीहो संपूरण श्रुतनो धणी, जीहो कंचनवरणे खास ॥ ॥ भ० ॥ ३ ॥ जीहो मास तणी संलेषणा, जीहो आराधी अति सार ॥ जीहो वीर छते शिव पामीया, जीहो छठ सया परिवार ॥ भ० ॥ ४ ॥ जीहो वशिष्टगोत्र सोहामणुं, जीहो नाम थकी सुख थाय ॥ जीहो ज्ञानविमल गणधर तणा, जीहो वाधे सुजश सवाय ॥ भ० ॥ ५ ॥ इति ष० [illegible] स्तवनम् ॥

॥ अथ सप्तम मौर्यपुत्र देववंदनं ॥

॥ तत्र प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥सातमो मौर्यपुत्र जे, कहे देव न दीसे॥ वेद पदे जे भांखिया, तिहां मन नवि हीसे ॥१॥ जज्ञ करतो लहे सर्ग, ए वेदनी वाणी ॥ लोकपाल इंद्रादिक, सत्ता किम जाणी॥२॥ इम संदेह निराकरीए, वीर वयणथी तेह ॥ ज्ञानविमल जिनने कहे, हुं तुम पगनी खेह ॥३॥ इति॥

॥ अथ थोयो प्रारभ्यते ॥

॥ मालिनीवृत्तम् ॥ मौर्यपुत्र गणीश, सातमो वीर शिष्य ॥ नहि रागने रीश, जागती छे जगीश ॥ नमे सुरनर ईश, अंग लक्षण छतीश ॥ ज्ञानविमल सूरिश, संथुणे राति दीस ॥ १ ॥ तथा " सवि जिनवर केरा " इत्यादि त्रण थोयो कहेवी ॥ इति ॥

॥ अथ स्तवन प्रारंभः ॥

(कर्म न छूटे रे प्राणीया–ए देशी.)

॥ मौर्यपुत्र गणि सातमो, मौर्य सन्निवेश गाम ॥ देवी विजया रे मावडी, मौरीय जनकनुं नाम ॥१॥ वंदो गणधर गुणनीलो ॥ ए आंकणी ॥ रोहिणी नक्षत्र जेहनुं, जनमे

चंदशुं जोग ॥ पांसठ वरस घरे रह्या, दश चउ छउमस्थे जोग ॥ वं० ॥ २ ॥ शोळ वरसळगे केवळी, वरस पंचाणुं रे आय ॥ त्रणसय मुनिवर जेहने, परिवारे सुखदाय ॥ ॥ वं० ॥ ३ ॥ संपूरण श्रुतनो धणी, कंचन कोमळ गात्र ॥ लब्धि सयलना रे आगरु, काश्यपगोत्र विख्यात ॥ ॥ वं० ॥ ४ ॥ वीर छते शिवसुख लह्या, मास संलेषण लीध ॥ राजगृहे गुणना धणी, ज्ञानविमळ सुख दीध ॥ वंदो० ॥ ५ ॥ इति सप्तम गणधर स्तवनम् ॥

॥ अथ अष्टम श्री अकंपितजी देववंदनं ॥

॥ तत्र प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ अकंपति द्विज आठमो, संशय छे तेहने ॥ नारक होय परलोकमां, ए मिथ्या जनने ॥ १ ॥ जे द्विज शूद्रासन करे, तस नारक सत्ता ॥ दाखी वेदे नवि कहे, ए तुज उन्मता ॥ २ ॥ मेरु परे शाश्वत कहे ए, प्रायिक एहवी भांखी ॥ ते संशय दूरे कर्यो, ज्ञानविमळ जिन साखी ॥ ३ ॥ इति चैत्यवंदन ॥

॥ अथ थोयो प्रारभ्यते ॥

॥ माळिनीवृत्तम् ॥ अकंपित नमीजे, आठमो जे

कहीजे, तस ध्यान धरीजे, पाप संताप छीजे॥ समकित सुख दीजे, प्रहसमे नाम लीजे, दुशमन सवि खीजे, ज्ञानलीला लहीजे ॥१॥ तथा " सवि जिनवर केरा " इत्यादिक त्रण थोयो कहेवी ॥ इति ॥

॥ अथ स्तवन लिख्यते ॥

(वाडी फूली अति भली, मनभमरा रे–ए देशी.)

॥ अकंपति नामे आठमो ॥ भवि वंदो रे ॥ गणधर गुणनी खाण॥ सदा आणंदो रे॥ मिथिला नगरी दीपती ॥ भ० ॥ गोतम गोत्र प्रधान ॥ स० ॥१॥ देवनामे जेहनो पिता ॥भ०॥ जयंती जस मात ॥स०॥ उत्तराषाढाये जण्यां ॥भ०॥ चातुर्वेदी कहाय ॥स०॥२॥वरस अडतालीश घर रह्या ॥भ०॥ छद्मस्थे नववास ॥ स० ॥ एकवीश वरस लगे केवली ॥भ०॥ वीर चरणकज वास ॥ स० ॥३॥ वरस अठयोत्तेर आउखुं ॥भ०॥ त्रणसय मुनि परिवार ॥स०॥ संपूरण श्रुतकेवली ॥भ०॥ लब्धि तणा भंडार॥स०॥४॥ कंचनवन मास अणसणी॥भ०॥ वीर छते गुण गेह ॥स०॥ राजगृहे शिव पामिया ॥भ०॥ ज्ञानगुणे नव मेह ॥स०॥५॥ इति अष्टम गणधर स्तवनं॥

॥ अथ नवम श्री अचलभ्रातजी देववंदनं ॥

॥ तत्र प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ अचलभ्रातने मन वश्यो, संशय एक खोटो ॥ पुण्य पाप नवि देखीये, ए अचरिज मोटो ॥१॥ पण प्रत्यक्ष देखीए, सुख दुःख घणेरां ॥ बीजानो परे दाखीयां, वेदपदे बहोत्तेरां ॥ २ ॥ समजावीने शिष्य कर्यो ए, वीरे आणीने नेह ॥ ज्ञानविमल पाम्या पछी, गुण प्रगटया तस देह ॥ ३ ॥ इति चैत्यवंदन ॥

॥ अथ थोयो प्रारभ्यते ॥

॥ मालिनीवृत्तम् ॥ नवमो अचलभ्रात, विश्वमां जे विख्यात ॥ सुतनंदा मात, धर्म कुंदावदात ॥ कृत संशय पात, संयमे पारीजात ॥ दलित दुरित व्रात, ध्यानथी सुखशात ॥१॥ तथा "सवि जिनवर केरा" इत्यादि त्रण थोयो कहेवी ॥ इति थोयो संपूर्ण ॥

॥ अथ स्तवन प्रारंभः ॥

(नमो रे नमो श्री शत्रुंजा गिरिवर—ए देशी.)

॥ नवमो अचलभ्रात कहीजे, गणधर गिरुयो जाणो रे ॥ कोशलानगरीए उपनो, हारियगोत्र वखाणो

रे ॥ १ ॥ भाव धरीमे भवियण वंदो ॥ ए आंकणी ॥ नंदा नामे जेहनी माता, वसुदेव जनक कहीजेरे ॥ मृगशिर नक्षत्र जन्मतणुं जस, कंचन कांति भणीजेरे ॥भा०॥ २॥ वरस छेताळीश घरमां वसीया, रसीया व्रते वरष बारे री ॥ चउद वरस केवलपर्याये, तीन सया परिवारे री ॥भा०॥ ३॥ बहोत्तेर वरस आउ परिमाणे, लब्धि सिद्धि सुविलासी री॥ संपूरण श्रुतधर गुणवंता, वीर चरण नितु वासी री ॥ भा० ॥ ४॥ वीर छते राजगृही नगरे, मासभगत शिव पाम्या री ॥ ज्ञानविमल गुणथी सवि सुरवर, आवी चरणे नम्या री ॥ भाव० ॥ ॥ ५ ॥ इति नवम गणधर स्तवनम् ॥

॥ अथ दशम श्री मेतार्यजी देववंदन ॥

॥ तत्र प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ परभवनो संदेह छे, मेतार्य चित्ते ॥ भांखे प्रभु तव तेहने, दाखी बहु जुगते ॥ १ ॥ विज्ञानघन पद तणो, ए अर्थ विचारे ॥ परलोके गमनागमे, मन निश्चय धारे ॥ ॥२॥ पूर्वारथ बहुपरे कही ए, छेद्यो संशय तास ॥ ज्ञान विमल प्रभु वीरने, चरणे थयो ते दास ॥३॥ इति ॥

॥ अथ थोयो प्रारभ्यते ॥

॥ मालिनीवृत्तम् ॥ दशम गणधर वखाणो, आर्य मेतार्य जाणो, लह्यो शुभ गुणठाणो, वीर सेवा मंमाणो ॥ अठे एहिज टाणो, कर्मने वाज आणो, ए परम ऊ-जाणो, ज्ञानगुण चित्त आणो ॥१॥ तथा 'सवि जिनवर केरा' इत्यादि त्रण थोयो कहेवी ॥ इति थोयो ॥

॥ अथ स्तवन प्रारंभः ॥

॥ आदर जीव क्षमागुण आदर—ए देशी ॥

॥ मेतारज आरज गणी दशमो, सुप्रभाते नित्य नमीयेरे ॥ वत्स भूमि तुंगिय सन्निवेशे, तेहने ध्याने रमियेरे ॥१॥ गणधर गुणवंताने वंदो ॥ ए आंकणी ॥ वरुणदेवा जेहने छे माता, दत्त जनक जस कहियेरे ॥ कोम्मिनगोत्र नक्षत्र जन्मनुं, अश्विनी नामे ल-हीयेरे ॥ गणधर० ॥ २ ॥ वरस छत्रीश रह्या घरवासे, छद्मस्थ दश वरिसाजी ॥ शोल वरस केवलीपर्याये, त्रणशें मुनिवर शिष्याजी ॥ ग० ॥ ३ ॥ बासठ वरस सवि आउखुं पाली, त्रीपदीना विस्तारीजी ॥ कनक कांति सवि लब्धि सिद्धिना, ज्ञानादिक गुण धारीजी

॥ ग० ॥ ४ ॥ मास संलेषण राजगृहीमां, वीर थके शिव लहीयाजी ॥ ज्ञानविमल चरणादिकना गुण, किणही न जाये कहियाजी ॥ गणधर० ॥ ५ ॥ इति दशम गणधर स्तवन ॥

॥ अथ एकादश श्री प्रभासजी देववंदन ॥

॥ तत्र प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ एकादशम प्रभास नाम, संशय मन धारे ॥ भव निर्वाण लहे नहि, जीव इणे संसारे ॥१॥ अग्निहोत्र नित्ये करे, अजरामर पामे ॥ वेदारथ इम दाखवे, तस संयम वामे ॥ २ ॥ वीर चरणनो रागीयो ए, तेह थयो ततकाल ॥ ज्ञानविमल जिन चरणतणी, आण वहे निज भाल ॥ ३ ॥ इति चैत्यवंदन ॥

॥ अथ थोयो प्रारभ्यते ॥

॥ मालिनीवृत्तम् ॥ एकादश प्रभास; पूरतो विश्व आस ॥ सुरनर जस दास, विर चरणे निवास ॥ जग सुजस सुवास, विस्तर्यो ज्युं बरास ॥ ज्ञानविमल निवास ॥ हुं जपुं नाम तास ॥ १ ॥ तथा "सवि जिनवर केरा" इत्यादि त्रण थोयो कहेवी ॥ इति थोयो ॥

॥ अथ स्तवन प्रारंभः ॥

(कनक कमळ पगलां ठवे–ए देशी.)

॥ गणधर जे अग्यारमो ए, आशपूरण प्रभास ॥ नमो भवि भावशुं ए ॥ कोडिन गोत्र छे जेहनुं ए, राजगृहे जस वास ॥न०॥१॥ अतिभद्र जस मावडी ए, बलभद्र नामे ताय ॥न०॥ पुष्य नक्षत्रे जन्मीया ए, घर घर उत्सव थाय ॥न०॥२॥ शोळ वरस घरमां वस्या ए, आठ वरस मुनिराय ॥न०॥ शोळ वरस रह्या केवळी ए, चाळीस वरस सवि आय ॥न० ॥ ३ ॥ त्रणशय मुनि परिकर भला ए, संपूरण श्रुतधार॥न०॥ लब्धिनिधान कंचनवने ए, करता भवि उपगार ॥न०॥४॥ वीर छते शिव पामीया ए, मास संलेषण जास ॥ न०॥ ज्ञानविमल कीरति घणी ए, सुंदर जिम कैलास ॥न०॥ ५ ॥ ॥इति स्तवनं॥ इति श्री एकादश गणधर देववंदन संपूर्ण एटले गणधरएकादशी दिने देव वांदवानो विधि संपूर्ण॥

तथा प्रथम गणधरना देववंदनमां चार गाथानी चार थोय अने पछीना दश गणधरना देववंदनमां एकेक गाथानी एकेक थोय मळीने चौद गाथानुं माळीनी छंदे

कमलबंधे स्तवन पण थाय, तेमज अगियार चैत्यवंदन पण स्तवन थाय एम पण लखेलुं छे. तथा वली उपर एक चैत्यवंदन कही सर्व गणधरनां एकज देववंदन संक्षेपथी करीये, ए रीते पण विधि कह्यो छे. ते लखीये छैये.

॥ अथ अग्यारह गणधर चैत्यवंदन ॥

॥एह गणधर एह गणधर थया इग्यार वीर जिनेश्वर पयकमले. रही भृंगपरे जेह लीणा॥संशय टाली आपणा, थया तेह जिनमत प्रवीणा ॥ इंद्र महोत्सव तिहां करे ए, वासक्षेप करे वीर ॥ लब्धि सिद्धिदायक हजो, ज्ञानविमल गुणधीर ॥ १ ॥ इति चैत्यवंदन ॥

॥ अथ चैत्यवंदन ॥

॥ सयल गणधर सयल गणधर जेह जग सार, सकल जिनेसर पयकमले, रही भृंगपर जेह लीणा॥ जिनमतथी त्रिपदी लही, थया जेह स्याद्वाद प्रवीणा ॥ वासक्षेप जिनवर करे ए, इंद्र महोत्सव सार ॥ उदय अधिक दिन दिन हुवे, ज्ञानविमल गुणधार॥ १॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ चौद सयां बावन गणधार, सवि जिनवरनो ए

परिवार ॥ त्रिपदीना कीधा विस्तार, शासन सुर सवि सान्निध्यकार ॥१॥ ए थोय चारवार कहेवी ॥ इति ॥

॥ अथ स्तवन प्रारंभः ॥

(सकळ सदा फळ पास–ए देशी.)

॥ वंदू सवि गणधार, सवि जिनवरना ए सार ॥ सम चउरस संठाण, सविने प्रथम संघयण ॥१॥ त्रिपदीने अनुसारे, विरचे विविध प्रकारे ॥ संपूरण श्रुतना भरिया, सवि भवजलनिधि तरिया ॥ २ ॥ कनकवर्ण जस देह, लब्धि सकल गुणगेह ॥ गणधर नामकर्म फरसी, अजर अमर थया हरसी ॥३॥ जनम जरा भय वाम्या, शिवसुंदरी सवि पाम्या ॥ अखय अनंत सुख विलसे, तस ध्याने भवि मलशे ॥ ४ ॥ प्रहसमे लीजे ए नाम, मनोवांछित लही काम ॥ ज्ञानविमल घण नूर ॥ प्रगटे अधिक सनूर ॥५॥ सकल सुरासुर कोडी, पाय नमे कर जोडी ॥ गुणवंतना गुण कहीये, तो शुद्ध समकित लहिये ॥ ६ ॥ इति गणधर स्तवनं ॥

॥ इति श्री गणधर देववंदनं समाप्तम् ॥



॥ अथ पंडित श्री वीरविजयजी विरचित ॥
॥ चौमासी देववंदन विधि प्रारभ्यते ॥

॥ एनो विधि आवी रीते छे के, प्रथम इरियावहि पडिक्कमी पछी खमासमण देइ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् चैत्यवंदन करुं, एम कही चैत्यवंदन कहीये. ते लखीये छैये ॥

॥ अथ चैत्यवंदन प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥ श्री संखेश्वर इश्वरं, प्रणमी त्रिकरण योग ॥ देव नमन चउमासीये, करशुं विधि संयोग ॥ ॥१॥ ऋषभ अजित संभव तथा, अभिनंदन जिन चंद ॥ सुमति पद्म प्रभ सातमा, स्वामि सुपास जिणंद ॥ २ ॥ चंद्रप्रभ सुविधि जिन, श्री शीतल श्रेयांस ॥ वासुपूज्य विमल तथा, अनंत धर्म वरवंश ॥ ३ ॥ शांति कुंथु अर प्रभु, मल्ली सुव्रतस्वामी ॥ नमी नेमीसर पास जिन, वर्द्धमान गुणधाम ॥४॥ वर्त्तमान जिन वंदतां ए, वंद्या देव त्रिकाल ॥ प्रभु शुभ गुण मुगतातणी, वीर रचे वरमाल ॥५॥ इति चैत्यवंदन ॥ अहीं नमुथ्थुणं कही अर्धा जयवीयराय कहीये, पछी खमासमण देइ इच्छाकारे-

ण संदिसह ज्ञगवन् ऋषज्ञजिन आराधनार्थं चैत्यवंदन करुं? एम कही चैत्यवंदन कहीये. ते लखीये ठेये ॥

॥ अथ ऋषज्ञजिन चैत्यवंदन ॥

॥ सर्वार्थ सिद्धे थकी, चविया आदि जिणंद ॥ प्रथम राय वनिता वसे, मानव गण सुखकंद ॥ १ ॥ योनि नकुल जिणंदने, हायन एक हजार ॥ मौनातीते केवली, वम्न हेठे निरधार ॥ २ ॥ उत्तराषाढा जनम ठे ए, धन राशि अरिहंत ॥ दश सहस परिवारशुं, वीर कहे शिवकंत ॥ ३ ॥ इति ॥ अहीं नमुथ्थुणं कही पठी अरिहंत चेइयाणं करेमि काउस्सग्गं वंदण वत्तिआए कही एक नवकारनो काउस्सग्ग पारी थोय कहीये, ते लखीये ठेये ॥

॥ अथ थोय प्रारज्यते ॥

॥ त्र्याशी लाख पूरव घरवासे, वसीया परिकर युक्ता जी ॥ जनम थकी पण देवतरु फल, क्षीरोदधि जल जोक्ता जी ॥ मइसुअ उहि नाणे संयुत्त, नयण वयण कज चंदाजी ॥ चार सहसशुं दिक्षा लीधी, स्वामि ऋषज्ञ जिणं[illegible] जी ॥ १ ॥ अहीं लोगस्स कही एक नवका-

रनो काउस्सग्ग करी थोय कहेवी॥ मनःपर्यव तव नाण उप्पन्नुं, संयत लिंग सहावांजी ॥ अढीयद्विपमां सन्नी पंचेंद्रिय, जाणे मनोगत भावाजी ॥ द्रव्य अनंता सूक्ष्म तीर्हो, अढारशें खित्त ठायाजी ॥ पलिय असंखम भाग त्रिकालिक, द्रव्य असंख्य परजायाजी ॥ २ ॥ अहीं पुक्खरवरदी कही एक नवकारनो काउस्सग्ग करी थोय कहेवी ॥ ऋषभ जिणेसर केवल पामी, रयण सिंहासण ठायाजी॥ अनभिलप्प अभिलप्प अनंता, भाग अनंत उच्चरायाजी ॥ तास अनंतमें भागे धारी, भाग अनंते सूत्रजी ॥ गणधर रचिया आगम पूजी, . करीये जनम पवित्रंजी ॥ ३ ॥ अहीं सिद्धाणं बुद्धाणं कही एक नवकारनो काउस्सग्ग करी थोय कहेवी ॥ गोमुख जक्ष चक्केसरी देवी, समकित शुद्ध सोहावेजी ॥ आदि देवनी सेव करंती, शासन शोभ चढावेजी ॥ श्रद्धा संयुत जे व्रतधारी, विघन तास निवारेजी ॥ श्री शुभ वीर विजय प्रभु भगते, समरे नित्य सवारेजी ॥ ४॥ इति थोयो ॥ अहीं नमुथ्थुणं० ॥ जावंतिचेइ० ॥ जावंत के० ॥ नमोऽर्हत् सिद्धा० ॥ कही स्तवन कहीये ॥

॥ अथ स्तवन प्रारभ्यते ॥

॥ ज्ञान रयण रयणायररे, स्वामि ऋषभ जिणंद॥ उपकारी अरिहा प्रभुरे, लोक लोकोत्तरानंदरे ॥ भविया ॥ भावे भजो भगवंत ॥१॥ महिमा अतुल अनंतरे ॥ भ० ॥ भावे० ॥ ए आंकणी॥ तिग तिग आकर सागररे, कोडाकोडि अढार ॥ युगलाधर्म निवारीयोरे, धर्म प्रवर्तन हाररे ॥ भ० ॥ भावे० ॥ २ ॥ ज्ञानातिशये भव्यनारे, संशय छेदनहार ॥ देव नरा तिरि समजीयारे, वचनातिशय विचाररे ॥ भ०॥ भावे० ॥ ३ ॥ चार घने मघवा स्तवेरे, पूजा अतिशय महंत ॥ पंच घने योजन टलेरे, कष्ट ए तुर्य प्रसंतरे॥ भ०॥ भावे०॥४॥ योगक्षेमंकर जिनवररे, उपशम गंगानीर ॥ प्रीति भक्तिपणे करी रे, नित्य नमे शुभवीररे ॥ भ०॥ भावे० ॥५॥ इति स्तवनं ॥ पछी जयवीयराय अर्धो कहेवो ॥ इति ॥

अहीं खमासमण देइ इच्छाकारेण० ॥ श्री अजितनाथ आराधनार्थं चैत्यवंदन करुं ॥

॥ अथ श्री अजितनाथ चैत्यवंदन प्रारंभः ॥

॥ आव्या विजय वैमानथी, नयरी अयोध्या ठाम॥

मानवगण रिखरोहिणी, मुनिजनना विशराम ॥ १ ॥ अजितनाथ वृष राशियें, .जंनम्या जगदाधार ॥ योनि जुजंगम जयहरु, मौने वर्ष ते बार ॥ २ ॥ समपरण तरु हेठखे ए, ज्ञान महोत्सव सार ॥ एक सहस्सशुं शिव वस्या, वीर धरे बहु प्यार ॥ ३ ॥ इति चैत्यवंदन ॥पढी नमुथ्थुणं० ॥ अरिहंत चेइ० ॥ कही एक नवकारनो काउस्सग्ग पारी थोय कहेवी ॥

॥ अथ थोय प्रारज्यते ॥

॥ जब गर्ने स्वामि, पामी विजया नार ॥ जीते नित्य पियुने, अक्र कीडत हुशीयार ॥ तिणे नाम अजित छे, देशना अमृत धार ॥ महाजक्र अजिता, वीर विघन अपहार ॥१॥ ए थोय कही उनां थकां जयवीयराय अर्धो कहेवो ॥ इति अजितनाथ देववंदनं ॥ ए रीते सर्व तीर्थंकरनां चैत्यवंदन, थोयो अने स्तवन कहेवां ॥ यावत् शाश्वताजिन सुधीनां पण कहेवा ॥

॥ अथ श्री संजवजिन चैत्यवंदन ॥

॥ सत्तम गेविज चवन छे, जनम्या मृगशिर मांहिं ॥ देवगणे संजव जिना, नमीये नित्य उत्सांहि ॥ १ ॥

सावत्थीपुरी राजियो, मिथुनराशि सुखकार ॥ पन्नग योनि पामिया, योनि निवारणहार ॥ २ ॥ चउद वरस छद्मस्थमां ए, नाण शालतरु सार ॥ सहस व्रतीशुं शिव वर्या, वीर जगत आधार ॥ ३ ॥ इति संभवजिन चैत्यवंदन समाप्त ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ संभवस्वामि सेवियें, धन्य सज्जन दीहा ॥ जिन-गुण माला गावतां, धन्य तेहनी जीहा ॥ वयण सुगंग तरंगमां, न्हाता शिवगेही ॥ त्रिमुखसुर दुरितारिका, शुभवीर सनेही ॥ १ ॥ इति थोय समाप्त ॥

॥ अथ श्री अभिनंदनजिन चैत्यवंदन ॥

॥ चव्या जयंत विमानथी, अभिनंदन जिनचंद ॥ पुनर्वसुमां जनमीया, राशि मिथुन सुखकंद ॥ १ ॥ नयरी अयोध्यानो धणी, योनिवर मंजार ॥ उग्रविहारे तप तप्या, भूतल वरस अढार ॥ २ ॥ वली रायण पादप तले ए, विमल नाण गणदेव ॥ मोक्ष सहस मुनिशुं गया, वीर करे नित्य सेव ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ अपा पदम लंघनं ॥ ए चाल ॥ अभिनंदन गुण मालिका, गावती अमरालिका ॥ कुमतिकी परजालिका, शिववहू वरमालिका ॥ लगे ध्यानकी तालिका, आगमनी परनालिका ॥ इश्वरो सुखालिका, वीर नमे नित्य कालिका ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री सुमतिनाथजिन चैत्यवंदन ॥

॥ सुमति जयंत विमानथी, रह्या अयोध्या ठाम ॥ राक्षस गण पंचम प्रभु, सिंहराशि गुणधाम ॥ १ ॥ मघा नक्षत्रे जनमीया, मुषक योनि जगदीश ॥ मोहराय संग्राममां, वरस गयां ठवीश ॥ २ ॥ जीत्यो प्रियंगु तरुए, सहस मुनि परिवार ॥ अविनाशी पदवी वर्या, वीर नमे सोवार ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ त्वमशुभान्यभिनंदननंदिता ॥ ए देशी ॥ सुमति स्वर्ग दिये असुमंतने, ममत्व मोह नहि भगवंतने ॥ प्रगट ज्ञान वरी शिव बालिका ॥ तुंबरु वीर नमे महाकालिका ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री पद्मप्रभ चैत्यवंदन ॥

॥ ग्रैवेयक नवमे थकी, कौसंबी घरवास ॥ राक्षस गण नक्षतरु, चित्रा कन्या राश ॥ १ ॥ वृश्चिक योनि पद्म प्रभ, छद्मस्था षट्मास ॥ तरु छत्रौघे केवली, लोकालोक प्रकाश ॥ २ ॥ त्रण अधिक शत आठशुं ए, पाम्या अविचल धाम ॥ वीर कहे प्रभु माहरे, गुणश्रेणि विश्राम ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ नंदीश्वर वर द्विप संभारुं ॥ ए चाल ॥ पद्मप्रभु हत छद्म अवस्था, शिव मद्मे सिद्धा अरुपस्था ॥ नाणने दंसण दोय विलासी, वीर कुसुम श्यामा जिनुपासी ॥ १ ॥

॥ अथ श्री सुपासजिन चैत्यवंदन ॥

॥ ग्रैवीज छठेथी चव्या, वाणारसीपुरी वास ॥ तुला विशाखा जन्मीया, तप तपीया नव मास ॥ १ ॥ गण राक्षस वृक योनिये, शोभे स्वामि सुपास ॥ सरिस तरुतले केवली, ज्ञेय अनंत विलास ॥ २ ॥ महानंद पदथी लही ए, पाम्या भवनो पार ॥ श्री शुभवीर कहे प्रभु, पंच सया परिवार ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ श्रावण शुदि दिन पंचमी ए ॥ ए देशी ॥ अष्ट महा प्रतिहारशुं ए, शोभे स्वामि सुपासतो ॥ महा भाग्य अहिा प्रभु ए, सुरनर जेहना दासतो ॥ गुण अतिशय वरणव्या ए, आगम ग्रंथ मोझारतो ॥ मातंग शांता सुर सुरी ए, वीर विघन अपहारतो ॥१॥ इति ॥

॥ अथ श्री चंद्रप्रभ चैत्यवंदन ॥

॥ चंद्रप्रभ चंद्रावती, पुरि चविया वैजयंत ॥ अनुराधाये जनमीया, वृश्चिक राशि महंत ॥ १ ॥ मृगयोनि गण देवनो, केवल विणत्रिक मास ॥ पाम्या नाग तरु तले, निर्मल नाण विलास ॥ २ ॥ परमानंद पद पामीया ए, वीर कहे निरधार ॥ साथे सहूणा शोभता, मुनिवर एक हजार ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ शांति जिनेसर समरीये ॥ ए देशी ॥ चंद्रप्रभ मुख चंद्रमा, सखि जोवा जइये ॥ द्रव्य भाव प्रभु दरिसणे, निर्मलता थइये ॥ वाणी सुधारस वेलडी, सुणीये ततखेव ॥ भजे भदंत भृकुटिका, वीरविजय ते देव ॥ १ ॥

॥ अथ श्री सुविधिनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ सुविधिनाथ सुविधे नमुं, श्वान योनि सुखकार ॥ आव्या आणंत स्वर्गथी, काकंदी अवतार ॥१॥ राक्षसगण गुणवंतने, धनराशि रिखमूल ॥ बरस चार छद्मस्थमां, कर्म शशक शार्दूल ॥२॥ मल्लीतरु तले केवली ए, सहस मुनि संघात ॥ ब्रह्म महोदयपद वर्या, वीर नमे परभात ॥३॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ सुविधि सेवा, करंतां देवा, तजी विषय वासना ॥ शिव सुखदाता, ज्ञाता त्राता, हरे दुःख दासना ॥ नय गम भंगे, रंगे चंगे, वाणी भव हारिका ॥ अमर अतीते, मोहातीते, विरंचे सुतारिका ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री शीतलनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ दशमा स्वर्गथकी चव्या, दशमा शीतलनाथ ॥ भद्दिलपुर धनराशिये, मानव गण शिवसाथ ॥ १ ॥ वानर योनि जिणंदने, पूर्वाषाढा जात ॥ तिग वरसांतर केवली, प्रियंगु विख्यात ॥ २ ॥ संयमघर सहसें वर्या ए, निरूपम पद निर्वाण ॥ वीर कहे प्रभु ध्यानथी, भव भव कोड कल्याण ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ महावीर जिनवर वंदु ॥ ए देशी ॥ शीतलप्रभु दर्शन, शीतल अंग उवंगे ॥ कल्याणक पंचे, प्राणी गण सुख संगे ॥ तो वचन सुणंतां, शीतल किम नहि लोका ॥ शुभवीर ते ब्रह्मा, शासनदेवी अशोका ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री श्रेयांसनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ अच्युतथी प्रभु उतरया, सिंहपुरे श्रेयांस ॥ योनि वानर देवगण, देव करे परशंस ॥ १ ॥ श्रवणे स्वामि जनमीया, मकर राशि दुगवास ॥ छद्मस्था निडुकं तले, केवल महिमा जास ॥ २ ॥ वाचंयम सहसें सही ए, भव संततिनो छेह ॥ श्री शुभवीरने सांइसुं, अविचल धर्म सनेह ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ श्री सीमंधर देव सुहंकर ॥ ए देशी ॥ श्री श्रेयांस सुहंकर पामी, इहे अवर कुण देवाजी ॥ कनक तरु सेवे कुण प्रभुने, छंडी सुर तरु सेवाजी ॥ पूर्वापर अविरोधि स्यातपद, वाणी सुधारस वेलीजी ॥ मानवी मणु ए सुर सुपसाये, वीर हृदयमां केलीजी ॥१॥ इति ॥

॥ अथ श्री वासुपूज्यजिन चैत्यवंदन ॥

॥ प्राणतथी प्रजु पांगरया, चोंपे चंपा गाम ॥ शिव मारग जातां थकां, चंपा तरु विशराम ॥ १ ॥ अश्व योनि गण राक्षस, शतभिषा कुंज राशि ॥ पाडल हेठे केवली, मौनपणे इग वास ॥ २ ॥ षट् शत साथे शिव थया ए, वासुपूज्य जिनराज ॥ वीर कहे धन्य ते घमी, जब निरख्या महाराज ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारज्यते ॥

॥ विमल गुण अगारं, वासुपूज्य सफारं ॥ निहत विष विकारं, प्राप्त कैवल्य सारं ॥ वचन रस उदारं, मुक्ति तत्त्वे विचारं ॥ वीर विघन निवारं, स्तौमि चंमी कुमारं ॥ १ ॥ इति

॥ अथ श्री विमलनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ अष्टम स्वर्गथकी चवी, कंपितपुरमां वास ॥ उत्तर जद्रपदे जनि, मानवगण मीन राशि ॥ १ ॥ योनि गग सुहंकरु, विमलनाथ जगवंत ॥ दोय वरस तप निर्जली, जंबूतले अरिहंत ॥ २ ॥ षट्सहस मुनि साथसुं ए, विमल विमलपद पाय ॥ श्री शुजवीरने सांइसुं, मलवानुं मन थाय ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ चोपाइनी चाल ॥ विमलनाथ विमल गुण व-र्या, जिनपद भोगी भव विस्तर्या ॥ वाणी पांत्रीश गुण लक्षणी, षण्मुख सुर प्रवरा जक्षणी ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री अनंतनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ देवलोक दशमा थकी, गया अयोध्या गाम ॥ हस्ति योनि अनंतने, देव गणे अभिराम ॥१॥ रेवती-ये जनम्या प्रभु, मीन राशि सुखकार ॥ त्रण्य वरस छ-द्मस्थमां, नहि प्रमादि उच्चार ॥ २ ॥ पीपल वृक्षे पा-मीया ए, केवललक्ष्मी निदान ॥ सात सहससुं शिव वर्या, वीर कहे बहु मान ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ वसंततिलकावृत्तम् ॥ ज्ञानादिकाः गुणवरा नि-वसंत्यनंते, वज्री सुपर्व महिते जिन पाद पद्मे ॥ ग्रंथा-र्णवे मति वराः प्रणतिस्म भक्त्या, पाताल चांकुशि सुरी शुभ वीर दक्षाः ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री धर्मनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ विजय विमान थकी चव्या, रत्नपुरे अवतार ॥ ध-

मनाथ गण देवता, कर्क राशि मनोहर ॥१॥ जनम्या पुष्य नक्षतरे, योनि छाग विचार ॥ दोय वरस छद्मस्थमां, विचर्या धर्म दयाल ॥ २ ॥ दधिपर्णाधो केवली, वीर वर्या बहु रिद्ध ॥ कर्म खपावीने हुवा, अष्ट सय साथे सिद्ध ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ शंखेश्वर पासजी पूजीए ॥ ए देशी ॥ सखि धर्म जिणेसर पूजीए, जिन पूजे मोहने ध्रुजीए ॥ प्रभु वयण सुधारस पीजीए, किन्नर कंदर्प्पा रीजीए ॥ १ ॥

॥ अथ श्री शांन्तिजिन चैत्यवंदन ॥

॥ सर्वारथसिद्धे थकी, चवीया शांन्ति जिनेश ॥ हस्तीनागपुर अवतर्या, योनि हस्ति विशेष ॥ १ ॥ मानवगण गुणवंतने, मेषराशि सुविलास ॥ भरणीए जनम्या प्रभु, छद्मस्था इगवास ॥ २ ॥ केवलनंदी तरु तले ए, पाम्या अंतर नाण ॥ वीर करमने क्षय करी, नवशतशुं निरवाण ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोयो प्रारभ्यते ॥

॥ शांन्ति सुहंकर साहिबो, संयम अवधारे ॥ सुम-

तिने घरे पारणुं, भवपार उतारे ॥ विचरंता अवनी तले, तप उग्र विहारे ॥ ज्ञान ध्यान एकतानथी, तिर्यंचने तारे ॥१॥ पास वीर वासुपूज्यने, नेम मल्ली कुमारी ॥ राज्यविहूणा ए थया, आपे व्रतधारी ॥ शांन्तिनाथ प्रमुखा सवि, लही राज्य निवारी ॥ मल्ली नेम परण्या नही, बीजा घरबारी ॥२॥ कनक कमल पगलां ठवे, जगशांन्ति करीजे ॥ रयण सिंहासन बेसीने, भली देशना दीजे ॥ योगावंचक प्राणीया, फल लेतां रीझे ॥ पुष्करावर्त्तना मेघमां, मगसेल न भिंजे ॥ ३ ॥ क्रोडवदन शुकरारूढो, श्यामरूपे चार ॥ हाथ बीजोरुं कमल छे, दक्षिण कर सार ॥ जक्ष गरुड वाम पाणीए, नकुलाक्ष वखाणे ॥ निर्वाणीनी वातता, कवि वीर ते जाणे ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ स्तवन प्रारंभ : ॥

॥ क्षण क्षण सांभरो शांन्ति सलूणा ॥ ध्यानभुवन जिनराज परूणा ॥ क्ष० ॥ शांन्तिजिणंदको नाम अमीसें, उल्लसित होत हमारो भवपुना ॥क्ष०॥ भव चोगानमें फिरते पाए, छोरत में नहिं चरण प्रभुना ॥क्ष०॥१॥ छील्लरमें रति कबहु न पावे, जे झीले जल गंग यमुनां ॥क्ष०॥ तु-

म सम हम शिर नाथ न थाशे, कर्म अधूना दूना धूना ॥क०॥२॥ मोहखराइमें तेरी सहाइ, तो कणमें भिन्न भिन्न कटुना ॥क०॥ नहिं घटे प्रभु आना कूना, अचिरासुत पति मोक वधूना ॥क०॥३॥ नरकी पास में आश न करतें, चार अनंत पसाय करुन्ना ॥क०॥ क्यूं कर मागत पास धत्तूरे, युगलिक याचक कल्पतरुना ॥ क०॥ ४॥ ध्यान खड्गवर तेरे आसंगे, मोह डरे सारी नीक नरुना ॥ क० ॥ ध्यान अरूपी तो सोइ अरूपी, नक्के ध्यावृत तान्या तूना ॥ क० ॥ ५ ॥ अनुभव रंग वध्यो उपयोगे, ध्यान सुपानमें काथा चूना ॥ क० ॥ चिदानंद फकफोल घटासें, श्री शुभवीरविजय पन्दिपुन्ना ॥क०॥६॥ इति॥

॥ अथ श्री कुंथुनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ लव सत्तम सुरभव तजी, गजपुर नयर निवास ॥ राक्सगण कृतिका जनी, कुंथुनाथ वृष राशि ॥ १ ॥ शोल वरस छद्मस्थमां, जिनवर योनि छाग ॥ घाती कर्म घाते करी, तिलकतले वितराग ॥ २ ॥ शैलेशी करणे करी ए, एक सहस परिवार ॥ शिवमंदिर सिधावतां, वीर घणुं हुंशियार ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ द्विजराज मुखी ॥ ए देशी ॥ वशीकुंथुव्रती तिलकौ जगति, महिमा महती नत इंद्रतती ॥ प्रतितागम ज्ञानगुणा विमला, शुभवीर मतां गांधरव बाला ॥१॥इति॥

॥ अथ श्री अरनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ गए सवढथकी चव्या, नागपुरे अरनाथ ॥ रेवती जन्म महोत्सवा, करता निर्जर नाथ ॥ १ ॥ जयकर योनि गजवरु, राशि मीन गणदेव ॥ त्रण्य वरसमां थिर थइ, टाले मोहनी टेव ॥ २ ॥ पाम्या अंब तरु तले ए, खायिक भावे नाण ॥ सहस मुनिवर साथशुं, वीर कहे निर्वाण ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ त्वमशुभान्यभिनंदन नंदिता ॥ ए देशी ॥ अरवि नूरवि नूतल द्योतकं, सुमनसा मनसार्चित पंकजं॥ जिन गिरा न गिरा पर तारिणी, प्रणत यक्षपति वीर धारिणी ॥ १ ॥ इति स्तुतिः ॥

॥ अथ श्री मल्लिनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ मल्लि जयंत विमानथी, मिथिला नयरी सार ॥

अश्विनी योनि जयंकरु, अश्विनीये अवतार ॥ १ ॥ सुरगण राशि मेष छे, वंदित स्वर्गी लोक ॥ छद्मस्थ अहो रातिनी, केवल वृक्ष अशोक ॥ २ ॥ समवसरणे बेशी करी ए, तीर्थ प्रवर्तन हार ॥ वीर अचल सुखने वर्या, पंचसया परिवार ॥ ३ ॥ इति चैत्यवंदन॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ नदिश्वर वर द्विप संभालुं ॥ ए देशी॥ मल्लीनाथ मुखचंद निहालुं, अरिहा प्रणमी पातक टालुं॥ ज्ञानानंद विमलपुर सेर, धरणप्रिया शुभवीर कुबेर ॥१॥

॥ अथ श्री मुनिसुव्रत चैत्यवंदन ॥

॥ सुव्रत अपराजितथी, राजगृही रेठाणं ॥ वानर योनि राजती, सुंदर गण निर्वाण ॥१॥ श्रवण नखेतर जनमीया, सुरवर जय जयकार ॥ मकर राशि छद्मस्थमां, मौन मास अगियार ॥ २ ॥ चंपक हेठे चांपीयां ए, जे घनघाति चार ॥ वीर बन्यो जगमां प्रभु, शिवपद एक हजार ॥ ३ ॥ इति चैत्यवंदन ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ अहह मुदिरे ॥ ए देशी ॥ सुव्रतस्वामि आतम-

रामी, पूजो भवि मन रूली ॥ जिन गुण थुणीये, पातक हणीये, भावस्तव सांकळी ॥ वचने रहीए, जूठ न कहीए, टळे फळ वंचको ॥ वीर जिणंद पासी, नर दत्ता, वरुण जिनार्चको ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री नमिनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ दशमा प्राणत स्वर्गथी, चव्या श्री नमिनाथ ॥ मिथिला नयरी राजीयो, शिवपुर केरो साथ ॥१॥ योनि अश्व अलंकरी, अश्वनी उदयो भाण ॥ मेष राशि सुरगण नमुं, धन्य ते दिन सुविहाण ॥ २ ॥ नव मासांतर केवळी, बकुल तळे निरधार ॥ वीर अनुपम सुख वर्या, मुनि परिवृत हजार ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ श्री नमिनाथ सोहामणा ए, तीर्थपति सुलतान तो ॥ विश्वंभर अरिहा प्रभु ए, वीतराग भगवान तो ॥ रत्नत्रयी जस उजळी ए, भाखे षट्द्रव्य ज्ञान तो ॥ भृकुटी सुर गंधारिका ए, वीर हृदय बहु मान तो ॥१॥

॥ अथ श्री नेमीनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ नेमीनाथ बावीशमा, अपराजितथी आय ॥

सोरीपुरमां अवतरया, कन्याराशि सुहाय ॥ १ ॥ योनि वाघ विवेकीने, राक्षसगण अद्भूत ॥ रिख चित्रा चौपन दिन, मौनवता मन पूत ॥ २ ॥ वेतस हेठे केवली ए, पंच सयां छत्रीश ॥ वाचंयमशुं शिव वर्या, वीर नमे निशिदीश ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोयो प्रारभ्यते ॥

॥ दुरित भय निवारं, मोह विध्वंसकारं, गुणवत मविकारं, प्राप्त सिद्धि मुदारं ॥ जिनवर जयकारं, कर्म संक्लेश हारं, भवजलनिधि तारं, नौमि नेमी कुमारम् ॥ १ ॥ अड जिनवर माता, सिद्धि सौधे प्रयाता, अड जिनवर माता, स्वर्ग त्रीजे विख्याता ॥ अड जिनवर माता, प्राप्त माहेंद्र ख्याता, भव भय जिन त्राता, संतने सिद्धि दाता ॥ ॥ २ ॥ ऋषभ जनक जावे, नाग सुरभाव पावे, इशान सग कहावे, शेषकांता सभावे ॥ पदमासन सुहावे, नेम आद्यंत पावे, शेष काउस्सग्ग भावे, सिद्धि सूत्रे पठावे ॥ ३ ॥ दाहन पुरुष जाणी, कृष्णवर्णे प्रणामी, गोमेधने षट्पाणी, सिंह बेठी वराणी ॥ तनु कनक समाणी, अंबिका चार पाणी, नेम भगति भराणी, वीरविजये वखाणी ॥ ४ ॥

॥ अथ स्तवन प्रारंभः ॥

(मल्लिनाथ विना दुःख कोण गमे.—ए देशी.)

॥ रहो रहोरे यादव दो घडीयां ॥ र० ॥ दो घडीयां दो चार घडीयां ॥ र० ॥ शिवामात मल्हार नगीने, क्युं चलीये हम विछडीयां ॥ र० ॥ यादववंश विभूषण स्वामि, तुमे आधार छो अमडीयां ॥ रहो० ॥१॥ तो बिन उरसे नेह न कीनो, उर करनकी आखडीयां ॥ ॥ र० ॥ इतने बिच हम छोड न जइये, होत बुराइ लाजडीयां ॥र०॥२॥ प्रितम प्यारे केहकर जानां, जे होत हम शिर बांकडीयां ॥ र० ॥ हाथसें हाथ मिलादे सांइ, फूल बिछाउं सेजडीयां ॥ रहो० ॥ ३ ॥ प्रेमके प्याले बहुत मसाले, पीवत मधुरे सेलडीयां ॥ र० ॥ समुद्र-विजय कुल तिलक नेमकुं, राजुल झरती आंखडीयां ॥ ॥ र० ॥ ४ ॥ राजुल छोर चले गिरनारे, नेम युगल केवल वरीया ॥ र० ॥ राजिमति पण दिक्षा लीनी, भावना रंगरसें चडीयां ॥ रहो० ॥ ५ ॥ केवल लइ करी मुगति सिधारे, दंपती मोहन वेलडीयां ॥ र० ॥ श्री शुभवीर अचल भइ जोडी, मोहराय शिर लाकडीयां ॥रहो०॥६॥

॥ अथ श्री पार्श्वनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ नयरी वाणारसीये थया, प्राणतथी परमेश ॥ योनि व्याघ्र सुहंकरी, राक्षसगण सुविशेष ॥ १ ॥ जन्म विशाखाये थयो, पार्श्व प्रभु महाराय ॥ तुला राशि छद्मस्थमां, चोराशी दिन जाय ॥ २ ॥ धवतरु पासे पामीया ए, खायिक डुग उपयोग ॥ मुनि तेत्रीशें शिव वर्या, वीर अक्षय सुख भोग ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोयो प्रारभ्यते ॥

॥ सुविधि सेवा ॥ ए देशी ॥ पास जिणंदा, वामा नंदा, जब गरभे फली ॥ सुपनां देखे, अर्थ विशेषे, कहे मघवा मली ॥ जिनवर जाया, सुर हुलराया, हुवा रमणि प्रिये ॥ नेमी राजी, चित्त विराजी, विलोकित व्रत लीये ॥ १ ॥ वीर एकाकी, चार हजारे, दिक्षा धुर जिनपति ॥ पासने मल्लि, त्रय शत साथे, बीजा सहस्से व्रती॥ षट् शत साथे, संयम धरता, वासुपूज्य जगधणी ॥ अनुपम लीला, ज्ञान रसीला, देजो मुजने घणी ॥ २ ॥ जिनमुख दीठी, वाणी मीठी, सुर तरु वेलडी ॥ द्राख विहासे, गइ वनवासे, पीले रस सेलडी ॥ साकरसेती,

तरणा लेती, मुखें पशु चावती ॥ अमृत मीठुं, स्वर्गे दीठुं, सुरवधू गावती ॥३॥ गजमुख दक्षो, वामन यक्षो, मस्तके फणावली ॥ चार ते बांहीं, कछप वाही, काया जस शामली ॥ चउ करें प्रौढा, नागारूढा, देवी पद्मावती ॥ सोवन कांति प्रभु गुण गाती, वीर घरे आवती ॥४॥

॥ अथ स्तवन प्रारंभः ॥

॥ आज शंखेश्वरजिन भेटीये, भेटतां भवदुःख नासे ॥ साहेब मोरा रे ॥ जयो अश्वसेन कुलचंद्रमा, माता वामा सुत पासे ॥सा०॥आ०॥१॥ भक्तवत्सल जन भयहरु, हसतां हणीया षट् हास्य ॥सा०॥ दानादिक पांचने दुहव्या, फरी नावे पासनी पास ॥सा०॥ आ०॥२॥ करी कामने कारमी कमकमी, मिथ्यात्वने न दिउं मान ॥ सा०॥ अविरतिने रति नहि एक घडी, अवगुणी अलगुं अज्ञान ॥सा०॥ आ०॥३॥ निंदक निडाने नासवी, मृतरागने रोग अपार ॥सा०॥ एक घके द्वेषने टालीयो, एम नाठा दोष अढार ॥ सा०॥ आ०॥४॥ वली मत्सर मोह ममत गया, अरिहा निरिहा निरदोष ॥ सा०॥ धरणेंद्र कमठ सुर बिहुंपरे, तुसमात्र नही तोस रोष ॥ सा० ॥

॥ आ० ॥ ५ ॥ अचरिज सुणजो एक तेणे समे, शत्रुने समकित दाय ॥ सा० ॥ चंदन पारस गुण अति घणा, अक्षर थोडे न कहाय ॥ सा० ॥ आ० ॥ ६ ॥ जागरण दिशा उपर चढया, उजागरणे वीतराग ॥ सा० ॥ आलंबन धरतां प्रभुतणो, प्रभुता सेवक सौभाग्य ॥ सा० ॥ ॥ आ० ॥ ७ ॥ उपादान कारण कारिय सिधे, असाधारण कारण नित्य ॥ सा० ॥ जो अपेक्षा कारण भवि लहे, फलदायी कारण निमित्त ॥ सा० ॥ आ० ॥ ८ ॥ प्रभु त्रायक सायकता धरी, दायक नायक गंभीर ॥ ॥ सा० ॥ निज सेवक जाणी निवाजीये, तुम चरणे नमे शुभवीर ॥ साहेब० ॥ आज० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री वर्द्धमानजिन चैत्यवंदन ॥

॥ उर्द्धलोक दशमाथकी, कुंभपुरे मंडाण ॥ वृषभ योनि चउवीशमा, वर्द्धमान जिनभाण ॥ १ ॥ उत्तराफाल्गुनी उपना, मानवगण सुखदाय ॥ कन्याराशि छद्मस्थमां, बार वरस वही जाय ॥ २ ॥ शाल विशाल तरुतले ए, केवलनिधि प्रगटाय ॥ वीर बिरुद धरवा भणी, एकाकी शिव जाय ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोयो प्रारभ्यते ॥

॥ वीर जगत्पति जन्मज थावे, नंदन निश्चित शिखर रहावे, आठ कुमारी गावे ॥ अड गजदंता हेठे वसावे, रुचक गिरिथी छत्रीश जावे, द्विप रुचक चउ आवे ॥ छप्पनदिग् कुमरी हुलरावे, सूतीकरम करी निजघर पावे, शक्र सुघोषा वजावे ॥ सिंहनाद करी ज्योतिषी आवे, भवन व्यंतर शंख पडहे मिलावे, सुरगिरि जन्म मल्हावे ॥१॥ ऋषभ तेर शशि सात कहीजे, शांतिनाथ भव बार सुणीजे, मुनिसुव्रत नव कीजे ॥ नव नेमिश्वर नमन करीजे, पास प्रभुना दश समरीजे, वीर सत्तावीश लीजे ॥ अजितादिक जिन शेष रहीजे, त्रण्य त्रण्य भव सघले ठवीजे, भव समकितथी गणीजे ॥ जिन नामबंध निकाचित कीजे, त्रीजे भव तप खंती धरीजे, जिनपद उदये सीझे ॥२॥ आचार आदे अंग अग्यार, उववाई आदे उपांग ते बार, दश पयन्ना सार ॥ छ छेद सूत्र विचित्र प्रकार, उपगारी मूल सूत्र ते चार, नंदि अनुयोग द्वार ॥ ए पीस्तालीश आगम सार, सुणतां लही ये तत्त्व उदार, वस्तु स्वभाव विचार ॥ विषभुजंगिनि

विष अपहार, ए समो मंत्र न को संसार, वीरशासन जयकार ॥३॥ नकुल बीजोरुं दोय कर झाली, मातंग सुर शामकंती तेजाळी, वाहन गज शुंढाळी॥ सिंहउपर बेठी रढीयाळी, सिद्धायिका देवी लटकाळी, हरिताभा चार भुजाळी॥ पुस्तक अभया जिमणे झाली, मातुलिंगने वीणा रसाळी, वाम भुजा नहि खाली ॥ शुभ गुरु गुण प्रभु ध्यान धयाळी, अनुभव नेहशुं देती ताळी, वीर वचन टंकशाळी ॥ ४ ॥

॥ अथ स्तवन प्रारंभः ॥

॥ त्रिशलानंदन चंदन शीत, दर्शन अनुभव करीये नित्य ॥ स्वामि सेवीये ॥ तुम दर्शनथी अळगा जेह, वळग्या कर्म पिशाचने तेह ॥ स्वामि सेवीए ॥१॥ हुं पण भमीयो आ संसार, दर्शन दीठा विण निरधार ॥स्वा०॥ अब तुम दर्शन दीठुं रत्न, निज घरमां रही करशुं यत्न ॥स्वा०॥२॥ दर्शनथी जो दर्शन थाय, ते आणंद तो जगत न माय ॥ स्वा० ॥ भवभ्रमणादिक दूरे जाय, भवथिति चिंतन अल्प ठराय ॥ स्वा० ॥३॥ तस लक्षण प्रगटे घटमांहि, वैशालिक प्रभु तुठे उछांहीं ॥ स्वा० ॥ अमृत लेश लहे एक वार, रोग नहिं फरी अंगमोझार

॥स्वा०॥४॥दर्शन फरशन होवे तास, संवेदन दर्शननो नाश ॥स्वा०॥ पण जो जाय पलाकुं पास, तो महमहके वास बरास ॥स्वा०॥५॥ देव कुदेवनी सेवा करंत, न लह्यु दर्शन श्री जगवंत ॥स्वा०॥ एक चित्त नहिं एकनी आश, पग पग ते डुनियाना दास ॥स्वा०॥६॥ वेश खाट परें कीण केइ घाट, तस मुख दर्शन दूरे दाट॥स्वा०॥ लोक कहे धिग् चित्त उचाट, घर घर जटके ते बारे वाट ॥स्वा०॥ ॥७॥ तिणविध जटक्यो काल अनंत, मलिया कलिया नहिं अरिहंत ॥ स्वा० ॥ ते दिन दर्शन तो प्रतिपक्ष, हवे दर्शन फलशे प्रत्यक्ष ॥ स्वा० ॥ ८ ॥ प्रीति जक्तिये चोलनो रंग, गुणदर्शने गयो रंग पतंग ॥ स्वा० ॥ अण मलवे हुवे मन उत्कंठ, मलवे डुःख करे विरहे उल्लंठ ॥ स्वा० ॥ ए ॥ अनुजव दर्शने बिहुं डुःख नास, राति दिवस रहो हश्मा पास ॥ स्वा० ॥ क्षय उपशम गुण खायक दाय, गर्जवती प्रिया पुत्र जणाय ॥ स्वा०॥१०॥ रंग महोलमां उत्सव थाय, मोह कुटुंब ते रोतुं जाय ॥स्वा० ॥ श्री शुजविजय सुणो जगदिश, वीर कहे पद देजो आशिष ॥स्वा०॥११॥ इति स्तवनं ॥

॥ अथ शाश्वता अशाश्वताजिन आराधनार्थं
॥ चैत्यवंदन पारभ्यते ॥

॥ श्लोक ॥ चतुर्विंशती ह्यर्हता वंदिताश्चा, धुना संस्तविष्ये त्रिलोके विलोकाः॥ चतुर्धाभिधाः सद्गुणालंकृतेभ्यो, नमामि मुदा शाश्वताऽशाश्वतेभ्यः ॥ १ ॥ सुधर्मादिकें ताविषे चैत्यमाला, तथा चांतिमे नुत्तरेऽर्ह द्विशाला ॥ वसु वेद नंदर्षिखं द्वित्रिकेभ्यो ॥नमामि०॥ ॥ २ ॥ गजस्त्यालये शीतरश्मी निवासे, ग्रहे तारके चोरुनी चैत्य गेहाः ॥ असंख्या जिनेंद्रा वितेंद्रा कृतेभ्यो ॥ न० ॥३॥ वसुद्विकृते व्यंतरेऽसंख्य चैत्ये, सुराद्या हशानां जिनौकाः स्मृताश्च ॥ ग्रहांका मिताः पारगाः संति तेभ्यो ॥ न० ॥४॥ सुराद्रौ नगे नैषधे नीलवंते, गिरौ कुंडले रोचके नागदंते ॥ हिमाद्रौच वैताढ्य आम्यार्चितेभ्यो ॥ न० ॥५॥ तरौ शाल्मली जंबु नंदीश्वरेषु, वखारे विचित्र त्रिकूटे चकूटे ॥ मुकूटे कितौ चक्रवालांतरेभ्यो ॥ न० ॥६॥ स्थिते चित्रकूटर्बुदे सिद्धक्षेत्रे, समेतो जयंता चलाऽष्टापदेषु ॥ कुलाद्रौच विंध्याचले रोहणेभ्यो ॥ न० ॥७॥ विराटे अघाटे कुरौ मेद

पाटे, श्रिमाले च भोटे स्थिता चक्रकोटे ॥ हृदे देव कूटे ऽचिभिर्ऽर्हतेभ्यो ॥न०॥८॥ तिलंगे कलिंगे प्रयागे च बोधे, सुराष्ट्रांगवंगाऽर्द्ध गंगापगासु ॥ जनैःकान्य कुब्जे तमालाचिंतेभ्यो ॥न०॥९॥ जले कौशले नाहले जंगले वा, स्थले पल्लि देशे वने सिंहले वा ॥ नगर्युज्जयिन्यादिका स्वंतरेभ्यो ॥ न०॥१०॥ अने नैव संध्यात्व वंध्यं त्रिसंध्यं, जिनाः संस्तुवंति चातुर्मासि घस्ते ॥ भवेत्तीर्थ यात्रागृहे तिष्ठतेभ्यो ॥न०॥११॥ इति शाश्वत मुख्य जिनोः स्तवनं, रचितं लचितं सुगुणैः प्रवरं ॥ परिरंजित दक्ष सभा निकरं, कुरुतां शुभवीर सुख सखरं ॥ न० ॥१२॥ इति ॥

॥ अथ थोयो प्रारंभः ॥

॥ नंदीश्वर वर ॥ ए देशी ॥ नमोऽर्हत्० ॥ ऋषभानन चंद्रानन जाणो, वारिषेण शाश्वत वर्द्धमानो ॥ पूरव पश्चिम उत्तर ठाणो, दक्षिण पक्षिमा भाग प्रमाणो ॥ १ ॥ एक लोगस्सनो काउस्सग्ग करी एक नवकार गणवो ॥ ऊर्ध्वलोके जिनबिंब घणेरा, भवनपतिमां घर घर देहेरां ॥ व्यंतरज्योतिषी त्रीछे अनेरां, चारे शाश्वत नाम भलेरां ॥ २ ॥ पुक्खर० ॥ नो० ॥ भरतादिक जे

क्षेत्र सुहावे, काल त्रिके जे अरिहा आवे ॥ चार नाम ए निश्चय थावे, अंग उवंगे वात जणावे ॥३॥ सिद्धाणं० काउ० ॥ नवकार एक गणी नमोऽर्हत् कही ॥ पंच कल्याणके हर्ष अधुरे, नंदीश्वर द्विपे जइ पूरे ॥ हर्ष महोत्सव करत अठाइ, देव देवी शुनवीरे वधाइ॥४॥पछी बेशी नमुथ्थुणं, जावंति, नमोऽर्हत् कही स्तवन कहेवुं ॥

॥ अथ स्तवन प्रारंभः ॥

॥ सासय पडिमा सुंदर, जिनघर केहशुं तेह ॥ चारण मुनिवर वंदी, भगवइ मांहे जेह ॥ उर्ध्वलोक चुलसी लख, सहस सत्ताणुं त्रेवीश ॥ सात कोडि लख बिहुत्तर, भवणे चैत्य गणीश ॥१॥ जोइ वणेसु असंखा, कुंडल रुचके चार ॥ नंदीश्वर वर बावन, ए साठे चउ बार ॥ ति डुवारां शेष जिन घर, द्वार द्वार तिहां दीठ ॥ मुख मंडप रंगमंडप, सखरी मणिमयपीठ ॥ २ ॥ तस उपर वर थुंभे, चिहुं दिशि पडिमा चार ॥ तदनंतर मणि पीठ, युगल वरते सुखकार ॥ वृक्ष अशोक धरमध्वज, वावी पुष्करिणी ज्यांही ॥ भवन भवन प्रति पडिमा, अष्टोत्तर शतमांही ॥ ३ ॥ पंचसयां धनु मोटी, पडिमा लघु सात

हाथ॥ मणिपीठे देव छंदे, सिंहासन बेठा नाथ ॥ छत्र धरे एक चामर, धारी पडिमा दोय॥ नाग भूआवली जक्ख, कुंभधरा दोय दोय ॥४॥ जोइस व्यंतर कल्प,निवासी भवण निकाय ॥ उपपाती अभिषेका, लंकारा व्यवसायं ॥ सभा सुधर्मा पंचमी, मंडप षटके जुत्त ॥ प्रत्येके त्रुबारां, जिन घर जिन अद्भुत ॥५॥ जोइसादिक मांहि, थुभ प्रत्येके बार॥ प्रत्येके प्रतिमा नति, करीये नित्य सवार ॥ थूभ सभाशुं गणतां,शासय पडिमा साठ ॥ चेइअ बिंब मिलंतां, भवणें असिसो पाठ ॥६॥ शत पचास बहुंत्तेर, योजन कहीये जेह ॥ लांबां पहोलां उंचां, अनुक्रमे भविये तेह॥ स्वर्ग नंदीश्वर कुंमल, रुचके भवन प्रमाण॥ तीस कुल गिरी दश कुरु, मेरुवने असिआण॥ ७॥ अयसी वखारे जिन घर, गजदंताये वीश ॥ मणुअनगे इक्षुकारे, चार चार सुजगीश ॥ पूर्व विहित परिमाणथी, अर्द्धप्रमाणे जाण॥ तेहथी अर्द्धप्रमाणें, नागादि परिणाम॥ ८ ॥ तेथी व्यंतर अरधा, चालीश दिग्गज सार ॥ अयसी द्रहे कंचनगिरी, देहेरां एक हजार ॥ सित्तेर महान इ दीर्घ, वैताढये एकसो सित्तेर ॥ त्रणशें अयसी कुंडे, जिन व-

चन नहिं फेर ॥९॥ वीश जमग पंच चूला, जिन घर प-न्नमा घरे॥ जंबु पमुह दश तरुये, अगियारसें सित्तेर॥ वृत्त वैताढये वीस कोश, दीह अद्ध विस्तार ॥ धणुसय चउदश चालीश, उंचपणें अवधार ॥१०॥ नंदीश्वर वि-देशे शक्री, शाण प्रिया आठ आठ॥ तस नयरे त्रीठे सवि, तीस सय गुण साठ ॥त्रिभुवन मांहे देहेरां, सगवन लख अड कोमि॥ दोयसें ब्यासी हवे सुणो, बिंब नमुं कर जोमि ॥११॥ तेरशें नेव्याशी कोटी,साठलाख असुराह जाण॥ तिग लख सहस एकाणुं, त्रणसें वीस तीहँ प्रमाण ॥ एकसो बावन कोमि, चोराणुं लाख समेत ॥ सहस चुम्मालीस सग सय, साठ वैमानिक चैत्य ॥१२॥ पन्नरसें डुचत कोमि, अमवन्न लाख सुहाय ॥ छत्रीस सहसने अयसी, त्रिभुवन बिंब कहाय ॥ चउमासी दिन चेतीये, चतुरा निध निज चित्त ॥ जो होत विद्यालब्धि तो, वीरविजय नमे नित्त ॥ १३ ॥ इति ॥

॥ पछी बेठा थका जयवीयराय पूरा कही, खमास-मण आपी इच्छाकारेण कही शाश्वता अशाश्वता जि-न आराधनार्थं करेमि काउस्सग्गं, अन्नत्थ उससिएणं

कही काउस्सग्ग पूर्ण. चार लोगस्सनो करी मोटी शांति सांजलीने, पारीने एक लोगस्स प्रगट कही पछी तेखार नवकार गणीये, पछी श्री सिद्धाचल सिद्धक्षेत्र, अष्टापद आदिश्वर, पुंमरिक गणधर जगवानने नमो जिणाणं. ए पाठ तेर वखत कहीये. पछी बेशीने जूदा जूदा पांच तीर्थनां पांच स्तवन कहीये, ते लखीये छैये.

॥ अथ श्री सिद्धाचल स्तवन ॥

॥ विमलाचल विमला पाणी, शीतल तरु छाया ठराणी ॥ रसवेधक कंचन खाणी, कहे इंद्र सुणो इंद्राणी ॥ सनेही संत ए गिरि सेवो ॥१॥ चउद क्षेत्रे तीर्थ न एवो ॥ सनेही० ॥ षट्री पाली उल्लसीये, छठ अठमे काया कसीये ॥ मोहमल्लनी साहामा धसीये, विमलाचल वेगे वसीये ॥ स० ॥ २ ॥ अन्य स्थानक कर्म जे करीए, ते हिमगिरि हेठे हरीये ॥ पाखल प्रदक्षिणा फरीये, जवजलधि हेला तरीये ॥ स० ॥ ३ ॥ शिवमंदिर चढवा काजे, सोपाननी पंक्ति विराजे ॥ चढतां समकित ते छाजे, दूर जविया अजव्य ते लाजे ॥ स०॥४॥ पांडव पमुहा केइ संता, आदिश्वर ध्यान धरंता, परमातम जाव

भजंता, सिद्धाचल सिद्ध अनंता ॥ स० ॥५॥ षट्मासी ध्यान धरावे, शुकराजन राज्यने पावे ॥ बहिरंतर शत्रु हरावे, शत्रुंजय नाम धरावे ॥स०॥६॥ प्रणिधाने भजो गिरि जाचो, तीर्थंकर नाम निकाचो ॥ मोहरायने लागे तमाचो, शुभ वीरविमल गिरि साचो ॥ स० ॥७॥

॥ अथ श्री गिरनारतिर्थ स्तवन ॥

॥सहसावन जइ वसिये, चालोने सखी सहसावन जइ वसीये॥ घरनो धंधो कबुअ न पूरो, जो करीये अहो निशिये ॥ चा० ॥ पियरमां सुख घडीय न दीठुं, भय कारण चउदिशिये ॥ चा० ॥१॥ नाक विहूणा सयल कुटुंबी, लज्जा किमपि नपसिये ॥ चा० ॥ भेलां जमीये ने नजर नहीसे, रहेवुं घोर तमसीये ॥ चा० ॥ २ ॥ पियर पाळल भल करी मेहेल्युं, सासरीये सुख वसीये ॥ ॥ चा० ॥ सासुडी ते घरघर भटके, लोकने चटके हसीये ॥ चा० ॥ ३ ॥ कहेतां सासु आवे हांसु, छुंशीये मुख लइ मशीये ॥ चा० ॥ कंत अमारो बालो भोलो, जाणे न असि मसि कसीये ॥ चा० ॥ ४ ॥ जूग बोली कलहण शीखा, घरघर शुनी ज्यूं भसीये ॥ चा० ॥ ए दुःख

देखी हरखुं मुंके, दुर्जनथी दूर खसीये ॥ चा० ॥ ५ ॥ रेवतगिरीनुं ध्यान न धरीयुं, काल गयो हस मशीये ॥ चा० ॥ श्री गिरनारे त्रण्य कल्याणक, नेमी नमन उल्लसीये ॥ चा० ॥ ६ ॥ शिव वरशे चोवीश जिनेश्वर, अनागत चउवीशीये ॥ चा० ॥ कैलास उजयंत रैवत कहीये, शरण गिरीने फरसीये ॥ चा० ॥ ७ ॥ गिरनार नंदभद्र ए नामे, आरे आरे छ ब्रविसिये ॥ चा० ॥ देखी महितल महिमा महोटो, प्रभु गुण ज्ञान वसिये ॥ चा० ॥ ८ ॥ अनुभव रंग वाधे तेम पूजो, केशर घसी उरशीए ॥ चा० ॥ भावस्तव सुन केवल प्रगटे, श्री शुभ वीर विलसीये ॥ चालोने सखी० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ श्री आबुगिरि स्तवनं ॥

आदि जिणेसर पूजतां दुःख मेटोरे ॥ आबूगढ दृढ चित्त ॥ भवि जइ भेटोरे ॥ देलवाडे देहेरां नमी ॥ दुः० ॥ चार परिमित नित्य ॥ भ० ॥ १ ॥ वीश गजबल पदमावती ॥ दुः० ॥ चक्केसरी द्रव्य आण ॥ भ० ॥ शंख दीये अंबी सुरी ॥ दुः० ॥ पंच कोश वहे बाण ॥ भ० ॥ २ ॥ बार पादशाह जीतीने ॥ दुः० ॥ विमल मंत्री आल्हाद ॥ भ० ॥

द्रव्य नरी धरती कीयो ॥ढुः०॥ ऋषनदेव प्रासाद ॥न०॥ ॥३॥ बिहुत्तर अधिकां आठशें ॥ ढुः० ॥ बिंब प्रमाण कहाय ॥न०॥ पन्नरशें कारीगरे ॥ ढुः०॥ वरस त्रिके ते थाय ॥न०॥४॥ द्रव्य अनुपम खरचियो ॥ ढुः०॥ लाख त्रेपन्न बार कोमी ॥न०॥ संवत दश अठाशीयें ॥ढुः०॥ प्रतिष्ठा करी मन होमी ॥ न० ॥५॥ देराणी जेठाणीना गोखला ॥ढुः०॥ लाख अढार प्रमाण ॥न०॥ वस्तुपाल तेजपालनी ॥ ढुः०॥ ए दोय कांता जाण ॥ न० ॥६॥ मूलनायक नेमीसरु ॥ढुः०॥ चारशें अमसठ बिंब ॥न०॥ ऋषन धातुमय देहरे ॥ढुः०॥ एकसो पिस्तालीश बिंब ॥ न०॥७॥ चउमुख चैत्य जुहारीये ॥ ढुः०॥ काउस्सगीया गुणवंत ॥ न०॥ बाणुं मित्त तेमां कहुं ॥ ढुः० ॥ अगन्यासी अरिहंत ॥ न० ॥ ८ ॥ अचलगढे प्रनुजी घणा ॥ ढुः० ॥ जात्रा करो हुंशीयार ॥न०॥ कोडी तपे फल जे लहे ॥ढुः०॥ ते प्रनु नक्ति विचार ॥ न० ॥९॥ सालंबन निरालंबने ॥ ढुः०॥ प्रनुध्याने नवपार ॥न०॥ मंगललीला पामीये ॥ ढुःख० ॥ वीरविजय जयकार ॥ नवि जइ नेटोरे ॥१०॥ इति अर्बुदगिरि स्तवनं ॥

॥ अथ अष्टापद स्तवन ॥

(कुंवर गभारो नजरे देखतांजी.—ए देशी.)

॥ चउ अठ दश दोय वंदीयजी, वर्त्तमान जगदीशरे॥ अष्टापदगिरि उपरेजी, नमतां वाधे जगीशरे ॥चउ०॥ १ ॥ भरत भरतपति जिन मुखेजी, उच्चरीयां व्रत बाररे ॥ दर्शनशुद्धिने कारणेजी, चोवीश प्रभुनो विहाररे ॥ चउ० ॥ २ ॥ उंचपणे कोश तिग कह्युंजी, योजन एक विस्ताररे॥ निज निज मान प्रमाण भरावीयांजी, बिंब स्वपर उपगाररे ॥ चउ० ॥ ३॥ अजितादिक चउ दाहिणेजी, पश्चीमे पउमाइ आठरे ॥ अनंत आदें दश उत्तरेजी, पूर्वे ऋषभ वीर पाठरे ॥ चउ० ॥ ४ ॥ ऋषभ अजित पूरवे रह्याजी, ए पण आगम पाठरे ॥ आतमशक्तिये करे जातराजी, ते भव मुक्ति वरे इणी आठरे ॥ चउ० ॥ ५ ॥ देखो अचंभो श्री सिद्धाचलेजी, हुआ असंख्य उद्धाररे॥ आज दिने पण इणे गिरिजी, झगमग चैत्य उदाररे ॥चउ०॥ ॥ ६ ॥ रहेशे उत्सर्पिणी लगेजी, देव महिमा गुण दाखरे ॥ सिंह निषद्यादिक थिरपणेजी, वसुदेव हिंडनी

शाखरे ॥ चउ० ॥ ७ ॥ केवळी जिन मुख में सुएयुंजी, इणविधे पाठ पगायरे ॥ श्री शुनवीर वचन रसेजी, गायो ऋषन शिव गयरे ॥ चउ० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री समेतशिखर स्तवनं ॥

(भमरा भूधरशें नाव्यो.–ए देशी.)

॥ नाम सुणत शीतळ श्रवणा, जस दर्शन शीतळ नयनां ॥ स्तवन करत शीतळ वयणांरे ॥ समेतशिखर नेटण चळजो ॥ १ ॥ मुफ मन बहु नवि सांनळजोरे ॥ अनुनव मित्रसहित मळजोरे ॥ स० ॥ आंकणी ॥ जंबुद्दिप दाहिण नरते, पूरव देशे अनुसरते, समेतशिखर तीरथ वरतेरे ॥ स० ॥ २ ॥ जस दर्शन घन कर्म दहे, दिनकर ताप गगन वहे, शशी वसी पद्म विनाश लहेरे ॥ ॥ स० ॥ ३ ॥ अजितादिक दश शिव वरीआ, विमलादिक नव नव तरीया, पार्श्वनाथ एम वीश मळीयारे ॥ स० ॥ ४ ॥ मुक्ति वस्था प्रनु इण गमे, वीशे टुंको अनिरामे, वीश जिनेश्वरने नामेरे ॥ स० ॥ ५ ॥ उत्तरदिश ऐरवतमांहि, श्री सुप्रतिष्ठ गिरि ज्यांहि, सुचंद्रादिक वीश त्यांहिरे ॥ स० ॥ ६ ॥ इम दश क्षेत्रे

वीश लह्या, एक एक गिरिवर सिद्ध थया, तीहोगाली पयन्ने कह्यारे ॥ स० ॥ ७ ॥ रत्नत्रयी जेहथी लहीये, भवजल पार ते निरवहिये, सज्ञान तीरथ तस कहियेरे ॥ स० ॥ ८ ॥ कल्याणक एक जिहां थाय, ते पण तीरथ कहेवाय, वीश जिनेश्वर शिव जायरे ॥स०॥९॥ तेणे ए गिरिवर अभिराम, मुनिवर कोमि शिव गाम, शिववहु खेलण आरामरे ॥ स० ॥ १० ॥ मुनिवर सूत्र अरथधारी, विचरे गगनलब्धि प्यारी, देखी तीरथ पय चारीरे ॥ स० ॥ ११ ॥ समेतशिखर सुप्रतिष्ठतणी, ठवणा पूजन दुःखहरणी, घेर बेठां शिव नीसरणीरे ॥ स० ॥ ॥ १२ ॥ दर्शने जस दर्शन वरीये, लही शुभ सुख दुःख-मां हरीये, वीरविजय शिव मंदिरीयेरे ॥ स० ॥ १३ ॥ ॥ इति समेतशिखर स्तवनं ॥ ५ ॥

॥ इति पंमित श्री वीरविजयजी विरचित ॥
॥ चौमासी देववंदनं समाप्त ॥



॥ अथ श्री पद्मविजयजी विरचित चौमासी देववंदन प्रारंभः ॥

॥ तत्र प्रथम आदिजिन चैत्यवंदन ॥

॥ विमल केवलज्ञान कमला, कलित त्रिभुवन हित-करं ॥ सुरराज संस्तुत चरण पंकज, नमो आदिजिनेश्वरं ॥१॥ विमलगिरिवर शृंगमंमन, प्रवर गुणगण नूधरं ॥ सुर असुर किन्नर कोटि सेवित ॥ नमो०॥२॥ करती नाटक कि-न्नरी गण, गाय जिनगुण मनहरं ॥ निर्जरावली नमे अ-होनिश॥न०॥३॥ पुंडरिक गणपति सिद्धि साधित, कोडि-पण मुनि मनहरं ॥ श्री विमलगिरिवर शृंग सिद्धा ॥ न० ॥ ॥४॥ निज साध्य साधन सुर मुनिवर, कोडिनंत ए गिरिव-रं॥मुगतिरमणी वरया रंगे॥न०॥५॥ पाताल नर सुरलोक मांहे, विमलगिरिवर तोपरं ॥ नहि अधिक तीरथ ती-र्थपति कहे ॥ न० ॥६॥ इम विमलगिरिवर शिखरमंमण, दुःख विहंमण ध्याइये ! निज शुद्ध सत्ता सार्धनाथ, परम ज्योतिने पाइये ॥ ७ ॥ जितमोह कोह विछोह निद्रा, परम पद स्थित जयकरं ॥ गिरिराज सेवा करण तत्पर, पद्मविजय सुहितकरं ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री ऋषभजिन चैत्यवंदन ॥

॥ आदिदेव अलवेसरुं, विनीतानो राय ॥ नाभिराय कुल मंमणो, मरुदेवा माय ॥१॥ पांचसें धनुषनी देहमी, प्रभु परम दयाल॥चोराशी लख पूर्वनुं, जस आयु विशाल ॥२॥ वृषभ लंछन जिन वृषधरु ए,उत्तम गुण मणिखाण॥ तस पद पद्म सेवनथकी, लहीये अविचल ठाण ॥३॥

॥ अथ चार थोयो प्रारंभः ॥

॥ आदिजिनवर राया, जास सोवन्न काया ॥ मरुदेवी जस माया, धोरी लंछन पाया ॥ जगतथिति निपाया, शुद्ध चारित्र पाया ॥ केवलसिरि राया, मोक्षनगरे सधाया ॥ १ ॥ सवि जिन सुखकारी, मोह मिथ्या निवारी ॥ दुर्गति दुःख भारी, शोक संताप वारी ॥ श्रेणी क्षपक सुधारी, केवलानंत धारी ॥ नमीये नरनारी, जेह विश्वोपकारी ॥ २ ॥ समोसरणे बेठा, लागे जे जिनजी मीठा ॥ करे गणप पइठा, इंद्र चंद्रादि दीठा ॥ द्वादशांगी वरीठा, गुंथतां टाले रिठा ॥ भविजन होय हिठा, देखी पुण्ये गरिठा ॥ ३ ॥ सुर समकितवंता, जेह ऋद्धे महंता ॥ जेह सज्जन संता, टालीये

मुज्ऊ चिंता ॥ जिनवर सेवंता, विघ्न वारो डुरंता ॥ जिन उत्तम थुणंता, पद्मने सुख दिंता ॥ ४ ॥ इति॥

॥ अथ स्तवन प्रारभ्यते ॥

॥ प्रथम जिनेसर प्रणमीये, जास सुगंधीरे काय ॥ कल्पवृक्षपरे तास, इंद्राणी नयन जे, भृंगपरे लपटाय ॥१॥ रोग उरग तुज नवि नमे, अमृत जे आस्वाद ॥ तेहथी प्रतिहत तेह, मानुं कोइ नवि करे, जगमां तुम्ह- शुंरे वाद ॥२॥ विगर धोइ तुऊ निरमली, काया कं- चनवान ॥ नहि प्रस्वेद लगार, तारे तुं तेहने, जे धरे ताहरुंरे ध्यान ॥ ३ ॥ राग गयो तुज मनथकी, तेमां चित्र न कोइ ॥ रुधिर आमिषथी राग, गयो तुज जन- मथी, दूध सहोदर होय ॥४॥ श्वासोश्वास कमल समो, तुज लोकोत्तर वात ॥ देखे न आहार निहार, चरमचक्षु धणी, एहवा तुज अवदात ॥५॥ चार अतिशय मूलथी, उंगणीश देवना कीध ॥ कर्म खप्याथी अग्यार, चोत्रीश एम अतिशया, समवायांगे प्रसिद्ध ॥ ६ ॥ जिन उत्तम गुण गावतां, गुण आवे निज अंग ॥ पद्मविजय कहे एह, समय प्रभु पालजो, जिम थाउं अखय अभंग॥७॥

॥ अथ श्री अजितनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ अजितनाथ प्रभु अवतर्यो, विनितानो स्वामि ॥ जितशत्रु विजयातणो, नंदन शिवगामि ॥१॥ बहोंतेर लाख पूरवतणुं, पाल्युं जिणे आय ॥ गज लंछन लंछन नहिं, प्रणमे सुरराय ॥२॥ साढाचारशें धनुषनी ए, जिनवर उत्तम देह ॥ पाद पद्म तस प्रणमीये, जिम लहीये शिव गेह॥३॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ विजया सुत वंदो, तेजथी ज्युं दिणंदो ॥ शीतलताये चंदो, धिरताये गिरिंदो ॥ मुख जिम अरविंदो, जास सेवे सुरिंदो ॥ लहो परमाणंदो, सेवना सुखकंदो ॥१॥

॥ अथ श्री संभवनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ सावत्थी नयरी धणी, श्री संभवनाथ ॥ जितारी नृप नंदनो, चलवे शिव साथ ॥ सेना नंदन चंदने, पूजो नव अंगे ॥ चारशें धनुषनुं देह मान, प्रणमुं मन रंगे ॥ साठ लाख पूरवतणुं ए, जिनवर उत्तम आय ॥ तुरग लंछन पद पद्मने, नमतां शिवसुख थाय ॥ ३ ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ संभव सुखदाता, जेह जगमां विख्याता ॥ षट्जी-

जना त्राता, आपता सुखदाता ॥ माताने भ्राता, केवल-ज्ञान ज्ञाता, दुःख दोहग त्राता, जास नामे पखाता॥१॥

॥ अथ श्री अभिनंदन चैत्यवंदन ॥

॥ नंदन संवर रायना, चोथा अभिनंदन ॥ कपि लंछन वंदन करो, भव दुःख निकंदन ॥ १ ॥ सिद्धार-थ जस मावडी, सिद्धारथ जिनराय ॥ साडा त्रणशें धनुषमान, सुंदर जस काय ॥ २ ॥ विनतावासी वंदीये ए, आयु लख पंचास ॥ पूरव तस पद पद्मने, नमतां शिवपुर वास ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ संवर सुत साचो, जास स्याद्वाद वाचो ॥ थयो हीरो साचो, मोहने दे तमाचो ॥ प्रभु गुणगण माचो, एहने ध्याने राचो ॥ जिनपद सुख साचो, भव्यप्राणी निकाचो ॥ १ ॥ इति थोय ॥

॥ अथ श्री सुमतिनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ सुमतिनाथ सुहंकरु, कोसला जस नयरी ॥ मेघ राय मंगलातणो, नंदन जित वयरी ॥ १ ॥ क्रौंचलंछन जिनराजियो, त्रणशें धनुषनी देह ॥ चालीश लाख

पूरवतणुं, आयु अति गुणगेह ॥ सुमति गुणे करी जे भर्यो ए, तर्यो संसार अगाध ॥ तस पद पद्म सेवाथकी, लहो सुख अव्याबाध ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ सुमति सुमतिदायी, मंगला जास माइ ॥ मेरुने वली राइ, ओर एहने बुलाइ ॥ क्षय कीधां घाइ, केवल ज्ञान पाइ ॥ नहि ऊणिम कांइ, सेवियें ते सदाइ ॥१॥

॥ अथ श्री पद्मप्रभ चैत्यवंदन ॥

॥ कोसंबीपुर राजियो, धर नरपति राय ॥ पद्मप्रभ प्रभुतामयी, सुसिमा जस माय ॥ १ ॥ त्रीश लाख पूरवतणुं, जिन आयु पाली ॥ धनुष अढीशें देहनी, सवि कर्मने टाली ॥२॥ पद्म लंछन परमेश्वरु ए, जिनपद पद्मनी सेव ॥ पद्मविजय कहे कीजियें, भविजन सहु नियमेव ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ अढीशें धनुष काया, त्यक्त मद मोह माया ॥ सुसिमा जस माया, शुक्ल जे ध्यान ध्याया ॥ केवलवर पाया, चामरादि धराया ॥ सेवे सुरराया, मोक्षनगरे सधाया ॥१॥

॥ अथ श्री सुपार्श्वनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ श्री सुपास जिणंदपास, टाळ्यो भव फेरो ॥ पृथिवी मात उरे जयो, ते नाथ हमेरो ॥१॥ प्रतिष्ठित सुतसुंदरे, वाणारसी राय ॥ वीश लाख पूरवतणुं, प्रभुजीनुं आय ॥२॥ धनुष बशें जिन देहडी, स्वस्तिक लंछन सार ॥ पद पद्मे जस राजतो, तार तार भव तार ॥३॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ सुपास जिन वाणी, सांभळे जेह प्राणी ॥ हृदये पहेंचाणी, ते तर्या भव्य प्राणी ॥ पांत्रीश गुण खाणी, सूत्रमां जे गुंथाणी ॥ षट् द्रव्यशुं जाणी. कर्म पीले ज्युं घाणी ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री चंद्रप्रभ चैत्यवंदन ॥

॥ लखमणा माता जनमीया, महसेन जस ताय ॥ उडुपति लंछन दीपतो, चंद्रपूरीनो राय ॥ १ ॥ दश लख पूरव आउखुं, दोढशो धनुषनी देह ॥ सुरनरपति सेवा करे, धरता अति ससनेह ॥ २ ॥ चंद्रप्रभ जिन आठमा ए, उत्तम पद दातार ॥ पद्मविजय कहे प्रणमीये, मुज प्रभु पार उतार ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ सेवे सुरवर वृंदा, जास चरणारविंदा ॥ अठम जिन चंदा, चंदवर्णे सोहंदा ॥ महसेन नृप नंदा, कापतां दुःखदंदा ॥ लंछन मिष चंदा, पाय मानुं सेविंदा ॥१॥

॥ अथ श्री सुविधिनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ सुबुद्धिनाथ नवमा नमुं, सुग्रीव जस तात ॥ मगर लंछन चरणे नमुं, रामा रूडी मात ॥१॥ आयु बे लाख पूरवतणुं, शत धनुषनी काय ॥ काकंदी नयरी धणी, प्रणमुं प्रभुपाय ॥२॥ उत्तम विधि जेहथी लह्यो ए, तेणे सुबुद्धि जिन नाम ॥ नमतां तस पद पद्मने, लहीये शाश्वत धाम ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ नरदेव भाव देवो, जेहनी सारे सेवो ॥ जेह देवाधिदेवो, सार जगमां ज्युं मेवो ॥ जोतां जग एहवो, देव दीठो न तेहवो ॥ सुबुद्धि जिन जेहवो, मोक्ष दे ततखेवो ॥१॥

॥ अथ श्री शीतलनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ नंद दृढरथ नंदनो, शीतल शीतलनाथ ॥ राजा भद्दिलपुरतणुं, चलावे शिव साथ ॥ १ ॥ लाख पू-

रवनुं आउखुं, नेवुं धनुष प्रमाण ॥ काया माया टाळी-
ने, लह्या पंचम नाण ॥ २ ॥ श्रीवत्स लंछन सुंदरु ए,
पद पद्मे रहे जास ॥ ते जिननी सेवाथकी, लहीये
लील विलास ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ शीतलजिन स्वामी, पुण्यथी सेव पामी ॥ प्रभु
आतमरामी, सर्व परभाव वामी ॥ जे शिवगति गामी,
शाश्वतानंद धामी ॥ भवि शिवसुख कामी, प्रणमीये
शिश नामी ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री श्रेयांसनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ श्री श्रेयांस अग्यारमा, विष्णु नृप ताय ॥ विष्णु
माता जेहनी, ऐंशी धनुषनी काय ॥ वरस चोराशी
लाखनुं, पाळ्युं जेणे आय ॥ खड्गी लंछन पदकजे,
सिंहपुरीनो राय ॥ राज्य तजी दिक्षा वरी ए, जिनवर
उत्तम ज्ञान ॥ पाम्या तस पद पद्मने, नमतां अविचल
थान ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ विष्णु जस मात, जेहना विष्णु तात ॥ प्रभुना

अवदात, तीन भुवनमें विख्यात ॥ सुरपति संघात, जास निकटे आयात ॥ करी कर्मनो घात, पामीया मोक्ष सात ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री वासुपूज्यजिन चैत्यवंदन ॥

॥वासव वंदित वासुपूज्य, चंपापुरी ठाम ॥ वासुपूज्य कुल चंद्रमा, माता जया नाम ॥१॥ महिष लंछन जिन बारमा, सित्तेर धनुष प्रमाण ॥ काया आयु वरस वली, बहोंतेर लाख वखाण ॥ २ ॥ संघ चतुर्विध थापीने ए, जिन उत्तम महाराय ॥ तस मुख पद्म वचन सुणी, परमानंदी थाय ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ विश्वना उपगारी, धर्मना आदिकारी ॥ धर्मना दातारी, कामक्रोधादि वारी ॥ तार्यां नरनारी, दुःख दोहग हारी ॥ वासुपूज्य निहारी, जाउं हुं नित्य वारी ॥१॥

॥ अथ श्री विमलनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ कपिलपुर विमलप्रभु, श्यामा मात मल्हार ॥ कृतवर्मा नृप कुल नभें, उगमीयो दिनकार ॥ १ ॥ लंछन राजे वराहनुं, साठ धनुषनी काय ॥ साठ लाख वरसां

तणुं, आयु सुख समुदाय ॥ २ ॥ विमल विमल पोते थयो ए, सेवक विमल करेह ॥ तुज पद पद्म विमल प्रत्ये, सेवुं धरी ससनेह ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ विमलजिन जुहारो, पाप संताप वारो ॥ एहमां छे मल्हारो, विश्वकीर्त्ति विफारो ॥ योजन विस्तारो, जास वाणी प्रसारो ॥ गुण गण आधारो, पुण्यना ए प्रकारो ॥ १ ॥

॥ अथ श्री अनंतनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ अनंत अनंतगुण आगरु, अयोध्या वासी ॥ सिंहसेन नृपनंदनो, थयो पाप निकासी ॥ १ ॥ सुजसा माता जनमीयो, त्रीश लाख उदार ॥ वरस आउ पाळीयुं, जिनवर जयकार ॥ २ ॥ लंछन सींचाणा तणुं ए, काया धनुष पचास ॥ जिन पद पद्म नम्या थकी, लहिये सहस विलास ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ अनंत अनंत नाणी, जास महिमा गवाणी ॥ सुरनर तिरि प्राणी, सांभळे जास वाणी ॥ एक वचन सम जाणी, जेह स्याद्वाद जाणी ॥ तरया ते गुण खा-

णी, पामीया सिद्धिराणी ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री धर्मनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ भानुनंदन धर्मनाथ, सुव्रता भली मात ॥ वज्र लंछन वज्री नमे, त्रण भुवन विख्यात ॥ १ ॥ दश लाख वरसनुं आउखुं, वपु धनु पीस्तालीश ॥ रत्नपुरीनो राजीयो, जगमां जास जगीश ॥ २ ॥ धर्म मारग जिनवर कहीये, उत्तम जन आधार ॥ तेणे तुज पाद पद्मतणी, सेवा करुं निरधार ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ धर्म धर्म धोरी, कर्मना पास तोरी ॥ केवलश्री जोरी, जेह चोरे न चोरी ॥ दर्शन मद गोरी, जाय भाग्या सटोरी ॥ नमे सुरनर कोरी, ते वरे सिद्धिगोरी ॥ १ ॥

॥ अथ श्री शांन्तिजिन चैत्यवंदन ॥

॥ शांति जिनेश्वर सोलमा, अचिरा सुत वंदो ॥ विश्वसेन कुल नभमणि, भविजन सुखकंदो ॥१॥ मृग लंछन जिन आउखुं, लाख वरस प्रमाण ॥ हत्थिणाउर नयरी धणी, प्रभुजी गुणमणि खाण ॥२॥ चालीश धनुषनी देहडीए, सम चउरस संठाण ॥ वदन पद्म

ज्युं चंदलो, दीठे परम कल्याण ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोयो चार प्रारभ्यंते ॥

॥ वंदो जिन शांति, जास सोवन कांति ॥ टाळे भव भ्रांति, मोह मिथ्यात्व शांति ॥ द्रव्य भाव अरि पांति, तास करता निकांति ॥ धरता मन खांति, शोक संताप वांति ॥१॥ दोय जिनवर नीला, दोय धोला सुशीला ॥ दोय रकत रंगीला, काढता कर्म कीला ॥ न करे कोइ हीला, दोय श्याम सलीला ॥ सोल स्वामिजी पीला, आपजो मोक्ष लीला ॥ २ ॥ जिनवरनी वाणी, मोह-वल्ली कृपाणी ॥ सूत्रे देवाणी, साधुने योग्य जाणी ॥ अरथे गुंथाणी, देव मनुष्य प्राणी ॥ प्रणमो हित आ-णी, मोक्षनी ए निशाणी ॥ ३ ॥ वाघेसरी देवी, हर्ष हियडे धरेवी ॥ जिनवर पय सेवी, सार श्रद्धा वरेवी ॥ जे नित्य समरेवी, दुःख तेहनां हरेवी ॥ पद्मविजय कहेवी, भव्य संताप खेवी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री शांतिजिन स्तवन ॥

॥ शोलमा शांतिजिनेश्वर देवके, अचिराना नंदरे ॥ जेहनी सारे सुरपति सेवके ॥ अ० ॥ तिरिनर सुर स-

मुदायके ॥ अ० ॥ एक योजनमांहे समायके ॥ अ० ॥
॥१॥ तेहने प्रभुजीनी वाणीके ॥ अ० ॥ परिणमे सम-
जे नविप्राणीके ॥ अ० ॥ सहु जीवना संशय भांजे-
के ॥ अ० ॥ प्रभु मेघध्वनि एम गाजेके ॥ अ० ॥ २ ॥
जेहने जोयण सवासो मानके ॥ अ० ॥ जे पूर्वना रो-
ग तेणे थानके ॥ अ० ॥ सहु नाश थाये नवा नावेके
॥ अ० ॥ षट् मासे प्रभु परभावेके ॥ अ० ॥ ३ ॥ जि-
हां जिनजी विचरे रंगके ॥ अ० ॥ नवि मूषक शलभ
पतंगके ॥ अ० ॥ नवि कोइने वयर विरोधके ॥ अ० ॥
अतिवृष्टि अनावृष्टि रोधके ॥ अ० ॥ ४ ॥ निज परचक्रनो
भय नासेके ॥ अ० ॥ वली मरकी नावे पासेके ॥ अ० ॥
प्रभु विचरे तिहां न दुकालके ॥ अ० ॥ जाये उपद्रव सं-
वि ततकालके ॥ अ० ॥ ५ ॥ जस मस्तक पूंठे राजेके ॥
॥ अ० ॥ भामंडल रविपरे गाजेके ॥ अ० ॥ कर्म क्षयथी
अतिशय अगीयारके ॥ अ० ॥ मानुं, योग्य साम्राज्य परि-
वारके ॥ अ० ॥ ६ ॥ कब देखुं भाव ए भावेके ॥ अ० ॥
एम होंश घणी चित्त आवेके ॥ अ० ॥ श्रीजिन उत्तम पद
भावेके ॥ अ० ॥ कहे पद्मविजय बनी आवेके ॥ अ० ॥ ७ ॥

॥ अथ श्री कुंथुनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ कुंथुनाथ कामित दीये, गजपुरनो राय ॥ सिरि माता उरे अवतर्यो, शूर नरपति ताय ॥ १ ॥ काया पांत्रीश धनुषनी, लंछन जस छाग ॥ केवलज्ञानादिक गुणो, प्रणमो धरी राग ॥२॥ सहस पंचाणुं वरसनुं ए, पाली उत्तम आय ॥ पद्मविजय कहे प्रणमीये, भावे श्री जिनराय ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ कुंथुजिन नाथ, जे करे छे सनाथ॥ तारे भव पाथ, जे ग्रही भव्य हाथ ॥ एहनो तजे साथ, बावले दीये बाथ ॥ तरे सुरनर साथ, जे सुणे एक गाथ ॥ १ ॥

॥ अथ श्री अरनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ नागपुरे अरजिनवरू, सुदर्शन नृप नंद ॥ देवी माता जनमीयो, भविजन सुखकंद ॥१॥ लंछन नंदावर्त्तनुं, काया धनुषह त्रीश ॥ सहस चोराशी वरसनुं, आयु जास जगीश ॥ २ ॥ अरुज अजर अज निज वरू ए, पाम्या उत्तम ठाण ॥ तस पद पद्म आलंबतां, लहीये पद निरवाण ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारंभः ॥

॥ अरजिनवर राया, जेहनी देवी माया ॥ सुदर्शननृप ताया, जास सुवर्ण काया ॥ नंदावर्त्त पाया, देशना शुद्ध दाया ॥ समवसरण विरचाया, इंद्र इंद्राणी गाया ॥१॥

॥ अथ श्री मल्लिनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ मल्लिनाथ जगणीशमा, जस मिथुला नयरी ॥ प्रभावती जस मावडी, टाले कर्मवयरी ॥ १ ॥ तात श्री कुंभ नरेसरू, धनुष पचवीशनी काय ॥ लंछन कलश मंगलकरू, निर्मम निरमाय ॥ २ ॥ वरस पंचावन सहसनुं ए, जिनवर उत्तम आय ॥ पद्मविजय कहे तेहने, नमतां शिवसुख थाय ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारंभ्यते ॥

॥ मल्लिजिन नमीये, पूरवला पाप गमीये ॥ इंद्रिय गण दमिये, आण जिननी न क्रमीये ॥ भवमां नवि भमीये, सर्व परभाव वमीये ॥ निजगुणमां रमीये, कर्म मल सर्व धमीये ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री मुनिसुव्रत चैत्यवंदन ॥

॥ मुनिसुव्रत जिन वीशमा, कच्छपनुं लंछन ॥ पद्मा-

माता जेहनी, सुमित्र नृप नंदन ॥१॥ राजगृहीनगरी धणी, वीश धनुष शरीर ॥ कर्म निकाचित रेणुव्रज, उद्दाम समीर ॥२॥ त्रीशहजार वरसतणुं ए, पाळी आयु उदार ॥ पद्मविजय कहे शिव लह्या, शाश्वत सुख निरधार ॥३॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ मुनिसुव्रत नामे, जे भवि चित्त कामे ॥ सवि संपत्ति पामे, स्वर्गनां सुख जामे ॥ दुर्गति दुःख वामे, नवि पडे मोह भामे ॥ सवि कर्म विरामे, जइ वसे सिद्धि धामे ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री नमिनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ मिथिला नयरी राजीयो, विप्रा सुत साचो ॥ विजयराय सुत छोडीने, अवरा मत माचो ॥१॥ नील कमल लंछन भलुं, पन्नर धनषनी देह ॥ नमि जिनवरनुं सोहतुं, गुण गण मणि गेह ॥ २ ॥ दश हजार वरसतणुं ए, पाम्युं परगट आय ॥ पद्मविजय कहे पुण्यथी, नमिये ते जिनराय ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ नमिये नमि नेह, पुण्य थाये ज्युं देह ॥ अघ समु-

दय जेह, ते रहे नांही रेह ॥ लहे केवल तेह, सेवना कार्य एह, लहे शिवपुर गेह, कर्मनो आणी छेह ॥३॥

॥ अथ श्री नेमीनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ नेमीनाथ बावीशमा, शिवादेवी माय ॥ समुद्रविजय पृथिविपति, जे प्रभुना ताय ॥ १ ॥ दशह धनुषनी देहडी, आयु वरस हजार ॥ शंख लंछनधर स्वामिजी, तजी राजुल नार ॥ २ ॥ सोरीपुर नयरी भली ए, ब्रह्मचारी भगवान ॥ जिन उत्तम पद पद्मने, नमतां अविचल थान ॥ ३ ॥ इति ॥

. ॥ अथ थोयो चार प्रारंभः ॥

॥ राजुल वर नारी, रूपथी रति हारी ॥ तेहना परिहारी, बालथी ब्रह्मचारी ॥ पशुआं उगारी, हूआ चारित्रधारी ॥ केवलश्री सारी, पामीया घाती वारी ॥ १ ॥ त्रण ज्ञान संयुत्ता, मातनी कूखे हूंता ॥ जनने सुरहूंता, आवी सेवा करंता ॥ अनुक्रमे व्रत करंता, पांच समिति धरंता ॥ महियल विचरंता, केवलश्री वरंता ॥२॥ सवि सुरवर आवे, भावना चित्त लावे ॥ त्रिगडुं सोहावे, देवछंदो बनावे ॥ सिंहासन ठावे, स्वामिना गुण

गावे ॥ तिहां जिनवर आवे, तत्त्व वाणी सुणावे ॥ ३ ॥ शासनसूरी सारी, अंबिका नाम धारी ॥ जे समकिति नर नारी, पाप संताप वारी ॥ प्रभु सेवाकारी, जाप जपीये सवारी, संघ दुरितने वारी, पद्मने जेह प्यारी ॥४॥ इति॥

॥ अथ स्तवन प्रारंभः ॥

॥ निरख्यो नेमि जिणंदने, अरिहंताजी ॥ राजीमति कर्यो त्याग, भगवंताजी ॥ ब्रह्मचारी संयम ग्रह्यो ॥अ०॥ अनुक्रमे थया वितराग ॥ भ०॥ १ ॥ चामर चक्र सिंहासन ॥ अ० ॥ पाद पीठ संयुक्त ॥भ०॥ छत्र चाले आकाशमां ॥ अ० ॥ देव दुंदुभिवर उत्त ॥ भ० ॥ २ ॥ सहस जोयण ध्वज सोहतो ॥ अ० ॥ प्रभु आगल चालंत ॥ भ० ॥ कनक कमल तव उपरे ॥ अ०॥ विचरे पाय ठवंत ॥ भ० ॥ ३ ॥ चार मुखे दीये देशना ॥ अ०॥ त्रण गढ झाकझमाल ॥भ०॥ केश रोम श्मश्रु नखा ॥अ०॥ वाधे नहिं कोइ काल ॥भ०॥४॥ कांटा पण उंधा होय ॥अ०॥ पंच विषय अनुकूल ॥भ०॥ षट् ऋतु समकाले फले ॥अ०॥ वायु नहि प्रतिकूल ॥ भ० ॥ ५ ॥ पाणी सुगंध सुर कुसुमनी ॥ अ० ॥ वृष्टि होये सुरसाल

॥ भ० ॥ पंखी दीये सुप्रदक्षिणा ॥ अ० ॥ वृक्ष नमे अ-सराल ॥ भ० ॥ ६ ॥ जिन उत्तम पद पद्मनी ॥ अ० ॥ सेव करे सुर कोडी ॥ भ० ॥ चार निकायना जघन्यथी ॥ अ० ॥ चैत्य वृक्ष तेम जोडी ॥ भ० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री पार्श्वनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ आश पूरे प्रभु पासजी, त्रोडे भव पास ॥ वामा माता जनमीयो, अहि लंछन जास ॥ १ ॥ अश्वसेन सुत सुखकरू, नव हाथनी काया ॥ काशीदेश वाणा-रसी, पुण्ये प्रभु आया ॥ २ ॥ एकसो वरसनुं आउखुं ए, पाली पास कुमार ॥ पद्म कहे मुक्ते गया, नमतां सुख निरधार ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोयो चार प्रारभ्यते ॥

॥ श्री पास जिणंदा, मुख पूनम चंदा ॥ पद युग अरविंदा, सेवे चोसठ इंदा ॥ लंछन नागिंदा, जास पाये सोहंदा ॥ सेवे गुणी वृंदा, जेहनी सुखकंदा ॥ १ ॥ जनमथी वर चार, कर्म नासे इग्यार ॥ उगणीश निरधार, देवे कीधा उदार ॥ सवि चोत्रीश धार, पुण्यना ए प्रकार ॥ नमिये नर नार, जेम संसार पार ॥ २ ॥ एकादश अंगा, तेम

बारे उवंगा ॥ षट् छंद सुचंगा, मूल चारे सुरंगा ॥ दश पइन्न सुसंगा, सांजलो थइ एकंगा ॥ अनुयोग बहु जं-गा, नंदिसूत्र प्रसंगा ॥३॥ पासे यक्ष पासो, नित्य करतो निवासो ॥ अम्ताळीश जासो, सहस परिवार खासो ॥ सहुये प्रनु दासो, मागता मोक्षवासो ॥ कहे पद्म नि-कासो, विघ्नना वृंद पासो ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ स्तवन प्रारंजः ॥

॥ जिनजी त्रेवीशमो जिन पास, आश मुज पूरवे रे लो ॥ माहरा नाथजीरे लो ॥ जि० ॥ इह जव परजव डुःख दोहग, सवि चूरवेरे लो ॥ मा० ॥ जि० ॥ आठ प्रातिहार्यशुं, जगमां तुं जयोरे लो ॥ मा० ॥ जि० ॥ ता-हरा वृक्ष अशोकथी, शोक दूरे गयोरे लो ॥ मा० ॥ १ ॥ ॥ जि० ॥ जानु प्रमाण गीर्वाण, कुसुमवृष्टि करेरे लो ॥ मा० ॥ जि० ॥ दिव्य ध्वनि सुर पूरे के, वांसळीये स्व-रेरे लो ॥ मा० ॥ जि० ॥ चामर केरी हार, चलंती एम क-हेरे लो ॥ मा० ॥ जि० ॥ जे नमे अमरपरे ते जवि, उर्ध्व-गति लहेरे लो ॥ मा० ॥ २ ॥ जि० ॥ पादपीठ सिंहा-सन, व्यंतर विरचियेरे लो ॥ मा० ॥ जि० ॥ तिहां बेशी

जिनराज, भविक देशना दियेरे लो ॥ मा० ॥ जि० ॥ भामंडल शिर पूंठे, सूर्यपरे तपेरे लो ॥ मा० ॥ जि० ॥ निरखी हरखे जेह, तेहनां पातक खपे रे लो ॥ मा० ॥ ॥ ३ ॥ जि० ॥ देव डुंडुभिनो नाद, गंभिर गाजे घणो रे लो ॥ मा० ॥ जि० ॥ त्रण छत्र कहे तुज के, त्रिभुवन पतिपणोरे लो ॥ मा० ॥ जि० ॥ ए ठकुराइ तुजके, बीजे नवि घटेरे लो ॥ मा० ॥ जि० ॥ रागी द्वेषी देव के, ते भवमां अटेरे लो ॥ मा० ॥ ४ ॥ जि० ॥ पूजक निंदक दोयके, ताहारे समपणेरे लो ॥ मा० ॥ जि० ॥ कमठ धरणपति उपरे, समचित्त तुं गणेरे लो ॥ मा० ॥ ॥ जि० ॥ पण उत्तम तुज पाद, पद्म सेवा कररे लो ॥ ॥ मा० ॥ जि० ॥ तेह स्वभावे भव्य के, भवसायर तरेरे लो ॥ माहरा नाथजी रे लो ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री वर्द्धमानस्वामि चैत्यवंदन ॥

॥ सिद्धारथ सुत वंदिये, त्रिशलानो जायो ॥ खत्रिकुंडमां अवतर्यो, सुर नरपति गायो ॥ १ ॥ मृगपति लंछन पाउले, सात हाथनी काया ॥ बहोत्तेर वरसनुं आउखुं, वीर जिनेश्वर राया ॥ २ ॥ खिमाविजय जिनरायना

ए, उत्तमगुण अवदात ॥ सात बोलथी वर्णव्यो, पद्म-
विजय विख्यात ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोयो चार प्रारभ्यते ॥

॥ महावीर जिणंदा, राय सिद्धार्थ नंदा ॥ लंछन मृगेंदा, जास पाये सोहंदा ॥ सुर नरवर इंदा, नित्य सेवा करंदा ॥ टाळे भवफंदा, सुख आपे अमंदा ॥ १ ॥ अड जिनवर माता, मोक्षमां सुखशाता ॥ अड जिननी ख्याता, स्वर्ग त्रीजे अख्याता ॥ अड जिनप जनेता, नाक माहेंद्र थाता ॥ सवि जिनवर नेता, शाश्वतां सुख देता ॥ २ ॥ मल्ली नेमी पास, आदि अठम खास ॥ करी एक उपवास, वासुपूज्य सुवास ॥ शेष छठ सुविलास, केवलज्ञान जास ॥ करे वाणी प्रकाश, जेम अज्ञान नाश ॥ ३ ॥ जिनवर जगदीश, जास महोटी जगीश ॥ नहिं राग ने रीश, नामीये तास शीश ॥ मातंग सुर ईश, सेवतो शति वीस ॥ गुरु उत्तम अधीश, पद्म भांखे सुशीश ॥ ४ ॥

॥ अथ स्तवन प्रारभ्यतः ॥

॥ शासन नायक शिवसुख दायक, जिनपति ॥ मा-
रा लाल ॥ पायक जास सुरासुर, चरणे नरपति ॥ मा० ॥

सायक कंदर्प केरा, जेणे चित्त नवि धर्या ॥ मा० ॥ दायक पातक वृंद, चरण अंगि कर्या ॥ मा० ॥ १ ॥ खायकभावे केवल, ज्ञान दर्शन धरे ॥ मा० ॥ ज्ञायक लोका लोकना, भावशुं विस्तरे ॥ मा० ॥ घायक घातिकर्म, मर्मनी आपदा ॥ मा० ॥ लायक अतिशय प्राति, हार्यनी संपदा ॥ मा० ॥ २ ॥ कारक षट् थयां तुजके, आतम तत्त्वमां ॥ मा० ॥ धारक गुण समुदाय, सयल एकत्वमां ॥ मा० ॥ नारक नर तिरि देव, भ्रमणथी हुं थयो ॥ मा० ॥ कारक जेह विभाव, तेणे विपरित भयो ॥ मा० ॥ ३ ॥ तारक तुं सवि जीवने, समरथ में लह्यो ॥ मा० ॥ ठारक करुणारसथी, क्रोधानल दह्यो ॥ मा० ॥ वारक जेह उपाधि, अनादिनी संहचरी ॥मा०॥ कारक जिन गुण ऋद्धि, सेवकने बराबरी ॥ मा० ॥ ४ ॥ वाणी एहवी सांभली, जिन आगमतणी ॥ मा० ॥ जाणी उत्तम आश, धरी मनमां घणी ॥मा०॥ खाणी गुणनी तुज, पद पद्मनी चाकरी ॥मा०॥ आणी हैमे हेज, करुं निज पद करी ॥मा०॥५॥इति॥ पछी जयवीयराय पुरुं कहेवुं ॥

॥ अथ शाश्वता अशाश्वताजिन चैत्यवंदन ॥

॥ कोडि सात ने लाख बोहोंतेर वखाणुं, भुवनपति चैत्य संख्या प्रमाणुं ॥ एंशी सो जिनबिंब एक चैत्य ठामे, नमो शासय जिनवरा मोक्ष कामे॥१॥ कोमी तेरशें नेव्याशी वखाणे, साठ लाख उपर सवि बिंब जाणे ॥ असंख्यात व्यंतरतणा नग्र नामे ॥नमो०॥ २ ॥ असंख्यात तिहां चैत्य तेम ज्योतिषीये, बिंब एक शत एंशी भांख्यां ऋषिये ॥ नमे ते महा ऋद्धि नवनिद्धि पामे ॥नमो०॥३॥ वली बार देवलोकमां चैत्यसार, ग्रैवेक नवमांहि देहेरां उदार ॥ तिम अनुत्तरे देखीने म पडो भामे ॥ नमो० ॥ ४ ॥ चोराशी लाख तेम सत्ताणुं सहस्सा, उपर त्रेवीश चैत्य शोभाये सरसा ॥ हवे बिंब संख्या कहुं तेह धामे ॥ नमो० ॥५॥ सो कोमीने बावन कोडी जाणो, चोराणुं लख सहस चौआल आणो॥ सय सात ने साठ उपरे प्रकामे॥नमो०॥६॥ मेरु राजधानी गजदंत सार, जमक चित्र विचित्र कांचन वखार ॥ इक्षुकारने वर्षधर नाम ठाणे ॥ नमो० ॥७॥ वली दीर्घ वैताढ्यने वृत्त जेह, जंबू आदि वृक्षे दिशा गज ठे तेह ॥ कुंम महा नदी द्रह प्रमुख चैत्य ग्रामे ॥नमो०॥८॥ मा-

नुषोत्तर नगवरे जेह चैत्य, नंदीश्वर रुचक कुंमल ठे प॰वित्त ॥ त्रिर्गलोकमां चैत्य नमिये सुठामे ॥नमो०॥ए॥ प्रनु ऋषन्न चंद्रानन वारिषेण, वली वर्द्धमानानिधे चार श्रेण ॥ एह शाश्वता बिंब सवि चार नामे ॥नमो०॥१०॥ सवि कोमिसय पनर बायाल धार, अठावन लख सहस ठत्रीश सार ॥ एंशी जोइश वण विना सिद्धि धामे ॥नमो०॥ ॥११॥ अशाश्वत जिनवर नमो प्रेम आणी, केमं नांखिये तेह जाणी अजाणी ॥ बहु तीर्थने ठाम बहु गाम गामे ॥नमो०॥१२॥ एम जिन प्रणमीजे, मोह नृपने दमीजे॥ नव नव न नमीजे, पाप सर्वे गमीजे ॥ परनाव वमीजे, जो प्रनु अठमीजे ॥ पद्मविजय नमीजे, आत्मतत्त्वे रमीजे ॥१२॥ इति श्री शाश्वत अशाश्वतजिन चैत्यवंदन ॥

॥ अहीं नमुथ्थुणं कहीने एक लोगस्सनो काउस्सग्ग चंदेसु निम्मलयरा सुधी कहेवो. एक जणे काउस्सग्ग पारी चार थोय साथे कहेवी, ते लखीये ठैये.

॥ अथ थोयो प्रारंनः ॥

॥ ऋषन्न चंद्रानन वंदन कीजे, वारिषेण दुःख वारे जी ॥ वर्द्धमान जिनवर वली प्रणमो, शाश्वत नाम ए

चारेजी ॥ भरतादिक क्षेत्रे मलि होवे, चार नाम चित्त धारेजी ॥ तेणे चारे ए शाश्वत जिनवर, नमिये नित्य सवारेजी ॥१॥ ऊर्ध्व अधो त्रिहुं लोके थइ, कोडि पन्न- रसें जाणोजी ॥ उपर कोडि बहेंतालीश प्रणमो, अडवन लख मन आणोजी ॥ छत्रीश सहस असी ते उपरे, बिंबत- णो परिमाणोजी ॥ असंख्यात व्यंतर ज्योतिषीमां, प्रणमुं ते सुविहाणोजी ॥२॥ रायपसेणी जीवाभिगमे, भगवती- सूत्रे भांखीजी ॥ वलीय अशाश्वत ज्ञाताकल्पमां, व्यवहार प्रमुखे आखीजी ॥ ते जिन प्रतिमा लोपे पापी, जिहां बहु सूत्र छे साखीजी ॥३॥ ए जिनपूजाथी आराधक, ईशान इंद्र कहायाजी ॥ तेम सुरियाभ प्रमुख बहु सु- रवर, देवीतणा समुदायाजी ॥ नंदीश्वर अठाइ महो- त्सव, करे अति हर्ष भरायाजी ॥ जिन उत्तम कल्या- णिक दिवसे, पद्मविजय नमे पायाजी ॥४॥ इति ॥

॥ अहिंआं लगतीज महोटी शांन्ति एक जणे कहे- वी, अने बीजा सर्व काउस्सग्गमां सांभले. पछी सर्व जण काउस्सग्ग पारीने प्रगट एक लोगस्स पूरण कहे. पछी बेशीने सर्व जण तेर नवकार गणे. तेवार पछी " श्री

सिद्धाचल सिद्धक्षेत्र अष्टापद आदीश्वर पुंडरीक गणधराय नमोनमः" ॥ ए पाठ-तेर वखत सर्व जनोये कहेवो. पछी पांच तीर्थनां पांच स्तवन कहेवां, ते लखीये छैये.

॥ अथ श्री शत्रुंजय स्तवन ॥

॥ जात्रा नवाणुं करीये ॥ विमलगिरि जात्रा०॥ए आंकणी॥ पूरव नवाणुंवार शेत्रुंजागिरि, ऋषभ जिणंद समोसरीये ॥ वि० ॥१॥ कोडि सहस भव पातक त्रुटे, शेत्रुंजय साहामा डग भरीये ॥ वि०॥२॥ सात छठ दोय अठम तपस्या, करी चढीये गिरिवरीये ॥ वि० ॥३॥ पुंडरिक पद जपीये हरखे, अध्यवसाय शुभ धरीये ॥ वि० ॥४॥ पापी अभवि नजरे न देखे, हिंसक पण उद्धरिये ॥ वि०॥५॥ भुंइ संथारो ने नारीतणो संग, दूरथकी परहरीये ॥ वि०॥ ॥६॥ सचित परिहारी ने एकल आहारी, गुरु साथे पद चरिये ॥ वि० ॥ ७ ॥ पडिक्कमणां दोय विधिशुं करीये, पाप पडल विखरीये ॥ वि० ॥ ८ ॥ कलिकाले ए तीरथ महोटुं, प्रवहण जेम भव तरीये ॥ वि० ॥ ९ ॥ उत्तम ए गिरिवर सेवंतां, पद्म कहे भव तरीये ॥ विमलगिरि जात्रा नवाणुं करीये ॥१०॥ इति ॥

॥ अथ श्री गिरनारजीनुं स्तवन ॥

॥ तोरणथी रथ फेरी चाल्या कंतरे, प्रीतमजी ॥ आठ भवांनी प्रीतडी त्रोडी तंत ॥ म्हारा प्रीतमजी ॥ नवमे भव पण नेह न आणो मुजरे ॥ प्री० ॥ तो शे कारण एटले आववुं तुज ॥ मा० ॥ १ ॥ एक पोकार सुणी तीर्यचनो एमरे ॥ प्री० ॥ मूको अबला रोती प्रभुजी केम ॥ मा० ॥ षट्जीवना रखवाळमां शिरदाररे ॥ प्री० ॥ तो केम विलवती स्वामि मूको नारी ॥ मा० ॥ २ ॥ शिववधू केरुं एहवुं कहेवुं रूपरे ॥ प्री० ॥ मुज मूकीने चित्तमां धरी जिन भूप ॥ मा० ॥ जिनजी लीये सहसावनमां व्रत भाररे ॥ प्री० ॥ घातीकरम खपावीने निरधार ॥ मा० ॥ ३ ॥ केवल ऋद्धि अनंती परगट कीधरे ॥ प्री० ॥ जाणी राजुल एम प्रतिज्ञा लीध ॥ मा० ॥ जे प्रभुजीये कीधुं करवुं तेहरे ॥ प्री० ॥ एम कही व्रतधर थइ प्रभु पासे जेह ॥ मा० ॥ ॥ ४ ॥ प्रभु पहेलां निज शोक्यनुं जोवा रूपरे ॥ प्री० ॥ केवलज्ञान लही थइ सिद्ध सरूप ॥ मा० ॥ शिववधू वरीया जिनवर उत्तम नेमरे ॥ प्री० ॥ पद्म कहे प्रभु राख्यो अविचल प्रेम ॥ मा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री आबुजीनुं स्तवन ॥

॥ आबु अचल रलियामणोरे लो, देलवाडे मनोहार सुखकारीरे ॥ वाद लीये जे स्वर्गशुंरे लो, देउल दीपे चार ॥ बलीहारी रे ॥ १ ॥ भाव धरीने भेटीये रे लो ॥ ए आंकणी ॥ बार पादशाह वश कीयारे लो, विमल मंत्रीसर सार ॥सु०॥ तेणे प्रासाद निपाइयोरे लो, ऋषभजी जगदाधार ॥ बलीहारी रे ॥ आबु अचल रलीयामणोरे लो ॥२॥ तेह चैत्यमां जिनवरुरे लो ॥ आठशें ने ओतेर ॥सु०॥ जेह दीठे प्रभु सांभरेरे लो, मोह कर्यो जेणे जेर ॥ ब० ॥ आबुं० ॥३॥ द्रव्य भरी धरती मवी रे लो, दीधो देउल काज ॥सु०॥ चैत्य तिहां मंडावीयोरे लो, लेवा शिवपुर राज ॥ ब० ॥ आबु०॥४॥ पन्नरशें कारीगरोरे लो, दीवीधरा प्रत्येक ॥ सु० ॥ तेम मर्दनकारक वली रे लो, वस्तुपाल ए विवेक ॥ ब० ॥ ॥ आबु० ॥५॥ कोरणी धोरणी तिहां करीरे लो, दीठे बने ते वात ॥सु०॥ पण नवी जाय मुखे कही रे लो, सुर गुरु सम विख्यात ॥ ब० ॥ आ० ॥६॥ त्रण वरसे नीपनोरे लो, ते प्रासाद उत्तंग ॥सु०॥ बार कोडी त्रे-

पन लक्ष्नेरे लो, खरच्या द्रव्य उछरंग ॥ ब० ॥ आ० ॥ ॥ ७ ॥ देराणी जेठाणीना मोखलारे लो, देखतां हरख ते थाय ॥ सु० ॥ लाख अढार खरचीयारे लो, धन्य धन्य एहनी माय ॥ ब०॥ आ० ॥ ८ ॥ मूलनायक नेमीश्वरूरे लो, जन्मथकी ब्रह्मचार ॥ सु० ॥ निज सत्ता रमणी थयारे लो, गुण अनंत आधार ॥ ब०॥ आबु०॥ ॥ ९ ॥ चारशें ने अम्सठ भलारे लो, जिनवर बिंब विशाल ॥ सु० ॥ आज भले में भेटीयारे लो, पाप गया पायाल ॥ ब० ॥ आ० ॥ १० ॥ ऋषभ धातुमयी देहरेरे लो, एकसो पिस्तालीश बिंब ॥ सु० ॥ चौमुख चैत्य जूहारीयेरे लो, मरुधरमां जेम अंब ॥ ब० ॥ आ० ॥ ११ ॥ बाणुं काउस्सग्गीआ तेहमां रे लो, अगन्यासी जिनराय ॥ सु० ॥ अचलगढे बहु जिनवरारे लो, वंदुं तेहना पाय ॥ ब० ॥ आ० ॥ १२ ॥ धातुमयी परमेश्वरारे लो, अद्भूत जास स्वरूप ॥ सु० ॥ चौमुख मुख्य जिन वंदतां रे लो, थाये निजगुण भूप ॥ ब० ॥ आ० ॥ १३ ॥ अढारशें ने अढारमां रे लो, चैतर वदि त्रीज दिन्न ॥ सु० ॥ पालणपुरना संघशुंरे लो, प्रणमी थयो धन धन्न ॥ ब० ॥

॥ आबु० ॥ १४ ॥ तिम शांति जगदीशरूरे लो, यात्रा करी अद्भूत ॥ सु० ॥ जे देखी जिन सांजरेरे लो, सेव करे पुरुहूत ॥ ब० ॥ आबु० ॥ १५ ॥ एम जाणी आबुतणीरे लो, जात्रा करशे जेह ॥ सु० ॥ जिन उत्तम पद पामशेरे लो, पद्मविजय कहे तेह ॥ ब० ॥ ॥ आबु० ॥ १६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री अष्टापद स्तवन ॥

॥ अष्टापद अरिहंतजी ॥ महारा वाहालाजीरे ॥ आदीश्वर अवधार ॥ नमीये नेहशुं ॥ महा० ॥ दश हजार मुणिंदशुं ॥ मा० ॥ वरिया शिववधू सार ॥ नमीये० ॥ १ ॥ भरत भूप भावे करयो ॥ मा० ॥ चउमुख चैत्य उदार ॥ न० ॥ जिनवर चोवीशे जिहां ॥ मा० ॥ थाप्या अति मनोहार ॥ न० ॥ मा० ॥ २ ॥ वरण प्रमाणे बिराजता ॥ मा० ॥ लंछनने अलंकार ॥ न० ॥ शम नासाये शोभता ॥ मा० ॥ चिहुं दिशे चार प्रकार ॥ न० ॥ ॥ ३ ॥ मंदोदरी रावण तिहां ॥ मा० ॥ नाटक करता विचाल ॥ न० ॥ त्रूटि तांत तव रावणे ॥ मा० ॥ निज कर वीणा ततकाल ॥ न० ॥ ४ ॥ करी बजावी

तिणे समे ॥ मा० ॥ पण नवि छोड्युं ते तान ॥ न० ॥ तीर्थंकरपद बांधीयुं ॥ मा० ॥ अद्भूत भावशुं गान ॥ न० ॥ ॥ ५ ॥ निज लब्धे गौतम गुरु ॥ मा० ॥ करवा आव्या ते जात ॥ न० ॥ जगचिंतामणि तिहां कर्युं ॥ मा० ॥ तापस बोध विख्यात ॥ न० ॥ ६ ॥ ए गिरि महिमा मोटिको ॥ मा० ॥ तिणे भवि पामे जे सिद्धि ॥ न० ॥ ते निज लब्धे जिन नमे ॥ मा० ॥ पामे शाश्वतऋद्धि ॥ न० ॥ ॥ ७ ॥ पद्मविजय कहे एहना ॥ मा० ॥ केतां करुं रे वखाण ॥ न० ॥ वीरे स्वमुखे वरणव्यो ॥ मा० ॥ नमतां कोडि कल्याण ॥ नमीये० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री समेतशिखर स्तवन ॥

॥ समेतशिखर जिन वंदीये, मोटुं तीरथ एहरे ॥ पार पमाडे भवतणो, तीरथ कहिये तेहरे ॥ समेत० ॥ १ ॥ अजितथी सुमति जिणंद लगे, सहस मुनि परिवाररे ॥ पद्मप्रभ शिवसुख वर्या, त्रणशें अड अणगाररे ॥ समेत० ॥ २ ॥ पांचशें मुनि परिवारशुं, श्री सुपास जिणंदरे ॥ चंद्रप्रभ श्रेयांस लगे, साथे सहस मुणिंदरे ॥ समेत० ॥ ३ ॥ छ हजार मुनिराजशुं, विमल जिनेश्वर सिधारे ॥ सात

सहसशुं चौदमा, निजकार्य वर कीधारे ॥ स० ॥ ४ ॥ एकशो आठशुं धर्मजी, नवशेशुं शांतिनाथरे ॥ कुंथु अर एक सहसशुं, साचो शिवपुर साथरे ॥ स० ॥५॥ मल्लिनाथ शत पांचशुं, मुनि नमी एक हजाररे ॥ तेत्रीश मुनियुत पासजी, वरिया शिव सुखसाररे ॥स०॥ ॥ ६ ॥ सत्तावीश सहस त्रणशें, उपरे ओगणपचास रे ॥ जिन परिकर बीजा केइ, पाम्या शिवपुर वासरे ॥ स० ॥ ७ ॥ ए वीशे जिन एणे गिरे, सिद्धा अणसण लेइरे ॥ पद्मविजय कहे प्रणमीये, पास सामळनुं चेइरे ॥ स० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ इति पंन्डित श्री पद्मविजयजी विरचितं ॥

॥ चौमासी देववंदन समाप्त ॥

॥ अथ श्री ज्ञानविमलजी कृत चौमासी देववंदन प्रारंभः ॥

॥ तत्र प्रथम ॥

॥ श्री आदिजिन चैत्यवंदन ॥

॥ प्रथम जिनेश्वर ऋषभ देव, सवठ्थी चविया ॥ वदि चउथे आषाढनी, शक्रे संस्तविया ॥ अठमी चै-

त्रह वदितणी, दिवसे प्रञ्जु जाया ॥ दीक्षा पण तिण-हिज दिने, चज नाणी थाया ॥ फागण वदि इग्यार सी ए, ज्ञान लहे शुन्न ध्यान ॥ मह्दा वदि तेरशे शिव लह्या, परमानंद निधान ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ थोयो प्रारंन्नः ॥

॥ ऋषन्न जिन सुहाया, श्री मरुदेवी माया ॥ कनक-वरण काया, मंगला जास माया ॥ वृषन्न लंछन पाया, देव नर नारी गाया ॥ पणसय धनु ठाया, ते प्रञ्जु ध्यान ध्याया ॥ १ ॥ ए तीरथ जाणी, जिन त्रेवीश ज-दार ॥ एक नेम विना सवि, समवसस्था निरधार ॥ गिरि कम्णे आवी, पोह्वता गढगिरनार ॥ चैत्री पुनम दिने, ते वंडु जयकार ॥२॥ ज्ञाता धर्म कथांगे, अंतगड सूत्र मकार ॥ सिद्धाचले सिध्या, बोल्या बहु अणगार ॥ ते माटे ए गिरि, सवि तीरथ शिरदार ॥ जिन न्नेटे थावे, सुख संपत्ति विस्तार ॥३॥ गौमुख चक्केश्वरी, शासननी रखवाल ॥ ए तीरथ केरी, सांनिध करे संन्नाल ॥ गि-रुर्ज जस महिमा, संप्रति काले जास ॥ श्री ज्ञानवि-मलसूरी, नामे लील विलास ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ स्तवन प्रारंभः ॥

॥ आदि करन अरिहंतजी, ढलगडी अवधार ॥ ल-लना ॥ प्रथम जिणेश्वर प्रणमीये, वंछित फल दातार ॥ ललना ॥१॥ आदि करन अरिहंतजी ॥ ए आंकणी॥ उपगारी अवनी तले, गुण अनंत भगवान ॥ ललना ॥ अविनाशी अक्षय कला, वरते अतिशय धाम ॥ ललना ॥ ॥ आ० ॥२॥ गृहवासे पण जेहने, अमृतफलनो आहार ॥ललना ॥ ते अमृत फलने लहे, ए जुगतुं निरधार ॥ ल-लना ॥ आ०॥३॥ वंश इक्षाग छे जेहनो, चढतो रस सुवि-शेष॥ललना॥ भरतादिक थया केवली, अनुभव फल रस देख ॥ललना ॥आ०॥४॥ नाभिराय कुल मंडणो, मरुदे-वी सर हंस॥ललना॥ ऋषभदेव नितु वंदिये, ज्ञानविमल अवतंस ॥ ललना ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री अजितनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ शुदि वैशाखनी तेरशे, चविया विजयंत ॥ माहा शुदि आठमे जनमीया, बीजा श्री अजित ॥ माहा शुदि नवमे मुनि थया, पोषी इग्यारस ॥ उज्ज्वल उज्ज्वल केवली, थया अक्षय कृपारस ॥ वैशाख शुक्ल पंचम

दिने ए, पंचम गति लह्या जेह ॥ धीरविमल कविराय-
नो, नय प्रणमे धरी नेह ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ अजित जिनपतिनो, देह कंचन जरीनो ॥ ज-
विक जन नगीनो, जेहथी मोह लीनो ॥ हुं तुज पद
लीनो, जेम जलमांहे मीनो ॥ नवि होय ते दीनो,
ताहरे ध्यानें पीनो ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री संजवनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ सत्तम ग्रैवेयक थकी, चविया श्री संजव ॥ फा-
गण शुदि आठम दिने, शुदि चउदसी अजिनव ॥१॥
मृगशिर मासे जनमीया, तणी पूनम संजम ॥ कार्तिक
वदी पंचमी दिने, लहे केवल निरुपम ॥ २ ॥ पंचमी
चैत्रनी उजलीए, शिव पहोता जिनराज ॥ ज्ञानविमल
प्रजु प्रणमतां, सीजे सघलां काज ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ जिन संजव वारु, लंछने अश्वधारु ॥ जवजलनिधि
तारु, काम गद तीव्र दारु ॥ सुरतरु परिवारु, उपमा काल
मारु ॥ शिवसुख किरतारु, तेहना ध्यान सारु ॥१॥ इति॥

॥ अथ श्री अभिनंदन चैत्यवंदन ॥

॥ जयंत विमान थकी चव्या, अभिनंदन राया ॥ वैशाख शुदि चोथे माघ, शुदि बीजे जाया ॥ मांहा शुदि बारसे ग्रहिय दिक्ख, पोष शुद चउदस ॥ केवल शुदि वैशाखनी, आठमे शिवसुख रस ॥ चउथा जिनवरने नमी ए, चउगति भ्रमण निवार॥ ज्ञानविमल गण पति कहे, जिन गुणनो नही पार ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ अभिनंदन वंदो, सौम्य माकंद कंदो ॥ नृप संवर नंदो, घर्षिता शेष कंदो ॥ तम तिमिर दिणंदो, लंछने वीं नारिंदो ॥ जस आगल मंदो, सौम्य गुण सार दिंदो ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री सुमतिनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ श्रावण शुदि बीजे चव्या, मेहलीने जयंत ॥ पंचमिगति दायक नमुं, पंचम जिन सुमति ॥ शुदि वैशाखनी आठमे, जन्म्या तिम संजम ॥ शुदि नवमी वैशाखनी, निरुपम जस शमदम ॥ चैत्र इग्यारस उजली ए, केवल पामे देव ॥ शिव पाम्या तिणे नवमीये,

नय कहे करो तस सेव ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ सुमति सुमति आपे, दुःखनी कोमि कापे ॥ सुमति सुजस व्यापे, बोधिनुं बीज व्यापे ॥ अविचल पद थापे, जाप दीप प्रतापे ॥ कुमति कद ही नावे, जो प्रभु ध्यान व्यापे ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री पद्मप्रभ चैत्यवंदन ॥

॥ नवम ग्रैवेयकथी चव्या, माहा वदि छठ दिवसे ॥ काति वदि बारसे जनम, सुरनर सवि हरखे ॥ वदि तेरस संजम ग्रहे, पद्मप्रभ स्वामि ॥ चैत्री पूनम केवली, वली शिवगति पामी ॥ मृगशिर वदि इग्यारसे, रक्त कमल सम वान ॥ नयविमल जिनराजनुं, धरीये निर्मल ध्यान ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ पद्मप्रभु सोहावे, चित्तमां नित्य आवे ॥ मुगतिवधु मनावे, रक्त तनु कांति फावे ॥ दुःख निकट नावे, संतती सौख्य पावे ॥ प्रभु गुण गण ध्यावे, अष्ट महासिद्धि थावे ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री सुपार्श्वनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ छठा ग्रैवेयकथी चवि, जिनराज सुपास ॥ नादरवा वदि आठमे, अवतरिया खास ॥ जेठ शुक्ल बारसी जएया, तस तेरसे संयम ॥ फागुण वदि छठे केवली, शिव लहे तस सत्तमि ॥ सत्तम जिनवर नामथी ए, साते इति शमंत ॥ ज्ञानविमलसूरि नितु लहे, तेज प्रताप महंत ॥१॥ इति

॥ अथ थोय प्रारज्यते ॥

॥ फले कामित आशे, नामथी डुःख नासे ॥ महिम महिम प्रकाशे, सातमा श्री सुपासे ॥ सुरनर जस दास, संपदानो निवास ॥ गाय नवि गुण रास, जेहना धरी उल्लास ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री चंडप्रन चैत्यवंदन ॥

॥ चंद्रप्रन जिन आठमा, चंद्रप्रन सम देह ॥ अवतरीया विजयंतथी, वदि पंचमी चैत्रेह ॥ पोष वदि बारसे जनमीया, तस तेरसे साध ॥ फागण वदिनी सातमे, केवल निराबाध ॥ नाडव सातम शिव लह्या ए, पूरी पूरण ध्यान ॥ आठ माहासिद्धि संपजे, नय कहे जिन अनिधान ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ शुभ नरगति पामी, उद्यमें धर्म धामी ॥ जिन नमो शिरनामी, चंद्रप्रभ नामे स्वामी ॥ मुज अंतर-जामी, जेहमां नहिं खामी ॥ शिवगति वर गामी, सेवना पुण्ये पामी ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री सुविधिनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ गोरा सुविधि जिणद, नाम बीजुं पुष्पदंत ॥ फागुण वदि नोमे चव्या, मेहेल्यो सुर आनंत ॥ मृग-शिर वदि पंचमे जण्या, तस छठे दीक्षा ॥ काति शुदि त्रीजे केवली, दीये बहु परे शिक्षा ॥ शुदि नवमी भा-द्रवातणी ए, अजर अमर पद होय ॥ धीरविमल से-वक कहे, ए नमतां सुख होय ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ सुविधिजिन भदंत, नाम वली पुष्पदंत ॥ सुमति तरुणिकंत, संतथी जेह संत ॥ कीयो कर्म दुरंत, लच्छी लीला वरंत ॥ भवजलधि तरंत, ते नमीजे महांत ॥१॥

॥ अथ श्री शीतलनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ प्राणांत कल्पथकी चव्या, शितलजिन दशमा ॥

वदि वैसाखनी छठे, जाणि दाघज्वर प्रशम्या ॥ माहा वदि बारस जनम दिख्या, तस बारसे लीध ॥ वदि पोष चउदश दीने, केवली परसिद्ध ॥ वदि बीजे वैशाखनी ए, मोक्ष गया जिनराज ॥ ज्ञानविमल जिनराजथी, सीझे सघलां काज ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ सुण शीतल देवा, वाल्ही तुज सेवा ॥ जेम गज मन रेवा, तुंहि देवाधि देवा ॥ परआण वदेवा, शम छे नित्य मेवा ॥ सुख सुगति लहेवा, हेतु दुःख खपेवा ॥ १ ॥

॥ अथ श्री श्रेयांसनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ अच्युत कल्पथकी चव्या, श्रेयांस जिणंद ॥ जेठ अंधारी दिवस छठे, करत बहु आनंद ॥ फागुण वदि बारशे जनम, दीक्षा तस तेरस ॥ केवली माहा अमावसि, देसन चंदन रस ॥ वदि श्रावण त्रीजे लह्या ए, शिव सुख अखय अनंत ॥ सकल समीहित पूरणो, नय कहे ए भगवंत ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ सवि जिन अवितंस, जास इख्याग वंश ॥ विजित

मदन कंस, शुद्ध चारित्र हंस ॥ कृत भय निध्वंस, तीर्थनाथ श्रेयांस॥वृषभ ककुंद अंश, ते नमुं पुण्य अंश ॥१॥ इति॥

॥ अथ श्री वासुपूज्य चैत्यवंदन ॥

॥ प्राणतथी इहां आविया, ज्येष्ठ शुदि नवमी ॥ जनम्या फागुण चौदशी, अमावासो संजम ॥ माहा शुदि बीजे केवली, चौदशी आषाढी ॥ शुदि शिव पाम्या कर्म कष्ट, सवि दूरे काढी ॥ वासुपूज्य जिन बारमा ए, विद्रुम रंगे काय ॥ श्री नयविमल कहे इश्युं, जिन नमतां सुख थाय ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ थोयं प्रारभ्यते ॥

॥ वसुदेव नृप तात, श्री जया देवी मात ॥ अरुण कमल गात, महिष लंछन विख्यात ॥ जस गुण अवदात, शीत जाणे निवात ॥ होय नित सुख शात, ध्यातां दिवस रात ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री विमलनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ अष्टम कल्पथकी चव्या, माघव शुदि बारस ॥ शुदि महा त्रीजे जण्या, तस चोथे व्रत रस ॥ शुदि पोष छठे लह्या, वर निर्मल केवल ॥ वदि सातम आ-

षाढनी, पाम्या पद अविचल ॥ विमल जिणेसर वंदिये ए, ज्ञानविमल करि चित्त ॥ तेरसमो जिन नितु दिये, पुण्य परिगल वित्त ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ विमल विमल भावे, वंदतां दुःख जावे ॥ नवनिधि घर आवे, विश्वमां मान पावे ॥ सुअर लंछन कावे, भोमि भर स्वेद थावे ॥ मनु विनति जणावे, स्वामिनुं ध्यान ध्यावे ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री अनंतनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ प्राणांतथकी चविया इहां, श्रावण वदि सातम ॥ वैशाख वदि तेरसी, जनम्या चउदसे व्रत ॥ वदि वैशाख चउदशी, केवल पुण्य पाम्या ॥ चैत्र शुदि पंचमी दिने, शिव वनिता काम्या ॥ अनंत जिनेश्वर चउदमा ए, कीधा दुशमन अंत ॥ ज्ञानविमल कहे नामथी, तेज प्रताप अनंत ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ अनंत जिन नमिजे, कर्मनी कोटी छीजे ॥ शिवसुख फल लीजे, सिद्धि लीला वरीजे ॥ बोधिबीज

मोय दीजे, आटलुं काज कीजे ॥ मुज मन अति रीझे, स्वामिनुं कार्य सीझे ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री धर्मनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ वैशाख शुदि सातमे, चविया श्री धर्म ॥ विजय थकी माहा मासनी, शुदि त्रीजे जनम ॥ तेरस मांहिं उजली, लीये संजम भार ॥ पोषिपूनमे केवली, गुणना भंभार ॥ जेठी पांचमी उजली ए, शिवपद पाम्या जेह ॥ नय कहे ए जिन प्रणमतां, वाधे धर्म सनेह ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ धर्म जिन पतिनो, ध्यान रसमांहे भीनो ॥ वर रमण शचीनो, जेहनो वर्ण लीनो ॥ त्रिभुवन सुख कीनो, लंछन वज्र दीनो ॥ नवि होय ते दीनो, जेहने तुं वसीनो ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री शांतिनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ भाद्रवा वदि सातमे, दिने सबढथी चविया ॥ वदि तेरशे जेठ जएया, दुःख दोहग शमीया ॥ जेठ चउदस वदि दिने, लीये संजम प्रेम ॥ केवल उज्वल पाषनी, नवमी दिने खेम ॥ पंचम चक्री परवमा ए,

शोलमा श्री जिनराज ॥ जेठ वदि तेरशे शिव लह्या, नय कहे सारो काज ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ थोयो प्रारभ्यते ॥

॥ जिन पति जयकारी, पंचमो चक्रधारी ॥ त्रिभु-वन सुखकारी, सप्त नय इति वारी ॥ सहस चउसठ नारी, चउद रत्नाधिकारी ॥ जिनशांति जितारी, मोह हस्ति मृगारी ॥ १ ॥ शुभ केसर घोली, मांहे कर्पूर चोली ॥ पेहेरी सीत पटोली, वासिये गंध धूली ॥ भरी पुष्प पटोली, टालीये दुःख होली ॥ सवि जिनवर टोली, पूजीये भाव भोली ॥२॥ शुभ अंग इग्यार, तेम उपांग बार ॥ वलि मूल सूत्र चार, नंदी अनुयोग द्वार॥ दश पयन उदार, छेद खटवृत्ति सार ॥ प्रवचन विस्तार, भाष्य निर्युक्ति सार ॥३॥ जय जय जय नंदा, जैन दृष्टि सुरिंदा ॥ करे परमानंदा, टालता दुःख दंदा ॥ ज्ञानविमल सूरिंदा, साम्य माकंद कंदा ॥ वर विमल गिरिंदा, ध्यानथी नित्य भद्दा ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ स्तवन प्रारंभः ॥

॥ सकल समिहित सुरतरु कंदा, शांतिकरण श्रीशांति

जिणंदा ॥ साहिबा जिनराज हमारा, मोहना जिनराज हमारा॥सा०॥ ए आंकणी ॥ त्रिकरण शुद्ध चरण तुज विलगो, पलकमात्र न रहुं हवे अलगो ॥ सा०॥१॥ विलगो ते अलगो केम जाशे,छंड्यो पण तुह्मे नवि छंडाशे॥सा०॥ प्रभु तुम्हे कोइसुं नेह न लावो,वितराग कही सवि समझावो ॥ सा०॥२॥ बीजा अवर कह्यो एम समझे, पण ढोरु दीधाथी रीझे ॥सा०॥ बालकना हठथी नवि चाले, जे मागे ते मावित्र आले ॥ सा० ॥ ३ ॥ भक्ति खांची मन मांहे आण्यो, सहज स्वभावे पण में जाण्यो ॥सा०॥ माहारे एक प्रतिज्ञा साची, तुम पद सेवा अंके जाची ॥सा०॥ ४॥ कबजे आव्या तो चूटीजे, जे मागे तेहज दीजे ॥सा०॥ अभेदपणे जो मनमां मलशो, कबजेथी प्रभुतो निकलशो ॥सा०॥५॥ अखय भाव निधि तुम पास, आपी दासने पूरो आश॥सा०॥ ज्ञानविमल समकित प्रभुताइ, दिधी साहेब एह वधाइ ॥सा०॥६॥

॥ अथ श्री कुंथुनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ श्रावण वदि नवमी दिने, सवठथी चविया ॥ वदि चउदश वैशाखनी, जिन कुंथु जणीया॥ वदि पं-

चमी वैशाखनी, लीये संयमभार ॥ शुदि त्रीजे चैत्रह तणी, लहे केवल सार ॥ पडवा दिन वैशाखनी ए, पाम्या अविचल ठाण ॥ छठा चक्री जयकरु, ज्ञानविमल सुख खाण ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ जिन कुंथु दयाला, छाग लंछन सुहाला ॥ जस गुण शुभ माला, कंठे पहेरो विशाला ॥ नमति भवि त्रिकाला, मंगल श्रेणि माला ॥ त्रिभुवन तेजाला, ताहरे तेज माला ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री अरनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ सरवारथथी आविया, फागुण शुदि बीजे ॥ मृगशिर शुदि दशमी जएया, अरदेव नमीजे ॥ मृगशिर शुदि एकादशी, संजम आदरीयो ॥ काति उजाल बारसे, केवल गुण वरीयो ॥ शुदि दशमी मृगशिरतणी ए, शिवपद लहे जिन नाथ ॥ सत्तम चक्रीने नमुं, नय कहे जोडी हाथ ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ अरजिन ए जुहारुं, कर्मनो क्लेश वारु ॥ अहोनीश

संभारं,ताहरुं नाम धारुं॥ कृत जय जय कारु,प्राप्त संसार सारु॥ नवि होय ते सारु, आपणो आप तारु॥१॥इति॥

॥ अथ श्री मल्लिनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ चव्या जयंत विमानथी, फागण शुदि चउथे॥ मृगशिर शुदि इग्यारस, जन्म्या निर्ग्रंथे ॥ ज्ञान लह्या एकण दिने, कल्याणक तीन ॥ फागुण शुदि बारसे लहे, शिव सदन अदीन ॥ मल्लि जिणेसर नीलमा ए, उगणीसमा जिनराज ॥ अणपरण्या अण भूपपद, भवजल तरण जहाज ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ जिन मल्ली मह्लिा, वान छे जेह नीला ॥ ए अचरिज लीला, स्त्रीतणे नाम पीला ॥ डुश्मन सवि पव्या, स्वामि जो छे वसीला ॥ अविचल सुख लीला, दीजिये सुणी रंगीला ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री मुनिसुव्रत चैत्यवंदन ॥

॥ अपराजितथी आविया, श्रावण शुदि पूनम॥ आठम जेठ अंधारमी, थयो सुव्रत जनम ॥ फागुण शुदि बारसे व्रत, वदि बारसे ज्ञान ॥ फागुणनी तेम

जेठ नवमी, कृष्णे निर्वाण ॥ वर्ण श्याम गुण उज्ज्वला, तिहुयण करे प्रकाश ॥ ज्ञानविमल जिनराजना, सुरनर नायक दास ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ मुनिसुव्रत स्वामी, हुं नमुं शीश नामी ॥ मुझ अंतरजामी, कामदाता अकामी ॥ दुःख दोहग वामी, पुण्यथी सेव पामी ॥ शम्या सर्वे दारामी, राज्यता पूर्ण पामी ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री नमिनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ आसो शुदि पूनम दिने, प्राणांतथी आया ॥ श्रावण वदि आठम दिने, नमी जिनवर जाया ॥ वदि नवमी आषाढनी, थया तिहां अणगार ॥ मृगशिर शुदि इग्यारसे, वर केवल धार ॥ वदि दशमी वैशाखनीए, अखय अनंता सुख ॥ नय कहे श्री जिन नामथी, नासे दोहग दुख ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ नमी जिनवर मानो, जेह नहीं विश्व छानो ॥ सुत वप्रामानो, पुण्यकेरो खजानो ॥ कनक कमल वानो, कुंज छे

जे कृपानो ॥ सवि भुवन प्रमानो, तेहशुं एक तानो ॥ १ ॥

॥ अथ श्री नेमिनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ अपराजितथी आविया, काति वदि बारस ॥ श्रावण शुदि पंचमी जएया, यादव अवतंस ॥ श्रावण शुदि ठठे संजमी, आसोज अमावस नाण ॥ शुदि आषाढनी आठमे, शिव सुख लहे रसाल ॥ अरिठ नेमि अणपरणीया ए, राजिमतिना कंत ॥ ज्ञानविमल गुण एहना, लोकोत्तर वृत्तंत ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ थोयो प्रारभ्यते ॥

॥ गया शस्त्रागारे, शंख जिन हाथ धारे ॥ कियो शब्द प्रचारे, विश्व कंप्यो तिवारे ॥ हरि संशय धारे, एहनी कोइ सारे ॥ जयो नेमकुमारे, बालथी ब्रह्मचारे ॥ १ ॥ चार जंबूद्वीपे, विचरंता जिन देव ॥ अडघातकी खंडे, सुरनर सारे सेव ॥ अम्पुष्कर अरधे, इणिपरे वीश जिनेश ॥ संप्रति ए सोहे, पंच विदेह निवेश ॥ २ ॥ प्रवचन प्रवहण शम, भवजल निधिने तारे ॥ कोहादिक महोटा, मछतणा भय वारे ॥ जिहां जीवदया रस, सरस सुधारस दाख्यो ॥ भवि भाव धरीने, चित्त करीने

चाल्यो ॥ ३ ॥ जिन शासन सान्निध्य, कारी विघन विम्मारे ॥ समकित दृष्टी-सुर, महिमा जास वधारे ॥ शत्रुंजय गिरि सेवो, जेम पामो भव पार ॥ कवि धिर विमलनो, शिष्य कहे सुखकार ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ स्तवन प्रारंभः ॥

॥ रहो रहो रे यादवराय दो घडीयां, दो घडीयां, दो चार घडीयां ॥ रहो रहोरे यादव० ॥ ए आंकणी॥ मोज महिराण शिवादेवी जाया, तुमे भो आधार अड-वडीयां ॥ रहो० ॥ १ ॥ नाह विवाह चाह करी ए, क्युं जावत फिर रथ चम्मीयां॥ रहो०॥ पशुय पोकार सुणीय किय करुणा, भोम्मी दीये पशु पंखी चम्मीयां ॥ रहो० ॥ ॥२॥ गोद बिछाउं में बली जाउं, करुं विनति चरणे पम्मीयां ॥ रहो० ॥ पियुविण दीहा ते वरिस समोवम्म, न गमे सुपन ने सेजम्मीयां ॥ रहो० ॥३॥ विरह दिवानी वि-लपति जोवन, वाडी वन घर सेरडीयां ॥ रहो० ॥ अष्ट भवांतर नेह निवाहत, नवमे भव ते विछम्मीयां ॥ रहो० ॥ ॥ ४ ॥ सहेसावनमांहे स्वामि सुणीने, राजुल रैवत-गिरी चडीयां ॥ रहो० ॥ पीयु करे निज शिरे हाथ

देवा, व्रत चाखे चारित्र शेलमीयां ॥ रहो० ॥५॥ जादव वंश विभूषण नेमजी, राजुल मीठी वेलमीयां ॥ रहो० ॥ ज्ञानविमल गुणे दंपती निरखत, हरखत होत मेरी आंखमीयां ॥ रहो० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री पार्श्वनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ कृष्ण चोथ चैत्रहतणी, प्राणतथी आया॥पोष वदि दशमी जनम, त्रिभुवन सुख पाया ॥ पोष वदि इग्यारशे, लहे मुनिवर पंथ ॥ कमठासुर उपसर्गनो, टाल्यो पली मंथ ॥ चैत्र कृष्ण चोथह दिने ए, ज्ञानविमल गुण नूर ॥ श्रावण शुदि आठमे लह्यां, अविचल सुख भरपूर ॥१॥

॥ अथ थोयो प्रारभ्यते ॥

॥ जलधर अनुकारे, पुण्य वल्ली वधारे ॥ कृत सुकृत संचारे, विघ्नने जे विदारे ॥ नव निधि आगारे, कष्टनी कोडि वारे ॥ मुज प्राणाधारे, मात वामा मल्हारे ॥ ॥ १ ॥ अर जनम सुहावे, वीर चारित्र पावे ॥ अनुभव लय लावे, केवलज्ञान पावे ॥ षट् जे कल्याण, संप्रतिजे प्रमाण ॥ सवि जिनवर भाण, श्री निवासाहि ठाण ॥२॥ दशविध आचार, ज्ञानना जिहां विचार ॥

:श सत्य प्रकार, पच्चक्खाणादि विचार॥ मुनि दश गुण
ार, नया जिहां उदार ॥ ते प्रवचन सार, ज्ञानना जे
आगार ॥३॥ दश दिशि दिशिपाला, जे महा लोग-
ाला ॥ सुरनर महिमाला, शुद्ध दृष्टि कृपाला ॥ नय-
बमल विशाला, ज्ञानलब्धी मयाला ॥ जय मंगल
ाला, पास नामे सुखाला ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ स्तवन प्रारंभः ॥

॥ प्रभु पास जिणेसर, भुवन दीनेसर, संकरो ॥ सा-
हेबजी ॥ लीला अलवेसर, धीरम मंदर, भूधरो ॥ सा-
हिबजी ॥ तुं अगम अगोचर, कृत शुचि सुंदर, संवरो
॥सा०॥ पद नमित पुरंदर, तनु छबि निर्मल, जलध-
ो ॥ सा० ॥ १ ॥ तुं अक्षय अरुपी, ब्रह्म सरुपी, ध्या
नमां ॥ सा० ॥ ध्याये जे जोगी, तुम गुण भोगी, ज्ञा-
नमां ॥ सा० ॥ व्यवहार प्रकासी, निश्चय वासी, निज
मते ॥ सा० ॥ निज आतम दरसी, अमल आजेसी,
नयमते ॥ सा० ॥ २ ॥ षट् दरशन भासे, युक्ति निरासे,
शासने ॥ सा० ॥ स्याद्वाद विशाले, सहस समाजे,
भावने ॥ सा० ॥ तुं ज्ञानने ज्ञाने, आतम ध्याने, आ-

तमा ॥ सा० ॥ परमागम वेदी, नेद अनेदी, नहीं तमा ॥ सा० ॥ ३ ॥ एक अनेके, बहुत विवेके, दखीये ॥ सा० ॥ आतम ततकामी, अगुण अकामी, लेखीये ॥ सा० ॥ सवि गुण आरामी, बो बहु नामी, ध्यानमां ॥ सा० ॥ आपे गत नामी, अंतरजामी, ज्ञानमां ॥ सा० ॥ ४ ॥ तुं अनियत चारी, नियत विचारी, योगमां ॥ सा० ॥ अध्यातम सेली, एम बहु फेली, आगमें ॥ सा० ॥ तुं धर्म संन्यासी, सहज विलासी, समगुणे ॥ सा० ॥ मोहारि विनाशी, तुं जित काशी, कवि नणे ॥ सा० ॥ ॥ ५ ॥ ज्ञान दर्शन खायक, गुणमणी लायक, नाथ बे ॥ सा० ॥ दुर्गति दुःख घायक, गुण निधि दायक, हाथ बे ॥ सा० ॥ जित मन मथ सायक, त्रिनुवन नायक, रंजणो ॥ सा० ॥ अनेकांति एकांति, तुं वेदांति, अंगजणो ॥ सा० ॥ ६ ॥ ध्यानानल योगे, पुद्गल नोगे, तें दह्या ॥ सा० ॥ अंतररिपु हणीया, मूलथी खणीया, नवी रह्या ॥ सा० ॥ तुं हेतु समीयो, सुरवर नमीयो, सहु कहे ॥ सा० ॥ ए जगथी न्यारो, चरित्र तुमारो, कुण लहे ॥ सा० ॥ ७ ॥ एम तुम गुण थुणीये,

कर्मने हणीये, पलकमां ॥ सा० ॥ पण नवि अवगणी-
ये, सेवक गणीये, ललकमां ॥ सा० ॥ वामाये नंदा,
त्रिभुवन इंदा, संथुणे ॥ सा० ॥ ज्ञानविमल सूरिंदा,
तुम पय वंदा, गुण भणे ॥ सा० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री वर्द्धमानजिन चैत्यवंदन ॥

॥ शुदि आषाढ छठ दिवसे, प्राणांतथी चवीया ॥
तेरस चैत्रह शुदि दिने, त्रिशलाये जणीया ॥ मृगशिर
वदि दशमी दिने, आपे संजम आराधे ॥ शुदि दशमी
वैशाखनी, वर केवल साधे ॥ काति कृष्ण अमावसीए,
शिव गति करे उद्योत ॥ ज्ञानविमल गौतम लहे, पर्व
दीपोत्सवं होत ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ थोयो प्रारभ्यते ॥

॥ लह्यो भवजल तीर, धर्म कोटीर हीर ॥ दुरित
रज समीर, मोह मूसार सीर ॥ दुरित दहन नीर, मेरु-
थी अधिक धीर ॥ चरम श्री जिन वीर, चरण कल्पद्रुम
कीर ॥ १ ॥ इम जिनवर माला, पुण्य नीर प्रवाला ॥
जग जंतु दयाला, धर्मनी शास्त्र शाला ॥ कृत सुकृत
सुगाला, ज्ञानलीला विशाला ॥ सुरनर महिपाला, वं-

दता ले त्रिकाला ॥ २ ॥ श्री जिनवर वाणी, द्वादशांगी रचाणी ॥ सुगुण रयण खाणी, पुण्य पीयूष पाणी ॥ नवम रस रंगाणी, सिद्धि सुखनी निशाणी ॥ डुह पिलण घाणी, सांजलो जाव जाणी ॥ ३ ॥ जिनमत रखवाला, जे वली लोगपाला ॥ समकित गुणवाला, देव देवी कृपाला ॥ करो मंगल माला, टालीने मोह झाला ॥ सहज सुख रसाला, बोध दीजे विशाला ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ स्तवन प्रारन्यते: ॥

॥ वंदो वीर जिणेसर राया, त्रिशलामाता जाय जी ॥ हरिलंउन कंचनवन काया, मुज मन मंदिर आयाजी ॥ वंदो वीर० ॥ १ ॥ डुषम समये शासन जेहनो, शीतल चंदन गयाजी ॥ जे सेवंतां नविजन मधुकर, दिन दिन होत सवायाजी ॥ वंदो० ॥ २ ॥ ते धन्य प्राणी सद्गति खाणी, जस मनमां जिन आयाजी ॥ वंदन पूजन सेवन कीधी, ते काजननी मायाजी ॥ वंदो० ॥ ॥ ३ ॥ कर्म कठिन जेदन बलवत्तर, वीर बिरुद जिन पायाजी ॥ एकलमल अतुली बल अरिहा, डुश्मन दूर गमायाजी ॥ वंदो० ॥ ४ ॥ वांछित पूरण संकट चूरण

तुं मात पिता सहायाजी ॥ सिंह परे चारित्र आराधी, सुजस निशान बजायाजी ॥ वंदो० ॥ ५ ॥ गुण अनंत भगवंत बिराजे, वर्द्धमान जिनरायाजी ॥ धिरविमल कवि सेवक नय कहे, शुद्ध समकित गुण दायाजी ॥वंदो०॥६॥ इति ॥ अहींयां जयवीयराय पूर्ण कहेवा ॥

॥ अथ श्री शाश्वता अशाश्वताजिन चैत्यवंदन ॥

॥ सकल मंगलकार एही, सिद्ध सकल पयठाण ॥ स्याद्वाद साधनपद एही, अध्यातम गुणठाण ॥ सही ए नमो जिणाणं ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ बिहुंतेर लक्ख सग्ग कोडी भवणवइ, शासय जिणहर माणं, तेरशें नेव्याशी कोडी, सग्गसढि बिंबह परमाणं ॥ सही०॥२॥ मेरु वैताढ्य वखारा कंचन, यमक कुंडद्रह जाणुं ॥ एकत्रीश जंगव्याशी जिनवर, मानवलोके वखाणुं ॥स०॥३॥ ४ ॥ तिलख इकयासी सहस चारसो, व्याशी अधिक बिंब जाणुं ॥ रुचक कुंडल नंदीश्वर प्रमुखे, सुंदर एंशी चेइयाणुं ॥ स० ॥ ४ ॥ अडशत सब सहस्रा चालीसा, बिंबताणुं परिमाणं ॥ सरवाले बत्रीशसें गुणसठी, तिर्यक लोके चेइयाणं ॥ स० ॥ ५ ॥ प्रतिमा त्रण

लख सहस एकाणुं, चउसय तेवीस परिमाणं ॥ साठ चौबारा अवर त्रिबारा, रुचककुंम्ड नंदि ठाणं ॥ स० ॥ ॥६॥ बार देवलोके नव ग्रैवेयके, अनुत्तर पंच विमाणं ॥ लाख चोराशी सहस सत्ताणुं, त्रेवीश चेइ जाणुं ॥स०॥ ॥ ७ ॥ एकसो बावन कोमि लख चोराणुं, सहस चुमालीस आणुं ॥ सातशें साठ उर्ध्वलोके, जिन पमिमा मन आणुं ॥ स० ॥८॥ त्रिभुवन मांहे शाश्वय जिनहर, सगवन्न लक्क बसें ब्याशी ॥ आठ कोडी अथ प्रतिमा संख्या, सुणजो समकितवासी ॥ स० ॥ ए ॥ पन्नरशें कोमि बेंतालीश कोडि, तेम अठावन लक्का ॥ छत्रीश सहस एंशी वळी साथिक, शासय बिंबनी संख्या ॥स०॥ ॥ १० ॥ एकसो वीश त्रिबारे प्रतिमा, चोमुखे शत चोवीश ॥ पांच सभा तिहां साठ वधारो, एक शत एंशी जगीश ॥ स० ॥ ११ ॥ ऋषभ चंडानन ने वर्द्धमान, वारिषेण चउ नामे ॥ व्यंतर ज्योतिषी मांहे असंख्या, जिनघर पडिमा माने ॥ स० ॥ १२ ॥ सकल सुरासुर भावना भावे, समकित गुण दीपावे ॥ परित संसार करी शिव जावे, कुमति ते मन भावे ॥स०॥ १४ ॥ पा-

ताले ने तिर्यक्लोके, पण सय घणुं परिमाण ॥ कप्पे सग्ग कर पणसय घणुंमाणुं, शासय अशासय जाण॥ ॥ स० ॥१४॥ तीर्थ विशेष वली शासय विणु, शेत्रुंजादिक बहुला ॥ ते सविहूने त्रिविधे नमतां, पातक जाए सघला ॥ स०॥१५॥ ज्ञानविमल प्रभु नाम जपंतां, लहीयें कोडि कल्याण ॥ मनह मनोरथ सघला सीझे, जनम सफल सुविहाण ॥स०॥१६॥ भयहर भगवंताणं जयतुर, नमो जिणाणं सहीए ॥ नमो अविचल आदिगराणं, सहीए नमो अरिहंताणं ॥ सही० ॥ १७ ॥ इति श्री सर्व जिन नमस्कारः ॥ इहां एक लोगस्सनो काउस्सग्ग "चंदेसु निम्मलयरा" सुधी एकजण करे, ते काउस्सग्ग पारी पछी चार थोयो कहेवी, ते लखीये छैये ॥

॥ अथ थोयो प्रारभ्यते ॥

॥ ऋषभदेव नमुं गुण निर्मला, दूधमांहे जेम भेली सीतोपला ॥ विमल शिलतणा शिणगार छे, भव भव मुज चित्त रुचे ॥१॥ जेह अनंत थया जिन केवली, जेह हशे विचरंता जे वली॥ जेह अशासय शासय त्रिहुं जगे, जिनपडिमा प्रणमुं नितु क्रमक्रमे ॥२॥ सर-

स आगम क्षीर महोदधि, त्रिपदी गंग तरंग करी वधी॥ भविक देह सदा पावन करे, दुरित ताप रजोमल अपहरे ॥ ३ ॥ जिनप शासन भासन कारिका, सुरसूरि जिन आणा धारिका ॥ ज्ञानविमल प्रभुताये दीपता, दुरित दुष्टतणा भय जीपता ॥ इति थोयो ॥

॥ अहींआं एक जण महोटी शांति कहे अने बीजा सर्व काउस्सग्गमां सांभळे. पछी सर्वे जणा काउस्सग्ग पारीने प्रगट एक लोगस्स पूरो कही पछी बेशीने एकवीश नवकार प्रगटपणे सर्व जण गणे. पछी सर्वे जण मुखथकी आवी रीते कहेः--श्री शत्रुंजयाय नमः ॥ १॥ श्री पुंमरिकाय नमः ॥२॥ श्री सिद्धक्षेत्राय नमः ॥३॥ श्री विमलाचलाय नमः ॥४॥ श्री सुरगिरये नमः ॥५॥ श्री महागिरये नमः ॥६॥ श्री पुण्यराशये नमः ॥७॥ श्री पर्वताय नमः ॥८॥ श्री पर्वतेंद्राय नमः ॥९॥ श्री महातीर्थाय नमः ॥१०॥ श्री शाश्वताय नमः ॥११॥ श्री दृढशक्तये नमः ॥१२॥ श्री मुक्तिनिलयाय नमः ॥१३॥ श्री पुष्पदंताय नमः ॥१४॥ श्री महापद्माय नमः ॥१५॥ श्री पृथ्विपीठाय नमः ॥ १६ ॥ श्री सुभद्रगिरये नमः

॥ १७ ॥ श्री कैलासगिरये नमः ॥ १८ ॥ श्री पातालमूलाय नमः ॥ १९ ॥ श्री अकर्मकर्त्रे नमः ॥ २० ॥ श्री सर्व काम पूरणाय नमः ॥ २१ ॥ ए सिद्धगिरिनां नामं सर्वने मुखे प्रगट कहीने पछी पांच तीर्थनां पांच स्तवन कहेवां. ते लखीये छैये:—

॥ अथ प्रथम श्री सिद्धाचल स्तवन ॥

(साहेलडीयांनी देशी.)

॥ नीलडी रायण तरुतले ॥ साहेलडीयां ॥ पीलमा प्रभुजीना पाय ॥ गुणमंजरीयां ॥ उजल ध्याने ध्याइये ॥ सा० ॥ एहिज मुगति उपाय ॥ गुण० ॥ १ ॥ शीतडी छांयाये बेशीये ॥ सा० ॥ रातडो करी मनरंग ॥ गुण० ॥ नाही धोइ निर्मल थइ ॥ सा० ॥ पहेरी वस्त्रादिक चंग ॥ गुण० ॥ २ ॥ पूजीये सोवन फूलडे ॥ सा० ॥ नेह धरीने एह ॥ गुण० ॥ ते त्रीजे भवे शिव लहे ॥ सा० ॥ थाये निर्मल देह ॥ गुण० ॥ ३ ॥ प्रित धरी प्रदक्षिणा ॥ सा० ॥ दीये एहने जे सार ॥ गुण० ॥ अभंग प्रीति होय जेहने ॥ सा० ॥ भव भव तुम आधार ॥ गुण० ॥ ४ ॥ कुसुम पत्र फल मंजरे

॥ सा० ॥ शाखा धर्म ने मूल ॥ गुण० ॥ देवतणा वासा अछे ॥सा०॥ तीरथने अनुकूल ॥ गुण० ॥ ५॥ तीरथध्यान धरी मने ॥ सा० ॥ सेवो एहने उच्छाहि ॥ गुण० ॥ ज्ञानविमल गुरु भांखियो ॥ सा० ॥ शेत्रुंजा माहातममांहि ॥ गुण० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री गिरनारतिर्थ स्तवन ॥

(देखी कामनी दोयके, कामे व्यापीयो रे.—ए देशी)

॥ नेम निरंजन देवके, सेव सदा करुंरे के ॥सेव०॥ अहोनिश ताहरुं ध्यानके, दीलमांहे धरुंरे के ॥दील०॥ शंख लंछन गुण खाणके, अंजनवान छेरे के ॥ अंजन० ॥ राजिमतीना कंतके, परण्याविणु अछे रे के ॥ पर० ॥ १ ॥ तुंहिज जीवनप्राणके, आतमराम छेरे के ॥ आत० ॥ माहरे परमाधार के, ताहरुं नाम छेरे के ॥ ता० ॥ समुद्रविजयना नंदन, नितु नितु वंदतां रे के ॥ नितु०॥ कीजीये करुणावंतके, कर्म निकंदनारे के ॥ कर्म० ॥ २ ॥ जीत्या मनमथ राज, रही गढ उपरे के ॥ रही० ॥ पेहरी शील सन्नाह, उदास ऐसी धरीरे के ॥ उदा० ॥ सवि जिनवरमां स्वामि, तुहें अधिकुं

कर्युं रे के ॥ तहें० ॥ कुमरपणे धरी धीर, महाव्रत उ- चरयां रे के ॥ महा० ॥ ३ ॥ आठ भवांतर नेह जे, तेह उवेखीनेरे के ॥ तेह० ॥ करुणा कीधी केवल, पशुयां देखीनेरे के ॥ पशु० ॥ पूरण पाळी प्रित, वळी निज नारनेरे के ॥ वळी० ॥ आपी संजमभार, पहों- चाम्मी पारनेरे के ॥ पहों० ॥४॥ जण जणशुं जे प्रित, करे ते जन घणा रे के ॥ करे० ॥ निरवाहे धरि नेह, ते विरला सुएयारे के ॥ ते वि० ॥ राजिमतीनो कंत, वखा- णे कविजनारे के ॥ वखा० ॥ तुह्मे तो दीधो छेह, ते- हना चिर मनारे के ॥ तेहना० ॥ ५ ॥ जादवनाथ स- नाथ, करो मुजने सदारे के ॥ करो० ॥ दियो मुज शिर हाथ, होवे जेम संपदारे के ॥ होवे० ॥ जलि जलि मरे पतंग, दीवाने मन नहीं रे के ॥ दीवा० ॥ नाणे मन असवार, घोम्मो दोम्मे सही रे के ॥ घोम्मो० ॥६॥ सबळा सा- थे प्रित, निर्बळने नवि कही रे के ॥ निर्बळ० ॥ पण लागी जे थोम्मी, किहां जाए वही रे के ॥ किहां० ॥ जे सज्जनशुं होय ते, भीम्म न भंजियेरे के ॥ भीम्म० ॥ तुमचा मुनि ज्यारे होय तो, कर्मने मंजियेरे के ॥ कर्म० ॥ ७ ॥ तो

दुश्मन होय दूरे, कोणे नवि गंजीये रे के ॥कोणे०॥ प्राणाधार पवित्र, दरशन दीजीयेरे के ॥ दर०॥ ज्ञानविमल सुख पूर, मलीने कीजीयेरे के ॥ मली०॥ ७॥ इति॥

॥ अथ श्री आबुतिर्थ स्तवन ॥

(चालो चालोने राज, गिरिधर रमवा जइये.–ए देशी.)

॥ आवो आवोने राज, श्री अर्बुदगिरिवर जइये ॥ श्री जिनवरनी भक्ति करीने, आतम निर्मल थइये ॥ ॥ आवो० ॥ ए आंकणी ॥ विमलवसहीना प्रथम जिनेश्वर, मुख्य निरखे सुख पइये ॥ चंपक केतकी प्रमुख कुसुमवर, कंठे टोडर ठविये ॥ आवो० ॥ १ ॥ जिमणे पासे लुणग वसही, श्री नेमिश्वर नमीये ॥ राजिमती वर नयणे निरखी, दुःख दोहग सवि गमीये ॥ आवो० ॥ ॥ २ ॥ सिद्धाचल श्री ऋषभ जिणेश्वर, रैवत नेम समरीये ॥ अर्बुदगिरिनी यात्रा करंता, चिहुं तीर्थ चित्त धरीये ॥ आवो० ॥ ३ ॥ मंडप विविध कोरणी, निरखी हैयडे ठरीये ॥ श्री जिनवरना बिंब निहाळी, नरभव सफलो करीये ॥ आवो० ॥ ४ ॥ अविचलगढ आदिश्वर प्रणमी, अशुभकरम सवि हरीये ॥ पास शांति निरखी

जव नयणों, मन.मोह्युं डुंगरीये ॥ आवो० ॥५॥ पाजे चढतां ऊजम वाधे, जेम घोमे पाखरीये ॥ सकल जिनेश्वर पूजी केसर, पापपमल सवि हरीये ॥ आवो० ॥ ॥६॥ एकणध्याने प्रजुने ध्यातां, मनमांहिं नवि मरीये॥ ज्ञानविमल कहे प्रनु सुपसाये, सकल संघ सुख करीये ॥ आवो० ॥ ७ ॥ इति श्री अर्बुदगिरि स्तवनं ॥

॥ अथ श्री अष्टापदगिरि स्तवन ॥

॥ अष्टापदगिरि यात्रा करणकुं, रावण प्रतिहरि आया ॥ पुष्फक नामे विमाने बेशी, मंदोदरी सुहाया ॥ श्री जिन पूजीये लाल, समकित निर्मल कीजे ॥ १ ॥ नयणे निरखी हो लाल, नरजव सफलो कीजे ॥ हैयडे हरखी लाल, समता संग करीजे ॥ ए आंकणी ॥ चउमुख चउगति हरण प्रसादे, चउवीसे जिन बेठा ॥ चउदिशि सिंहासन सम नासा, पूरव दिशि दोय जिठा ॥ श्री० ॥ २॥ संजव आदे दक्षिण चारे, पश्चिमे आठ सुपासा ॥ धर्म आदि उत्तर दिशि जाणो, एवं जिन चउवीसा ॥ श्री० ॥३॥ बेठा सिंहतणे आकारे, जिणहर जरते कीधां ॥ रयण बिंब मूरति थापीने, जग

जसवाद प्रसिद्धा ॥ श्री० ॥ ४ ॥ करे मंदोदरी राणी नाटक, रावण तांत बजावे ॥ मादल वीणा ताल तंबूरो, पंगरव ठमठमकावे ॥ श्री० ॥ ५ ॥ भक्तिभावे एम नाटक करतां, त्रूटी तंती विचाले ॥ सांधी आप नसा निज करनी, लघु कलाशुं ततकाले ॥ श्री० ॥६॥ द्रव्य भावशुं भक्ति न खंडी, तो अक्षयपद साध्युं ॥ समकित सुरतरु फल पामीने, तीर्थंकर पद लाध्युं ॥ श्री० ॥ ॥ ७ ॥ एणिपरे भविजन जे जिन आगे, बहुपरे भावना भावे ॥ ज्ञानविमल गुण तेहना अहनिश, सुरनर नायक गावे ॥ श्री० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री समेतशिखरगिरि स्तवन ॥

॥ समेतशिखरगिरि भेटीयेरे, मटवा भवना पास ॥ आतमसुख वरवा भणीरे, ए तीरथ गुण निवासरे ॥१॥ भविया सेवो तीरथ एह, समेतशिखर गुण गेहरे ॥ भविया सेवो० ॥ ए आंकणी ॥ समेतशिखर कल्पे कह्योरे, वीश टुंक अधिकार ॥ वीश तिर्थंकर शिव वर्या रे, बहु मुनिने परिवाररे ॥ भविया सेवो० ॥ स० ॥२॥ सिद्धखेत्रमां - वस्यारे, भांखे नय व्यवहार ॥ निश्चय

निज स्वरूपमांरे, दोय नय प्रभुजीना साररे ॥ भविया सेवो० ॥ स० ॥ ३ ॥ आगम वचन विचारतांरे, अति दुर्गम नय वाद ॥ वस्तु तत्त्व जिणे जाणीयेरे, ते आगम स्याद्वादरे ॥ भविया सेवो० ॥ स० ॥ ४ ॥ जयरथ रायतणी परेरे, जात्रा करो मनरंग ॥ भवदुःखने देइ अंजलिरे, थाये सिद्धिवधूनो संगरे ॥ भविया सेवो० ॥ ॥ स० ॥ ५ ॥ समकितयुत जात्रा करेरे, तो शिवहेतु थाय ॥ भवहेतु किरिया त्यागथीरे, आतमगुण प्रगटायरे ॥ भविया सेवो० ॥ स० ॥ ६ ॥ जेह समये समकित थयोरे, तेह समये होय नाण ॥ ज्ञानविमल गुण भांखीयोरे, आवश्यकभाष्यनी वाणरे ॥ भविया ॥ सेवो० ॥ स० ॥ ७ ॥ इति समेतशिखर स्तवनं ॥

॥ इति पंन्डित श्री ज्ञानविमलजी कृत ॥
॥ चौमासी देववंदन समाप्त ॥

॥ इति श्री देववंदनमाळा समाप्तम् ॥

॥ ॐ ह्रीँ श्री गुरु गौतमाय नमः ॥

॥ अथ श्री ॥

॥ दिवालीकल्पनुं स्तवन ॥

श्री श्रमणसंघ तिलकोपमं गौतमं,
सुगति प्रणिपत्य पादारविंदं ॥
इन्द्रभूति प्रभवमंहसो मोचकं,
कृत कुशल कोटि कल्याण कंदं ॥ १ ॥

॥ ढाल १ ली ॥
(राग रामगिरि.)

॥ मुनि मनरंजणो सयल दुःखभंजणो, वीर वर्द्धमानो जिणंदो ॥ मुगतिगति जीम लही तिम कहुं सुण सही, जेम होए हर्ष हैमे आणंदो ॥ मुनि० ॥१॥ करीय उद्घोषणा देश पुर पाटणे, मेघ जेम दान जल बहुल वरसी ॥ धण कणग मोतिया झगमगे जोतिया, जिन देइ दान इम एक वरसी ॥ मुनि० ॥ २॥ दोय विण तोय उपवास आदे करी, मागशिर कृष्ण दशमी दिहाडे ॥ सिद्धि साम्हा थइ वीर दिक्षा लेइ, पाप सं

ताप मल दूर काढे ॥ मुनि० ॥ ३ ॥ बहूल बंभण घरे पारणुं स्वामिए, पुण्य परमान्न मध्यान्ह किधुं ॥ त्रुवन-गुरु पारणा पुन्यथी बंभणे, आप अवतार फल सफल लिधुं ॥ मुनि० ॥४॥ कर्मचंडाल गोशाल संगम सूरो, जीणे जिन उपरे घात मंड्यो ॥ एवडो वैर तें पापीया सें कर्यो, कर्म कोम्हि तुंहिज सबल दंम्यो ॥मुनि०॥५॥ सहज गुण रोषिउ नामे चंम्रकोशिउ, जिनपदे श्वान जिम जेह विलगो ॥ तेहने बूझवी उध्धर्यो जगपति, किधलो पापथी अतिहें अलगो ॥ मुनि० ॥ ६ ॥ वे-दयामा त्रियाम लगें खेदियो, भेदियो तुज नवि ध्यान कुंभो ॥ शूलपाणि अन्नाणि अहो बूझव्यो, तुज कृपा पार पामे न संभो ॥ मुनि० ॥७॥ संगमे पिम्रीयो प्रभु सजल लोयणे, चिंतवे बूटस्ये किम एहो ॥ तास उपरे दया एवम्री शी करी, सापराधे जने सबल नेहो ॥मु० ॥ ॥ ८ ॥ इम उपसर्ग सहेतां तरणि मित वरस, सार्द्ध उपर अधिक पक्ष एके ॥ वीर केवल लह्युं कर्म दुःख सवि दह्युं, गहगह्युं सुर निकर नर अनेके ॥ मुनि० ॥ ॥ ९ ॥ इंद्रभूति प्रमुख सहस चउदश मुनि, साहुणी

सहस ठत्रीश विहसी ॥ उंगणसठ सहस एक लाख श्रद्धालुआ, श्राविका त्रिलख अठार सहसी ॥मुनि०॥ ॥ १० ॥ इम अखिल साधु परिवारशुं परवर्यो, जलधि जंगम जिश्यो गुहिर गाजे ॥ विचरता देश परदेश नित्य देशना, उपदिशे सयल संदेह भांजे ॥ मुनि० ॥ ११॥

॥ ढाल २ जी ॥

[विवाहलानी देशी.]

॥ हवे नित्य आय अंतिम समे, जाणीय श्री जिनरायरे ॥ नयरी अपापाए आवीया, राय समाजने ठायरे ॥ हस्तिपालगराये दीठला, आवियडा अंगण बाररे ॥ नयण कमल दोय विहसीआ, हरसीला हइआ मझाररे ॥ १ ॥ भले भले प्रभुजी पधारीया, पावस पावन किधांरे ॥ जनम सफल आज अमतणो, अम्ह घरे पाउलां दीधांरे ॥ राणी राय जिन प्रणमिया, मोटे मोतियडे वधाविरे ॥ जिन सनमुख कर जोडीय, बठला आगले आविरे ॥ २ ॥ धन अवतार अमारडो, धन दिन आजुनो एहोरे ॥ सुरतरु आंगणे मोरिउं, मोतियडे वूठलो मेहोरे ॥ आ श्युं अमारडे एवडो, पूरव

पुन्यनो नेहोरे ॥ हैम्डो देजे हरसित्त, जो जिन मळि-
त्त संजोगोरे ॥ ३ ॥ अति आदर अवधारिए, चरम
चोमासद्धुं रहियारे ॥ राय राणी सुरनर सवे, हियम्डा
मांहे गहगहियारे ॥ अमृतथी अति मीठडी, सांभळी
देशना जिननीरे ॥ पाप संताप परो थयो, शाता थइ
तन मननीरे । ४॥ इंद्र आवे आवे चंद्रमा, आवे
नरनारीनां वृंदरे ॥ त्रण प्रदक्षणा दइ करी, नाटिक नव
नवे छंदारे ॥ जिनमुख वयणनी गोठडी, तिहां होये
अति घणी मीठीरे ॥ ते नर तेहज वरणवे, जीणे निज
नयणले दीठीरे ॥ ५ ॥ इम आणंदे अतिक्रम्या, श्रा-
वण भाद्रवो आसोरे ॥ कौतिक कोडिलो अनुक्रमे,
आवियडो कार्तिक मासोरे ॥ पाखि पर्व पन्होतद्धुं, पो-
हतद्धुं पुन्य प्रवाहिरे ॥ राय अढार तिहां मिल्या, पो-
सह लेवा उछांहिरे ॥ ६ ॥ त्रिभोवन जन सवि तिहां
मिल्या, श्री जिन वंदन कामोरे ॥ सहेज संकिरण तिहां
थया, तिल पडवा नहि ठामोरे ॥ गोयमस्वामि समो-
वडी, स्वामि सुधर्मा तिहां बेठारे ॥ धन धन ते जिणे
आपणे, लोयणे जिनवर दिठारे ॥ ७ ॥ पूरण पुन्यनां

उषध, पोषधव्रत वेगे लीधां रे ॥ कार्त्तिक काली चउदशे, जिन मुखे पच्चक्खाण कीधां रे ॥ राय अढार प्रमुख घणे, जिन पगे वांदणां दिधां रे ॥ जिन वचनामृत तिहां घणे, भवियणे घट घट पीधां रे ॥ ८ ॥

॥ ढाळ ३ जी ॥ राग मारु ॥

॥ श्री जगदीश दयाळु दुःख दूरे करे रे, कृपा कोष्टि तुज जोमी ॥ जगमां रे (२) कहिए केहने वीरजी रे ॥ १ ॥ जगजनने कुण देशे एहवी देशनारे, जाणि निज निरवाण ॥ नवरसरे (२) सोल पहोर दिये देशनारे ॥ २ ॥ प्रबल पुन्यफल संसुचक सोहामणां रे, अज्झयणां पणपन्न ॥ कहियां रे (२) महियां सुख सांभली होएरे ॥ ३ ॥ प्रबल पाप फल अज्झयणां तिम तेटलां रे, अण पुछ्यां छत्रीस ॥ सुणतां रे (२) भणतां सवि सुख संपजेरे ॥ ४ ॥ पुण्यपाल राजा तिहां धर्म कथांतरे रे, कहो प्रभु प्रत्यक्ष देव ॥ मुजनेरे (२) सुपनअर्थ सवि साचलोरे ॥५॥ गज वानर खीर द्रुम वायस सिंह घडोरे, कमलबीज इम आठ ॥ देखिरे (२) सुपन सभय मुज मन हुओरे ॥ ६ ॥ उखर बिज कमल अ-

स्थांनके सिंहनुंरे, जीव रहित शरीर ॥ सोवनरे (२) कुं-भ मलिन ए शुं घटेरे ॥ ७ ॥ वीर भणे भुपाल सुणो मन थीर करीरे, सुमिण अर्थ सुविचार ॥ हैडेरे (२) धरज्यो धर्म धुरंधरुरे ॥ ८ ॥

॥ ढाल ४ थी ॥

॥ श्रावक सिंधुर सारिखा, जिनमतना रागी ॥ त्यागी सद्गुरु देव धर्म, तत्त्वे मति जागि ॥ विनंय.विवेक विचारवंत, प्रवचन गुण पूरा ॥ एहवा श्रावक होयसे, मतिमंत सनुरा ॥ १ ॥ लालचे लागा थोभिले, सुखे राचि रहिया ॥ घरवासे आशा अमर, परमारथ दुहिया ॥ व्रत वैराग्यकी नहि, कोइ लेशे प्राये ॥ गजसुपने फल एह, नेह नवि मांहोमांहे ॥ २ ॥ वानर चंचल चपल जाति, सरखा मुनि मोटा ॥ आगल होश्ये लालचि, लोभी मन खोटा ॥ आचारज ते आचार हिण, प्रायें परमादि ॥ धर्मभेद करश्ये घणा, सहजे स्वारथवादी ॥ ३ ॥ को गुणवंत महंत संत, मोहन मुनि रुडा ॥ मुख मीठा मायाविया, मनमांहे कुडा ॥ करस्ये माहोमांहे वाद, परवादें नासे ॥ बीजा सुरनतणो

विचार, इम वीर प्रकाशे ॥ ४ ॥ कल्पवृक्ष सरिखा हो-
स्ये, दातार भलेरा ॥ देव धर्म गुरु वासना, वरि वा-
रिना वेरा ॥ सरल वृक्ष सविने दीएं, मनमां गहगहता ॥
दाता दुर्लभ वृक्ष राज, फल फुले रहता ॥ ५ ॥ क-
पटी जिनमत लिंगिया, वळी बबूल सरिखा ॥ खीर वृक्ष
आम्रा थया, जीम कंटक तिखा ॥ दान देयंतां वारसी,
अन्य पावन पात्री ॥ त्रिजा सुपन विचार कह्यो, जिन
धर्म विघात्री ॥ ६ ॥ सिंह कलेवर सारिखो, जिनशा-
सन सबलो ॥ अति दुर्दांत अगाहनिय, जिनवायक
जमलो ॥ परशासन सावज अज, ते देखी कंपे ॥ च-
उथा सुपन विचार इम, जिनमुखथी जंपे ॥ ७ ॥ गल
गंगाजल सारिखो, मूकी मतिहिणा ॥ मुनि मन राचे
छिल्लरे, जीम वायस दिणा ॥ वंचक आचारज अनेक,
तिणे छलविया ॥ ते धर्मांतर आदरे, जन्मति बहु भ-
विया ॥ ८ ॥ पंचम सुपन विचार एह, सुणीयो राजा-
ने ॥ छठे सोवन कुंभ दीठ, मइलो सुंणि काने ॥ को
को मुनि दरसण चारित्र, ग्यान पूरण देहा ॥ पाले पं-
चाचार चारु, रंमि निज गेहा ॥ ९ ॥ को कपटी चा-

स्त्रि वेष, लेइ विप्रतारे ॥ मइत्रो सोवन कुंन जीम, पिंम पापे नारे ॥ ठठा सुपन विचार एह, सातमे इं- द्विवर ॥ उकरडे उत्पत्ति थइ, ते शुं कहो जिणवर ॥ १० ॥ पुएयवंत प्राणि हुस्ये, प्राहिं मध्यम जाति ॥ दाता नोक्ता ऋद्धिवंत, निर्मल अवदात ॥ साधु अ- साधु जति वदे, तव.सरिखा किजे ॥ ते बहु . नद्रक नवियणे, स्यो उलंनो दीजे ॥ ११ ॥ राजा मंत्रिपरे सु साधु, आपोपुं गोपी ॥ चारित्र सुधु राखस्ये, सवि पाप विलोपी ॥ सप्तम सुपन विचार वीर, जिनवरे इम क- हियो ॥ अठम सुपनतणो विचार, सुंणि मन गहग- हिउं ॥ १२ ॥ न लहे जिनमत मात्र जेह, तेह पात्र न कहिए ॥ दिधानुं परनव पुण्य फल, कांइ न ल- हिये ॥ पात्र अपात्र विचार नेद, नोला नवि लहे- स्ये ॥ पुएय अर्थे ते अर्थ आथ, कुपात्रे देहस्ये॥१३॥ उखरनूमि हष्ट बिज, तेहनो फल कहिएं ॥ अष्टम सु- पन विचार इंम, राजा मन ग्रहियें ॥ एह अनागत सवि सरुप, जाणि तिणे काले ॥ दिक्षा लीधी वीर पास, राजा पुन्यपाले ॥ १४ ॥

॥ ढाल ५ मी ॥
(राग गोडी)

॥ इंद्रभूति अवसर लहिरे, पूछे कहो जिनराय ॥ श्युं आगल हवे होयस्येरे, तारण तरण जीहाजोरे ॥ ॥ कहे जिन वीरजी० ॥ १ ॥ मुज निर्वाण समय थकी रे, त्रिहू वरसे नव मास ॥ माठेरो तिहां बेसश्येरे, पंचम कांल निरासोरे ॥ कहे० ॥ २ ॥ बारे वरसे मुज थकिरे, गौतम तुज निरवाण ॥ सोहम वीशे पामशेरे, वरसे अखय सुख ठांणोरे ॥ कहे० ॥ ३ ॥ चउसठ वरसे मुज थकीरे, जंबूने निरवाण ॥ आथमसे आदित्य थकीरे, अधिकुं केवलनांणोरे ॥ कहे० ॥ ४ ॥ मन पजव परमावधिरे, क्षपकोपशम मन आंण ॥ संयम त्रिण जिन कल्पनीरे, पुलागाहारग हाणरे ॥कहे०॥५॥ सिज्जंभव अठाणवेरे, करस्ये दसवैआलिय ॥ चउदपूर्वि भद्रबाहूथीरे, थाश्ये सयल विछिन्नरे ॥ कहे० ॥ ॥ ६ ॥ दोयशत पन्नरे मुज थकिरे, प्रथम संघयण संठाण ॥ पूवगुं भगते नवि हूस्येरे, महाप्राण नवि जांणोरे ॥ कहे० ॥ ७ ॥ चउत्रयपने मुज थकिरे, होस्ये

कालिकसूर ॥ करस्ये चउथी पजुसणोरे, वरगुण रयणनो पूरोरे ॥ कहे० ॥ ८ ॥ मुजथी पण चोराशियेरे, होस्ये वयरकुंमार ॥ दसपूर्वि अधिकालिउ रे, रहस्ये तिहां निरधारोरे ॥ कहे० ॥ ९ ॥ मुज निर्वाण थकी उसेरे, वीस पछी वनवास ॥ मुकी करसे नगरमां रे, आर्यरक्षित मुनि वासोरे ॥ कहे० ॥ १० ॥ सहसें वरसें मुज थकीरे, चउदपूरव विछेद ॥ जोतिष अंणमिलतां हूसेरे, बहूल मतांतर भेदोरे ॥ कहे० ॥११॥ विक्रमथी पंच पंच्याशिएरे, होस्ये हरिभद्रसूरि ॥ जिनशासन अजुवालसेरे, जेहथी दूरियां सवि दूरोरे ॥कहे०॥ ॥ १२ ॥ द्वादश सत्त सत्तर समेरे, मुजथी मुनि सूर हिर ॥ बप्पभट्ट सूरि होयसेरे, ते जिनशासन वीररे ॥ ॥ कहे० ॥ १३ ॥ मुज प्रतिबिंब भरावस्येरे, आंमराय भूपाल ॥ सार्द्ध त्रिकोटी सोवनतणोरे, तास वयणथी विशालोरे ॥ कहे० ॥ १४ ॥ षोडस शत उंगणोतरेरे, वरसे मुजथी मुणिंद ॥ हेमसूरि गुरु होयस्येरे, शासन गयण दिणंदोरे ॥ कहे० ॥ १५ ॥ हेमसूरि पडिबोहीसेरे, कुमारपाल भूपाल ॥ जिनधर्म मत कास्ये महीरे,

जिनशासन प्रतिपाळोरे ॥ कहे० ॥ १६ ॥ गौतम नव-ळा समयथीरे, मुज शासन मन मेळ ॥ मांहोमांहे न-वि होस्येरे, मछ गलागळ केळोरे ॥ कहे० ॥ १७ ॥ मुनि मोटा मायावियारे, वेढीगारा विशेष ॥ आप स्वा-र्थवसी थयारे, ए विटंबश्ये वेषोरे ॥ कहे० ॥ १८ ॥ लोभि लखपति होयस्येरे, जम सरिखा भूपाळ ॥ स-ज्जनविरोधि जन हूसेरे, नवि लज्जाळु दयाळोरे ॥ क-हे० ॥ १९ ॥ निर्लोभि निर्माइयारे, सुधा चारित्रवंत ॥ थोमा मुनि महियले हूसेरे, सुण गौतम गुणवंतरे ॥ क-हे० ॥ २० ॥ गुरुभगति शिष्य थोडलारे, श्रावक भ-गति विहीण ॥ मात पिताना सुत नहीरे, ते महिळा-ना आधिनोरे ॥ कहे० ॥ २१ ॥ दुपसहसूरी फलगुसूरी रे, नायळ श्रावक जाण ॥ सच्चसिरि तिम श्राविकारे, अंतिम संघ वखाणयोरे ॥ कहे० ॥ २३ ॥ वरस सहस एकवीसतेरे, जिनशासन विख्यात ॥ अविचळ धर्म च-लावशेरे, गौतम आगम वातोरे ॥ कहे० ॥ २४ ॥ दूषमे दूषमा काळनीरे, ते कहिये शी वात ॥ कायर कंपे है-मलोरे, जे सुणतां अवदातोरे ॥ कहे० ॥ २५ ॥

॥ ढाल ढठी ॥

(पिउडो घरे आवे.—ए देशी.)

॥ मुजशुं अविहड नेह बांध्यो, हेज हैमा रंगे ॥ दृढ मोहबंधण सबल बांध्यो, वज्र जिम अनंग ॥ अलगा थया मुजथकी एहने, उपजसेरे केवल निय अंगके ॥ गौतमरे गुणवंता ॥ १ ॥ अवसर जाणि जिनवरे, पुठिया गोयमस्वाम ॥ दोहग डुःखिया जीवने, आविये आपण काम ॥ देवसर्मा बंभणो, जइ बुझवोरे तेणे ढुंकडे गामके ॥ गौ० ॥२॥ सांजली वयण जिणंदनुं, आणंद अंग न मायं ॥ गौतम बे कर जोमि, प्रणम्या वीरजिनना पाय ॥ पांगस्या पूरव प्रितथी, चउनांणिरे मनमां निरमायके ॥ गौ० ॥३॥ गौतम गुरु तिहां आविया, वंदाविउ ते विप्र ॥ उपदेश अमृत दीधलो, पीधलो तिणे क्षिप्र ॥ धसमस करतां बंभणे, बारी वागीरे थइ वेदन विप्रके ॥ गौ० ॥ ४ ॥ गौतम गुरुनां वयणलां, नवि धर्यां तिणे कान ॥ ते मरी तस शिर कृमि थयो, कामनीने एक तान ॥ उठिया गोयम जाणिउ, तस चरीयोरे पोताने ज्ञानके ॥गौ०॥५॥

॥ ढाळ ७ मी ॥

(राग रामगिरि.)

॥ चोसठ मणनां ते मोति झगमगेरे, गाजे गुहिर गंभिर सिरेरे ॥ पुरां तेत्रीस सागर पूरवेरे, नादे लिणा लवसत्तमिया सूररे ॥ वीरजी वखाणेरे जग जन मोहियोरे ॥ १ ॥ अमृतथी अधिकि मीठी वाणीरे, सुणतां सुखडो जे मनमे संपजेरे ॥ ते लहेस्ये जे पोहोचस्ये निर्वाणरे ॥ वी० ॥ २ ॥ वाणि पम्हंदे सुर पम्बिोही यारे, सुणतां पामे सुख संपत्तिनी कोडरे ॥ बीजा अम्ल उल्लटथी घणारे, आवी वेगा आगल वे कर जोमरे ॥ वी० ॥ ३ ॥ सोहम इंदो शासन मोहीयोरे, पूछे परमश्वरने तुम आगरे ॥ बे घम्ि वधारो स्वातिथकी परहुरे, तो भस्मग्रह सघलो दूरे जायरे ॥ वी० ॥ ४ ॥ शासनशोभा अधिकि वाधस्येरे, सुखीया होशे मुनिवरना वृंदरे ॥ संघ सयलने सवि सुख संपदारे, होश दिन दिनथी परमानंदरे ॥ वी० ॥ ५ ॥ इंदा न कदारे कहिए केहतुंरे, केणे सांध्युं नवि जाए आयरे ॥ भाविपदारथ भावे निपजेरे, जे जिम सरज्यो ते तिम थायरे

॥ वी० ॥ ६ ॥ सोळ पहोरनी देता देशनारे, परधानकनामा रुध्यमो अज्झयणरे ॥ कहेतां काति वदि कहुं परगम्रिरे, वीरजी पोहोता पंचमीगति रयणरे ॥ वी०॥७॥ ज्ञानदीवारे जब दूरे थयोरे, तव किधि देवे दीवानी श्रेणिरे ॥ तिमरे चिहुं वरणे दीवा किधलारे, दिवाळी कहियें ठे कारण तेणरे. ॥ वी० ॥ ८ ॥ आंसू परिपूरण नयण आखंमलोरे, मूकी चंदननी चेहमां अंगरे ॥ दिधो देवे दहन सघळे मिलिजीरे, हा धिग् धिग् संसार विरंगरे ॥ वीरजी० ॥ ए ॥

॥ ढाल ७ मी ॥

(राग विराग.)

॥ वंदेसु वेगे जइ वीरो, इम गौतम गहगहतां ॥ मारगे आवतां सांभलीउं, वीर मुगतिमांहे पोहतारे ॥ जिनजी तुं निसनेही मोटो ॥ अविहड प्रेम हतो तुज उपरे, ते तें कीधो खोटोरे ॥ जिनजी० ॥ १ ॥ हे हे वीर कर्यो अणघटतो, मुज मोकलीयो गामे ॥ अंतकाळे वेगां तुज पासे, हुं स्ये नावत कामरे ॥ जिनजी० ॥ ॥ २ ॥ चौदसहस मुजसरिखा ताहरे, तुजसरिखो मुज

तुंहि ॥ विश्वासी वीरे छेतरीजे, ते श्या अवगुण मुंहिरे ॥ जिनजी० ॥ ३ ॥ को केहने छेहडे नवि वलगे, जो मिलतो होए सबलो ॥ मिलतास्युं जेणे चित्त चोर्यो, ते तिणे कर्यो निबलोरे ॥ जिनजी० ॥ ४ ॥ निठुर हैडा नेह न किजे, निसनेही नर निरखी ॥ हैमां हेजे मिले जिहां हरखी, ते प्रीतलम्नि सरीखिरे ॥जिनजी०॥ ॥ ५ ॥ तें मुजने मनमो नवि दीधो, मुज मनमो तें लीधो ॥ आप सवारथ सघलो किधो, मुगति जइने सिद्धोरे ॥ जिनजी० ॥६॥ आज लगे तुज मुजशुं अंतर, सुपनंतर नवि हुंतो ॥ हैमा हेजे हियालि छंमी, मुजने मूक्यो रोवंतारे ॥ जिनजी० ॥ ७ ॥ को केहशुं बहु प्रेम म करश्यो, प्रेम विटंबण विरुइ ॥ प्रेम परवश जे दुःख पामे, ते कथा घणुं गिरुइरे ॥ जिनजी० ॥ ८ ॥ निसनेही सुखिया रहे सघले, ससनेही दुःख देखे ॥ तेल दुग्ध परे परनी पीमा, पामे नेह विशेषरे ॥ जिनजी० ॥ ९ ॥ समवसरण कहिएं हवे होशे, कहो कुंण नयणें जोशे ॥ दया धेनुं पुरी कुंण दोहस्ये, वृष दधि कुंण विलोसेरे ॥ जिनजी० ॥ १० ॥

इण मारग जे वाल्हा जावे, ते पाछा नवि आवे ॥ मुज हैमो दुःखडे न समाए, ते कहो कुण समावेरे ॥ जिनजी० ॥ ११ ॥ द्यो दरिसण वीरा वाखाने, जे दरिसणना तरस्या ॥ जो सुहणे केवारे देखसुं, तो दुःख दूरे करेशुंरे ॥ जिनजी० ॥ १२ ॥ पुण्य कथा हवे कुंण केलवशे, कुंण वाल्हा मेलवशे ॥ मुज मनमो हवे कुंण खेलवशे, कुमति जिम तिम लवशेरे ॥ ॥ जिनजी० ॥ १३ ॥ कुंण पूछयानो उत्तर देशे, कुंण संदेह भांजशे ॥ संघ कमळवन किम विकससे, हुं उझस्था वेसेरे ॥ जिनजी० ॥ १४ ॥ हुं परापुरवशुं अजाण, में जिन वात न जाणि ॥ मोह करे सवि जग अनाणी, एहवी जिनजीनी वाणीरे ॥ जिनजी० ॥१५॥ एहवे जिनवयणे मन वाप्यो, मोहसबल बल काप्यो ॥ इण भावे केवलसुख आप्यो, इंद्रे जिनपद थाप्योरे ॥ ॥ जिनजी० ॥ १६ ॥ इंद्रे जुहारया भट्टारक, जुहार भट्टारक तेणे ॥ पर्व पन्होतुं जगमां वाप्युं, ते किजे सवि केणेरे ॥ जिनजी० ॥ १७ ॥ राजा नंदिवर्द्धन नुतरीउ, भाइ बहिनर बीजे ॥ ते भावमबीज हुइ जग

सघले, वेहेन बहुपरे किजेरे ॥ जिनजी० ॥ १८ ॥

॥ ढाल ए मी ॥

(विवाहलानी देशी.)

॥ पहिरीए नवरंग फालमीए, मांहि मृगमद केसर गालमीए ॥ जब जबके श्रवणे जालमीए, करि कंठे मुगताफल मालमीए ॥ १ ॥ घर घर मंगल मालमीए, जपे गोयम गुण जपमालमीए ॥ पहोतलो परव दीवालमीए, रमे रमजर रामत बालमीए ॥ २ ॥ शोक संताप सवि कापीजए, इंद्रे गोयम वीरपदे थापीजए ॥ नारी कहे सांजल कंतमाए, जपो गोयम नाम एकंतडाए ॥ ३ ॥ ल्यो लख लाज लखेशरीए, द्यो मंगल कोमी कोमीशरीए ॥ जाप जपो थइ सुतपेसरीए, जिम पामीए ऋद्धि परमेसरीए ॥ ४ ॥ लहिए दिवालडी दाडलोए, एतो पुएयनो टबको टाबुजए ॥ सुकृत सिरि दृढ करो पालमीए, जिम घर होय नित्य दिवालमीए ॥ ५ ॥

॥ ढाल १० मी ॥

॥ हवे मुनि सुव्रत सीसोरे, जेहनी सबल जगीसो ॥ ते गुरु गजपुरे आव्यारे, वादी सवि हार मनाव्या ॥ १ ॥

पावस चउमासुं रह्यिारे, नवियण हैम्ने गहगहीआ ॥ नमुंचि चक्रवर्त्ति पन्नरे, जसु हियम्ने नवि उन्न ॥ २ ॥ नमुंचि तस नामे प्रधानरे, राजा दिये बहु मान ॥ तिणे तिहां रिझवी रायरे, मागी मोटो पसाय ॥ ३ ॥ लीधो षट्खंड राजरे, सात दिवस मांम्हि आज ॥ पूर्वे मुनिस्युं विराध्योरे, ते किणे नवि प्रतिबोध्यो ॥ ४ ॥ ते मुनिस्युं कहे नंम्होरे, मुज धरति सवि उंम्हो ॥ विनविउ मुनि मोटोरे, नवि माने कर्मि खोटो ॥ ५ ॥ साठसयां वर्ष तप तपिउंरे, जे जिनकिरीयानो खपीउं ॥ नामे विष्णुकुमाररे, सयल लब्धिनो नंम्हार ॥ ६ ॥ -उठ क्रम भूमि लेवारे, जोवा नाइनी सेवा ॥ ल्यूं त्रिपदि भूमिदानरे, नले नले आव्या नगवान ॥ ७ ॥ इणे वयणे धडहडीउंरे, ते मुनि बहु कोपे चढिउं ॥ किधो अद्भुत रुपरे, जोयण लाख सरुप ॥ ८ ॥ प्रथम चरण पूर्वे दीधोरे, बीजो पश्चिमे किधो ॥ त्रीजो तस पुंठे आप्योरे, नमुंचि पाताल चांप्यो ॥ ९ ॥ थरहरिउं त्रिभुवनरे, खलनलिउं सवि जन्न ॥ सलसलिउं सुर दिन्नरे, पड्यो नवि खांनलिए कन्न ॥ १० ॥ ए उत्पात अत्यंतरे,

दूरे करो भगवंत ॥ हे हे स्यूं हवे थाशेरे, बोले बहु एक सासे ॥ ११ ॥ करणे किंनर देवारे, कडुआ क्रोध समेवा ॥ मधुर मधुर गाए गीतरे, बे कर जोडि विनीत ॥ १२ ॥ विनयथकी वेगे वलिजरे, ए जिनशासन ब-लिज ॥ दानव देवे खमाव्योरे, नर नारीए वधाव्यो ॥ ॥ १३ ॥ गावलम्नी भेंस भम्कीरे, जे देखी दूरे तम्की ॥ ते जतने ग्रहि वेरे, आरति उतारी मेरइए ॥ १४ ॥ नवले अवतारे आव्यारे, जीवितफल लहि फाव्या ॥ शेव संहालि कंसारे, फल ल्यू नवे अवतार ॥ १५ ॥ वगणातणो घरबाररे, नमुंचि लख्युं घर नारे ॥ ते जीम जीम खेरु थायरे, तिम तिम दूख दूरे जाय ॥ १६ ॥ मंदिर मंम्माण मांडयारे, दालिद्र दुःख दुरे गंम्या ॥ काति वदि पम्व परवेरे, इम ए आदरीज सर्वे ॥ १७ ॥ पुण्ये नरभव पामीरे, धर्म पुन्य करो निरधामी ॥ पुन्ये ऋद्धि रसालिरे, नित नित पुन्ये दिवाली ॥ १८ ॥

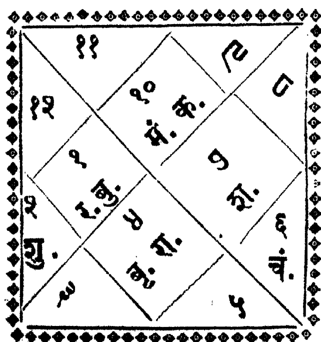
॥ कलश ॥

॥ जिन तुं निरंजण सजल रंजण, दुःख भंजण देवता ॥ द्यो सुख स्वामि मुगतिगामि, वीर तुज पाय

सेवता ॥ तपगछ गयण दिणंद दहदिसे, दीपतो जग जाणिये ॥ श्री हीरविजय सुरिंद सद्गुरु, तास पाट व-खाणिये ॥ १ ॥ श्री विजयसेन सूरीस सद्गुरु, विजय-देव सूरिसरु ॥ जे जपे अहनिश नाम जेहनो, वर्द्ध-मान जिणेश्वरु ॥ २ ॥ निर्वाण तवन महिमा भवन, वीरजिननो जे भणे ॥ ते लहे लिलालब्धि लछी, श्री गुण हर्ष वधामणे ॥ ३ ॥ इति श्री वीर निर्वाण महिमा दीपालिका संपूर्ण ॥

॥ पंडित श्री वीरविजयजी कृत ॥

॥ श्री महावीर जन्म स्तवन ॥



(देशी केरवानी)

॥ सेवधिसं चऊ घेरियां ॥ अलबेले सांइ, क्युंरे लगाउ अति बेरियां ॥ ए आंकणी ॥ दीए बिना न चले, गोरु न पाठे वले, बावत आप उठेरियां ॥ अ- लबेले० ॥ न्नाग्य अतूलबली, मागत अटकली, जन्म वलीग्रह चारियां ॥ अ० ॥ क्युं० ॥ १ ॥ संवत पास ईश, दो शत अडतालीश, उजाल चैतर तरशे ॥अ०॥ साठ घमी न ऊणी, उत्तरा फाल्गुणी, मंगलवार नि- शा वसे ॥ अ० ॥ क्युं० ॥ २ ॥ सिद्धि योग घमी, पन्नर चारे चरी, वेला मुहुरत त्रेवीशमे ॥ अ० ॥ लग्न मकर वहे, स्वामि जनम लहे, जीव सुखी सहु ते समे ॥ अ० ॥ क्युं० ॥ ३ ॥ त्रिसलाराणीए जायो, देव दे- वीए गायो, सुत सिद्धारथ न्नूपको ॥ अ० ॥ मंगल केतु लगने, रवि बुध चोथे नवने, दशमे शनिश्चर उं- चको ॥ अ० ॥ क्युं० ॥ ४ ॥ पंथमे जीव राहु, सातमे वेद साहु, केंद्रन्नूवन ग्रह मंडली ॥ अ० ॥ न्नाग्यन्नूवन शशी, शुक्र संतान वसी, मेघघुआ एक वीजली ॥अ०॥ ॥ क्युं० ॥ ५ ॥ चंद्रदशा विपाकी, माम न्नूवन नाकी,

जन्मदिशा ज्ञानी संजमी ॥ अ० ॥ गुरु महादिशामें, केवलज्ञान पामे, ता मुख बानी मेरे दिल रमी ॥ अ० ॥ ॥ क्युं ॥ ६ ॥ थावर विगलमें, काल अनंत भमें, में भी निकलीया साथमें ॥ अ० ॥ नारक तिरी गति, सुख न एक रति, काल निगमियो अनाथमें ॥ अ० ॥ ॥ क्युं० ॥ ७ ॥ बहोत में नाच नचे, चिहुं गति चोक बीचे, नेकि न मिलिए नाथजी ॥ अ० ॥ पोत प्रकाश दीए, आश निराश कीए, अलग किया में आजथी ॥ अ० ॥ क्युं० ॥ ८ ॥ मानव गण लही, तुम सनमूख रही, बेर बेर शिव मागते ॥ अ० ॥ बात न और कहुं, लीए बिना न रहुं, बाल हठ्यो रस लागते ॥ अ० ॥ ॥ क्युं० ॥ ९ ॥ नाथ नजर करी, बेर न एक घरी, सदा मगन सुख लेहेरसें ॥ अ० ॥ मंगल तूरवरा, गावत अपछरा, श्री शुभवीर प्रभु मेहेरसें ॥ अलबेले सांइ, क्युंरे लगाउ अति बेरियां ॥ १० ॥

॥ इति श्री महावीरजिन जन्म स्तवनं ॥

